श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

☆ सागर ☆

श्री किताब आठों सागर मूल-मिलावे के लिखे हैं।

सागर पेहेला नूर का

भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बड़ो अतंत।
नेक नेक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत।।१ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं प्रथम भोम का बयान करती हूं, जहां का विस्तार भारी है। थोड़े-थोड़े निशान (इशारे) रसूल साहब और श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी ने दिए थे।

चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत बरनन।
रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन।।२ ॥

प्रथम भोम पांचवीं गोल हवेली में सुन्दर कमर भर ऊंचा गोल चबूतरा है, जिसके किनारे पर चौसठ थंभ आए हैं। वहां सुन्दर दरवाजे और तख्त हैं। हे मोमिनो! इस शोभा को दिल से विचारकर देखना।

मेयराज हुआ महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर।
सो साहेदी दई महंमदें, सो मोमिन करें मजकूर।।३ ॥

रसूल साहब को श्री राजजी महाराज ने अपने हजूर में अर्श अजीम (परमधाम) में बुलाया। मुहम्मद साहब ने भी इसी मूल मेले की गवाही दी। अब मोमिन उसकी आपस में चर्चा करेंगे।

सो रूहें अर्स दरगाह की, कही महंमद बारे हजार।
दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार।।४ ॥

रसूल साहब ने कुरान में रूहों की संख्या बारह हजार बताई है। रूहें भी इस बात की गवाही देंगी जिनका वतन अक्षर के पार अर्श अजीम है।

हुकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे।
हक सहूरें विचारियो, हकें सोभा दई तुमें ए।।५ ॥

श्री राजजी महाराज के हुकम से अब मैं बयान करती हूं, इसलिए हे मोमिनो! दिल में जो श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि (तारतम वाणी) है, उससे विचार करना। यह शोभा श्री राजजी ने तुम्हें दी है।

Nijanand App

हकें अर्स किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल सें।
तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इनमें।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में अर्श कर बैठे हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज के दिल से ही यह जागृत बुद्धि का ज्ञान आया है। कुरान में तुम्हारी श्री राजजी ने इतनी बड़ाई लिखी है। फिर भी तुम इसमें फना क्यों नहीं हो जाते?

नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल।
एक दाएं बाएं एक, हुआ बेवरा चारों मिल।। ७ ।।

मूल-मिलावे की हवेली के सामने, पीछे, दाएं और बाएं सुन्दर चार दरवाजे नूर की शोभा बढ़ा रहे हैं।

सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए।
थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए।। ८ ।।

सामने पूरब दिशा के दरवाजे में दो थंभ, जो पाच के नगों के हैं, शोभा देते हैं। इन दोनों के दाएं-बाएं दो थंभ नीलवी (नील्म) के नग के शोभा देते हैं।

इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के।
दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए।। ९ ।।

पीछे पश्चिम दिशा के दरवाजे में दो थंभ नीलवी (नीलम) नग के नीले रंग के हैं। इन दोनों के दाएं-बाएं दो थंभ पाच के नग के शोभा देते हैं।

नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज।
ए द्वार तरफ दाहिनी, रह्या नूर इत बिराज।। १० ।।

दाहिनी तरफ दक्षिण दिशा के दरवाजे में दो थंभ माणिक नग के लाल रंग के आए हैं। उन दो थंभों के दाएं-बाएं दो थंभ पुखराज नग के पीले रंग के आए हैं। ऐसे सुन्दर नूर की शोभा है।

तरफ बांईं द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास।
चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास।। ११ ।।

उत्तर दिशा में बाईं तरफ के दरवाजे में दो थंभ पुखराज नग के पीले रंग के आए हैं। इनके साथ दाएं-बाएं दो थंभ माणिक नग के लाल रंग के आए हैं। इस तरह से इन चारों थंभों का नूर समान है और सुन्दर शोभा बढ़ा रहे हैं।

नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो पाइए काहूं सुमार।। १२ ।।

इन चारों की मेहराबें बराबर झलकार करती हैं। इस जबान से इनकी खूबी का वर्णन तब किया जाए जब इनकी खूबी सीमित हो।

थंभ बारे बारे चारों खांचों, कहूं तिनका बेवरा कर।
बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जोत बराबर।। १३ ।।

इसके अतिरिक्त चारों खांचों में बारह-बारह थंभ आए हैं। मैं उनका विवरण बताती हूं। इन बारह थंभों में चार थंभ धातुओं के हैं जो अलग-अलग शोभा देते हैं।

Nijanand App

नेक देखाए रंग अर्स के, कई खूबी रंग अलेखें।
रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाएं देखे।। १४ ।।

मैंने परमधाम के रंग थोड़े से बताए हैं। इनकी खूबी बेशुमार है जो श्री राजजी महाराज की कृपा से और जागृत बुद्धि से रूह विचार कर देख सकती है।

असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम।
एक एक रंग में कई रंग, सो क्यों कहे जांए बिना नाम।। १५ ।।

वैसे रंगों के असल नाम पांच हैं—नीला, पीला, लाल, सफेद और काला। फिर एक-एक रंग में कई-कई रंग हो जाते हैं जिनके अनेक नाम हैं जिनका वर्णन बिना नामों के कैसे किया जाए?

देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अर्स।
नाम लिए न जांए रंगों के, रंग एक पे और सरस।। १६ ।।

बीच में चबूतरे पर चौसठ थंभों को देखो जहां नगों के अनेक रंग शोभा देते हैं। इन रंगों के नाम कैसे लें, क्योंकि हर रंग एक दूसरे से अच्छा लगता है।

मैं तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जांए।
नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे न जुबांए।। १७ ।।

रंगों के नाम इतने अधिक हैं कि बिना नग और धातुओं के कहने में नहीं आते। मैं इसलिए जवाहरातों के और धातुओं के नाम को बताती हूं।

एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार।
रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार।। १८ ।।

यह सभी रंग अलग-अलग झलकार कर रहे हैं और सब एक ही नूर रस के हैं। इन रंगों को, नगों और धातुओं की उपमा देते हैं ताकि यह समझ में आ सकें।

पर हिरदे आवनें रूहों के, मैं कई बिध करत बयान।
ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत बका सुभान।। १९ ।।

रूहों के समझाने के वास्ते मैं कई तरह से बयान करती हूं। नहीं तो यह श्री राजजी महाराज, खिलवत, मूल-मिलावा की अखण्ड शोभा हैं जिसमें रंगों की, नगों की तथा धातुओं की उपमा नहीं लगती।

अर्स धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए।
जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जांए सोए।। २० ।।

परमधाम के धातु, रंग, नग, रेशम कुछ भी नया पुराना नहीं होता। जहां पर कुछ नया पैदा नहीं होता तो उसका नाम कैसे दिया जाए?

हेंम जवेर या जो कछू, सो सब जिमी पैदास।
इत नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास।। २१ ।।

सोना कहूं, जवेर कहूं, यह सब तो जमीन से पैदा होते हैं। जो पैदा होते हैं उनकी उपमा अखण्ड को कैसे दें जो कभी नष्ट नहीं होते?

Nijanand App

थंभ और चीज न आवे सब्द में, कर मोमिन देखो सहूर।
अर्स बानी देख विचारिए, तब हिरदे होए जहूर।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! जागृत बुद्धि मे विचारकर देखो। तब तुम्हारे हृदय में यह समझ आएगी। वरना परमधाम के थंभ और चीजों का बयान करना सम्भव नहीं है।

नाम निसान इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत।
जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत।। २३ ।।

इस झूठे संसार के नाम और निशान देखकर ही वहां की हकीकत बताती हूं। मृत्युलोक की झूठी रोशनी से तो बैकुण्ठ की रोशनी अधिक है।

सो मलकूत पैदा फना पल में, कई करत खावंद जबरूत।
सो रोसनी निमूना देख के, पीछे देखो अर्स लाहूत।। २४ ।।

ऐसे कई बैकुण्ठ एक पल में अक्षरब्रह्म पैदा और नष्ट करते हैं। इनके नगों और धातुओं की रोशनी देखकर फिर परमधाम की तरफ देखो।

इन बिध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लज्जत।
और भांत निमूना न बनें, ए तो अर्स अजीम खिलवत।। २५ ।।

इस तरह से जब विचार करोगी तब तुम्हारी आत्मा को कुछ स्वाद मिलेगा। यह श्री राजजी महाराज का अखण्ड खिलवतखाना है, इसलिए दूसरी तरह का नमूना देकर समझाया नहीं जा सकता।

आगूं नूर–मकान की कंकरी, देखत ना कोट सूर।
तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर।। २६ ।।

अक्षरधाम के आगे के कण की ज्योति के सामने करोड़ों सूर्य नहीं टिकते, तो फिर उस जमीन के नग की रोशनी कितनी अधिक होगी? यह विचार करके देखो।

ए नूर मकान कह्या रसूलें, आगूं जाए ना सके क्योंए कर।
तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबराईल पर।। २७ ।।

रसूल साहब ने लिखा है कि जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम से आगे नहीं जा सकता, क्योंकि आगे उसके पर जलते हैं। तो फिर इस परमधाम में कैसे पहुंचा जाए?

ए देखो तुम रोसनी, हक अर्स इन हाल।
जित पर जले जबराईल, कोई फरिस्ता न इन मिसाल।। २८ ।।

हे रूहो! तुम विचार करके देखो कि श्री राजजी महाराज के वतन में जबराईल फरिश्ते के पर जलते हैं। उसके समान दूसरा कोई फरिश्ता नहीं है। वहां की हकीकत को तुम जागृत बुद्धि से देखो।

मेयराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन।
अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अर्स में मोमिनों तन।। २९ ।।

मुहम्मद साहब को श्री राजजी का मेयराज (दर्शन) हुआ था, इसलिए उन्होंने थोड़ी सी हकीकत बताई। अब परमधाम में रूहों की परआतम है और इसलिए पूरी हकीकत जागृत बुद्धि से जाहिर हो गई।

Nijanand App

दिल अर्स भी तो कह्या, हकें जान ए निसबत।
इन गिरो पर मेयराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी अंगना जानकर ही मोमिनों के दिल को अर्श किया है और जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर इन रूहों की जमात को दर्शन कराया।

ए जो अंदर अर्स अजीम के, खिलवत मासूक या आसिक।
नूरतजल्ला क्यों कहूं, बका वाहेदत हक।। ३१ ।।

अर्श अजीम (परमधाम) के अन्दर आशिक या माशूक के रूप में श्री राजजी, श्यामा जी और रूहें बैठी हैं। वह श्री राजजी महाराज के ही अखण्ड तन हैं। यह वाहेदत है। उनकी शोभा का बयान कैसे करूं?

इन भांत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमिन।
तुम ताले आया लदुन्नी, तुम देखो अर्स रोसन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के तारतम ज्ञान से हे मोमिनो! इन उपमाओं का विचार करना। तारतम वाणी तुम्हारे पास आई है। जिससे तुम अखण्ड परमधाम को समझ लो।

ए तुम ताले तो आइया, जो तुम असल खिलवत।
निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत।। ३३ ।।

तुम श्री राजजी महाराज की अंगना हो, इसलिए तुम्हारे पास तारतम वाणी आई है। अब रात-दिन तुम्हें यही विचार करना है कि श्री राजजी महाराज बैठकर तुम्हें खेल दिखा रहे हैं।

अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिस्सों चार द्वार।
नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखूं झलकार।। ३४ ।।

अब मूल-मिलावे के चारों दरवाजों के बीच में चौसठ थंभों को गिनकर देखो। इनके रंग और नगों के नाम मैं तब बताऊं जब कहीं झलकार बिना खाली जमीन देखूं।

एक जोत सागर सब हो रह्या, और ऊपर तले सब जोत।
कई सूर उड़ें आगूं कंकरी, तिन भोम की जोत उद्दोत।। ३५ ।।

इस हवेली में ऊपर, नीचे या जहां कहीं भी एक ही तरंग सागर के समान दिखाई देती है। अर्श के एक कण के सामने करोड़ों सूर्य उड़ जाते हैं, तो उस भूमि का वर्णन कैसे करूं?

चंद्रवा दुलीचा तकिए, सब जोतै का अंबार।
जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूं लेहेरें अपार।। ३६ ।।

चंद्रवा, दुलीचा, तकिया सबके सब ज्योति के भण्डार के समान दिखाई देते हैं। जहां भी देखो वहां पर सभी जगह नूरी किरणों की शोभा है।

दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर।
दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूं रंग नंग और।। ३७ ।।

थम्भों के बीच दो-दो नग आए हैं। दो-दो नगों के बीच में सब नूर ही नूर झलकता है। दीवारें भी नूर की दिखाई देती हैं, तो फिर रंगों और नगों का बयान कैसे करूं?

Nijanand App

बीच खाली जित जाएगा, तित लरत थंभों का नूर।
उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर।।३८।।

जहां खाली जगह है वहां थंभों के रंगों की किरणें टकराती हैं और नगों की तरंग की इस जंग में अधिक शोभा हो जाती है।

नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खेंचत।
दूनी जोत बीच खाली मिनें, रंग क्यों गिने जांए इत।।३९।।

इस तरह से पूरी हवेली में एक-दूसरे के रंगों की खींचतान से नूरमयी शोभा दिखाई देती है। जो जगह बीच में खाली है उसके रंगों की ज्योति दुगुनी हो जाती है तो उनको कैसे गिना जाए?

जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान।
जल तेज वाए सब रूह को, रूह जात अर्स सुभान।।४०।।

वहां की जमीन, आसमान, जल, अग्नि, वायु तथा रूहें सब श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं।

पसु पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब।
हक अर्स वाहेदत में, दूजा मिले ना कछुए कब।।४१।।

पशु, पक्षी, वृक्ष जो कुछ भी है, श्री राजजी महाराज के तन की शोभा है, वाहेदत में दूसरा कुछ नहीं है।

दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत।
सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत।।४२।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त दूसरा कुछ नहीं है। दूसरा अगर है तो अक्षर ब्रह्म की योगमाया है जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से इस माया के संसार को बनाती और मिटाती है जिसे देखने के लिए रूहें आई हैं, क्योंकि नाशवान ब्रह्माण्ड की अखण्ड वाहेदत से तुलना नहीं हो सकती।

जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत माहें।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहें।।४३।।

परमधाम में जो कुछ भी है वह सब वाहेदत में एक स्वरूप है। यही एकदिली है, वहां बिना वाहेदत के और कुछ भी नहीं है।

ए खिलवत हक नूर की, नूर आला नूर मकान।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान।।४४।।

यह मूल-मिलावा श्री राजजी महाराज के नूर की सबसे ऊंची (बढ़िया) बैठक है। यहां के बिछौने और सब सामान नूर के हैं।

नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर।
तले तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर।।४५।।

चन्द्रवा नूर का है, झालर नूर की है, जिसके नीचे सब नूर ही नूर नजर आता है।

रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर।
थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर।।४६।।

रूहों का मिलावा कठेड़ों के बीच भरकर बैठा है। वहां के थंभ, तकिए सब नूर के हैं। नूर के बिना और कुछ नहीं है।

Nijanand App

तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर।
बैठे हक बड़ी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर।।४७।।

मूल-मिलावे के बीच में नूरमयी तख्त शोभायमान है और उस पर श्री राजश्यामाजी के नूरी सुन्दर स्वरूप विराजमान हैं।

नूर सरूप रूप नूर के, नूर वस्तर भूखन।
सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन।।४८।।

इन नूरी स्वरूपों के वस्त्र, आभूषण, शोभा, सुन्दरता सब नूर ही नूर हैं।

गुन अंग इंद्री नूर की, नूरै बान वचन।
पिंड प्रकृत सब नूर की, नूरै केहेन सुनन।।४९।।

गुण, अंग, इन्द्री, पिंड, प्रकृति, बोली, वचन, कहना, सुनना सब नूर ही नूर हैं।

रूहें बड़ी रूह नूर में, नूर हक के सदा खुसाल।
हक नूर निसदिन बरसत, नूर अरस-परस नूरजमाल।।५०।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और बारह हजार रूहें अपने नूरी स्वरूप से सदा श्री राजजी महाराज को खुश रखती हैं और श्री राजजी महाराज की भी मेहर की नूरी वर्षा इनके ऊपर होती है। इस तरह से सब अरस-परस (परस्पर) श्री राजजी महाराज के ही नूर की शोभा हैं।

नाम ठाम सब नूर के, कहूं जरा ना नूर बिन।
मोहोल मन्दिर सब नूर के, माहें बाहेर नूर पूरन।।५१।।

यहां के नाम, ठिकाने, महल, मन्दिर, अन्दर, बाहर सब जगह नूर ही नूर की शोभा है। नूर के बिना और कुछ नहीं है।

अर्स भोम सब नूर की, नूरै के थंभ दिवाल।
द्वार बार कमाड़ी नूर के, नूर गोख जाली पड़साल।।५२।।

परमधाम की सारी भूमि ही नूर की है। नूर के ही थंभ और दीवारें हैं। दरवाजे, खिड़की, किवाड़, झरोखा, जाली, देहलान सब नूर की ही हैं।

मेहेराव झरोखे नूर के, जरे जरा सब नूर।
अर्स माहें बाहेर सब नूर में, नूर नजीक नूर दूर।।५३।।

मेहराब, झरोखा, रंग महल के अन्दर और बाहर की सब चीजें चाहे वह पास हों या दूर सभी का कण-कण नूर का ही है।

नूर नाम रोसन का, दुनी जानत यों कर।
सो तो रोसनी जिद अंधेर की, दुनी क्या जाने लदुन्नी बिगर।।५४।।

दुनियां वाले नूर का अर्थ प्रकाश समझते हैं। इनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान न होने के कारण नूर को प्रकाश समझते हैं जो दिखावटी अंधेरे को मिटाने वाला होता है।

Nijanand App

तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत।
हक हादी ऊपर बैठ के, गिरो को खेलावत।।५५ ।।

नीचे चबूतरे के ऊपर जहां रूहें मिलकर बैठी हैं वहां श्री राजश्यामाजी सिंहासन पर बैठकर रूहों को खेल खिलाते हैं।

अर्स मता अपार है, दिल में न आवे बिना सुमार।
ताथें ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करें विचार।।५६ ।।

अर्श का यह ज्ञान खजाना (न्यामत) बेशुमार है। दिल में नहीं आता है, इसलिए बेशुमार को शुमार में लाकर बताती हूं ताकि रूहें विचारकर सकें।

अर्स नाहीं सुमार में, सो हक ल्याए माहें दिल मोमिन।
बेसुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन।।५७ ।।

परमधाम जो बेशुमार है उसकी हकीकत को श्री राजजी महाराज शुमार में लाकर मोमिनों के दिल में लाए हैं।

इत फिरते साठ मन्दिर, तिन बीच गलियां चार।
चारों तरफों देखिए, जानों जोतै का अंबार।।५८ ।।

इस हवेली को घेरकर साठ मन्दिर आए हैं। इनके बीच चार दरवाजों की चार गलियां आई हैं। यदि चारों तरफ देखें तो तेज का भण्डार ही भण्डार नजर आता है।

चौकठ ताके घोड़ले, और दिवालों चित्रामन।
सोभा क्यों कहूं जोत में, भर्‍यो नूर रोसन।।५९ ।।

दरवाजे की चौखटें, खूंटी, दीवारों के चित्रों से शोभा और अधिक हो रही है। उनका नूर पूरी हवेली में झलक रहा है।

दिवालों चित्रामन, कई जोत उठें तरंग।
साम सामी ले उठत, करत माहों माहें जंग।।६० ।।

दीवारों के चित्रों से कई तरह की ज्योति की लहरें उठती हैं जो आमने-सामने से टकराती हैं।

बिरिख बेली कई जवेर की, सकल वनस्पति।
नकस कटाव केते कहूं, बनी पसु पंखी जात जेती।।६१ ।।

वृक्ष, बेलें, जवाहरात, सम्पूर्ण वनस्पति, नक्शकारी, कटाव पशु-पक्षियों की सब जातियां सुन्दर शोभा देती हैं।

देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर।
जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अन्दर।।६२ ।।

दीवारों की सुन्दर शोभा दिखाई देती है। बार-बार देखने से उससे अधिक शोभा अन्दर की दिखाई देती है।

अधिक चित्रामन अंदर, क्या क्या देखों इत।
जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित।।६३ ।।

अन्दर के चित्रों में क्या-क्या बनावट है, देखें तो एक से दूसरी अधिक शोभा देती है।

Nijanand App

अन्दर कई वस्तां धरी, कई सेज्या चौकी सन्दूक।
जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक।। ६४ ।।

अन्दर सेज्या, चौकी, सन्दूक तथा अनेक वस्तुएं रखी हैं। जहां पर रखी हैं बडी सजावट के साथ रखी दिखाई देती हैं।

कई सीसे प्याले डब्बे, कई अन्दर गिरद देखत।
कई तबके छोटी बड़ियां, कई सीकियां लटकत।। ६५ ।।

कई शीशे, प्याले, कटोरी, डिब्बे, तबके छोटे-बड़े रखे हैं। ऊपर सींकचों से लटके हैं।

अन्दर की वस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रामन।
जो मन्दिरों अंदर देखिए, तो दिल होवे रोसन।। ६६ ।।

मन्दिर के अन्दर की वस्तुओं का तथा चित्रों का कैसे वर्णन करूं? मन्दिर के अन्दर जाकर देखें तो दिल को तसल्ली होती है।

बार–साखें द्वार ने, सोभें साठों मन्दिरों के।
सोभें गिरदवाए बराबर, एक एक पें अधिक सोभा ले।। ६७ ।।

इन साठों मन्दिर में दरवाजे, खिड़की, घेर कर चारों तरफ एक से एक अधिक शोभा दिखाई देती है।

बारीक इन कमाड़ियों, अनेक चित्रामन।
रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन।। ६८ ।।

किवाड़ों के ऊपर बड़े बारीक चित्र बने हैं। अन्दर के तख्त, नग, जवेर, सब चेतन हैं।

ना चितारे चेतरी, ना घड़ी ना किन समारी।
ए अर्स जिमी थंभ मोहोलातें, या दिवालें या द्वारी।। ६९ ।।

इनको न किसी ने बनाया है न संवारा है न चित्र ही बनाए हैं। यहां के दीवार, दरवाजे, मोहोलातें सब परमधाम की जमीन की शोभा हैं।

किनार दिवालें द्वार ने, लाल दोरी दोए दोए।
मन्दिर मन्दिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए।। ७० ।।

दरवाजे के किनारे पर दीवार में लाल रंग की दो डोरी आई हैं जो एक-एक मन्दिर की दूरी पर शोभा देती हैं।

दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गिरदवाए।
चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए।। ७१ ।।

इस डोरी के ऊपर घेरकर सब जगह कांगरी बनी है। जिनके बीच वन, चित्र अधिक शोभा देते हैं।

साठों तरफों मन्दिर, नई नई जुदी जुगत।
ए साठों फेर के देखिए, सोभा और पे और अतंत।। ७२ ।।

साठों मन्दिर नई-नई युक्ति के बने हैं। इनमें घूमकर देखें तो एक से दूसरे की शोभा अधिक ही है।

Nijanand App

क्यों कहूं जुगत अंदर की, क्यों कहूं जुगत बाहेर।
जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर।।७३ ।।

अन्दर तथा बाहर की बनावट का बयान कैसे करूं? जहां भी देखती हूं नजर टिक जाती है।

उपली भोम चढ़न को, सीढ़ियां अति सोभित।
नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत।।७४ ।।

ऊपर की भोम में चढ़ने के वास्ते सीढ़ियां लगी हैं, जो नई-नई तरह की नए-नए रंगों की हैं, जिनका तेज सामने से दिखाई देता है।

सीढ़ियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढ़त।
प्रतिबिंब सखियों सोभित, पड़घा मीठे स्वर उठत।।७५ ।।

इन सीढ़ियों पर जब सखियां उतरती-चढ़ती हैं, तो बड़ी झलकार होती है। उनके सुन्दर प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं तथा पैरों से मीठे स्वर की ध्वनि उठती है।

स्वर भूखन के बाजत, मीठे अति रसाल।
इनकी सोभा क्यों कहूं, जाको खावंद नूरजमाल।।७६ ।।

इन रूहों के धनी श्री राजजी महाराज हैं, जिनके पैरो के आभूषणों की सुन्दर आवाज निकलती है। उसकी शोभा का कैसे बयान करूं?

सीढ़ियां अति सोभित, माहें मंदिरों सबन।
कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन।।७७ ।।

सभी मन्दिरों में सुन्दर सीढ़ियां शोभा देती हैं। कहीं-कहीं देहलानों में भी हैं। जो जहां हैं वह सीढ़ियां वहीं शोभा देती हैं।

दो दो थंभ आगूं द्वारने, तिन आगूं दूसरी हार।
ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार।।७८ ।।

एक-एक दरवाजे के आगे दो-दो थंभ हैं, जिनके आगे दूसरी पंक्ति भी थंभों की है। उनकी शोभा भी बेशुमार है।

चार हांस तले थंभ के, आठ ऊपर तिन।
सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन।।७९ ।।

एक थंभ पहले, नीचे चार पहल, फिर उसके ऊपर आठ पहल, फिर उसके ऊपर सोलह पहल, फिर आठ और फिर चार पहल शोभा देते हैं।

इन बिध हांस थंभन की, माहें नकस कई कटाव।
जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहें जुदे जुदे कई भाव।।८० ।।

थंभों की इस तरह की बनावट में कई तरह की नक्शकारी, कटाव और अलग-अलग भाव दिखाने वाले अलग ही तरह के चित्र बने हैं।

Nijanand App

एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस।
जुदे जुदे कई कटाव, एक दूजे पे सरस।।८१ ।।

एक थंभ एक ही जवेर (जवाहरात) का है। उसमें कई तरह की नक्शकारी और अलग-अलग कटाव हैं, यह एक दूसरे से अच्छे लगते हैं।

इनके बीच चबूतरा, इत कठेड़ा गिरदवाए।
ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए।।८२ ।।

इन चौसठ थंभों के बीच सुन्दर चबूतरा है और घेरकर कठेड़ा लगा है। चबूतरे की इस खूबी का बयान इस जबान से नहीं होता।

तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढ़त है चित्त।
ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत।।८३ ।।

फिर भी यहां आकर चबूतरे पर चढ़ते हैं। जहां धनी की बैठक है उसकी भी थोड़ी जानकारी देती हूं।

भोम उज्जल कई नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर।
जानों कोटक उदे भए, अर्स के सीतल सूर।।८४ ।।

यहां की भूमि उज्जवल है। उसमें कई तरह की नक्काशी है। ऐसा लगता है मानो शीतल किरणों वाले करोड़ सूर्य उदय हो गए हों।

फिरते थंभ जो चौसठ, चारों तरफों द्वार।
दो दो सीढ़ी आगूं द्वारने, सोभित हैं अति सार।।८५ ।।

घेरकर चौसठ थंभ आए हैं जिनमें चार दरवाजे आए हैं। दरवाजों के आगे दो-दो सुन्दर सीढ़ियां शोभा देती हैं।

कई थंभ हैं मानिक के, कई पाच कई पुखराज।
नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज।।८६ ।।

यहां कई थंभ माणिक के, कई पाच के और कई पुखराज के हैं। इन सबकी रोशनी मिलकर अलग ही तरह की रोशनी दिखाई पड़ती है।

कई लसनियां नीलवी, एक थंभ एक रंग।
यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब नंग।।८७ ।।

कई थंभ लसनिया और कई नीलवी (नीलम) के हैं। एक थंभ में एक रंग शोभा देता है और इस तरह से जुदा-जुदा नगों के थंभ घेरकर आए हैं।

सोले थंभों कठेड़ा, यों थंभ कठेड़ा किनार।
कठेड़ा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार।।८८ ।।

मूल-मिलावा के चबूतरे के किनारे पर कठेड़ा सोलह-सोलह थंभों को घेरकर चारों खांचों में आया है। चारों तरफ बीच में चार दरवाजे आए हैं।

Nijanand App

थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर।
बढ़त है बीच रोसनी, क्यों कहूं नूर को नूर।। ८९ ।।

एक थंभ के सामने दूसरे थंभ ऐसे दिखाई देते हैं जैसे एक सूर्य के सामने दूसरा सूर्य हो। इनकी रोशनी हवेली के बीच में बढ़ जाती है। इस नूरी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर।
ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर।। ९० ।।

एक-एक थंभ की किरणें उठती हैं। ऐसी सब थंभों की शोभा को देखो जो ऊपर-नीचे सब तरफ से जगमगा रहे हैं।

ऊपर चन्द्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर।
जड़ाव ज्यों अति झलकत, एता ही इन पर।। ९१ ।।

थंभों के ऊपर, नीचे जितना बड़ा चबूतरा है, उतना ही बड़ा चन्द्रवा लगा है। यह एक जड़ाव की भांति झलकता है।

कई रंगों के जवेर, करत जोत अपार।
कई बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार।। ९२ ।।

यहां कई रंगों के जवाहरात हैं। इनकी बेल, फूल, फल और पत्तों की नक्शकारी की सिफत बयान करने में नहीं आती है।

बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत।
फल फूल पात नकस, कई उठत तरंग उद्दोत।। ९३ ।।

नीचे चबूतरे पर दुलीचा बिछा है। जिसमें फल, फूल, पत्तों की नक्शकारी से कई तरह की तरंगें उठती हैं।

चारों तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भर कर।
चबूतरे लग कठेड़ा, सोभा अति सुन्दर।। ९४ ।।

चबूतरे को भरकर कठेड़े तक चारों तरफ सुन्दर गिलम (गलीचा) बिछी है।

क्यों कहूं रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार।
स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार।। ९५ ।।

इस गिलम (गलीचा) के चारों तरफ चार रंग की डोरियां आई हैं। पहली काली, दूसरी सफेद, तीसरी हरी और चौथी पीले रंग की डोरी शोभा देती है।

कई विध के कटाव, कई बिरिख बेल नकस।
पात फूल बीच फिरते, और पे और सरस।। ९६ ।।

इस गिलम में कई तरह के कटाव, वृक्ष, बेल, नक्शकारी, पत्ते, फूल बीच में घेरकर आए हैं। यह बहुत लुभावने हैं।

लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग।
बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग।। ९७ ।।

कठेड़े से तकिए लगे हैं, जिन्हें दबाकर बारह हजार रूहें बैठी हैं। इनके रंग का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

बैठक दोऊ सिंघासन, चार पाए एक तखत।
पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत।। ९८ ।।

दुलीचे के ऊपर तख्त रखा है। तख्त के चार पाए हैं जिस पर सिंहासन रखा है। जिसमें श्री राजजी श्यामाजी बैठते हैं। इन दोनों के पीछे दो-दो तकिए अलग-अलग हैं।

मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज।
गोमादिक पाच पिरोजा परवाल, रहे कई रंग नंग धात बिराज।। ९९ ।।

मोती, माणिक, हीरा, सोना, पन्ना, पुखराज, गोमादिक, पाच, पिरोजा, परवाल और कई रंगों के नग धातु में शोभा देते हैं।

नंग नाम केते कहूं, कहूं केती अर्स धात।
बरनन तखत अर्स का, कहे जुबां सुपन नंग जात।। १०० ।।

नगों और धातुओं के नाम तथा परमधाम के तख्त का वर्णन सपने की जबान से सपने के नगों की उपमा देकर किया है।

चार थंभ चार खूंट के, छत्री सोभा अति जोर।
जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर।। १०१ ।।

तख्त के चारों कोनों में चार थंभे हैं जिन पर सुन्दर छतरी शोभा देती है। यदि नजर से देखें तो संसार के झूठे तन के बन्धन तुरन्त ही टूट जाएं।

पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढ़ती कांगरी चार।
फूल पात बेल कटाव कई, जुबां कहा कहे नकस अपार।। १०२ ।।

पीछे दोनों तरफ तकिए रखे हैं। उसके चारों तरफ चढ़ती कांगरी शोभा देती है। फूल, पत्ते, बेलें, कटाव बेशुमार हैं। जबान से कहां तक कहें?

दोऊ छेड़ों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर।
तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुन्दर।। १०३ ।।

किनारे के दोनों थंभों के बीच में तीसरा थंभ शोभा देता है। उस थंभे पर कई किस्म के फूलों के कटाव शोभा देते हैं।

जो बरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहू उमर।
तो पात न होवे बरनन, ए अर्स तखत यों कर।। १०४ ।।

एक पत्ते का वर्णन करने में पूरी उम्र चली जाए तो भी जरा सा भी वर्णन नहीं हो सकता। परमधाम के इस सिंहासन की शोभा ऐसी है।

एक पात कई बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव।
तिन बेलों पात कई बेलें, ऐसे बारीक अति जड़ाव।। १०५ ।।

एक पत्ते में कई किस्म की बेलों की कांगरी, बेल, फूल, पत्ते, कटाव और फिर उन बेलों की बेलें, कई पत्ते बारीक जड़ाव जैसे जड़े हैं।

Nijanand App

एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान।
अपार जरे अर्स की, ना आवे माहें जुबान।। १०६ ।।

एक बारीक से नग की रोशनी आसमान में नहीं समाती। फिर बेशुमार परमधाम की शोभा वर्णन करने के लिए इस जबान में कैसे आए?

दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए।
बारीक तिन कटाव कई, ए बरनन कैसे होए।। १०७ ।।

सिंहासन के दोनों तरफ बगल में दो तकिए रखे हैं। उन तकियों में भी कई किस्म के बारीक कटाव हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

ऊपर छत्रियां क्यों कहूं, कई रंग नंग जोत किनार।
कई दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार।। १०८ ।।

ऊपर की छतरी की शोभा कैसे कहूं? जिसके किनारे पर कई रंगों के नगों की जोत जगमगाती है। चारों तरफ घूमकर कई डोरी और बेलियों की कांगरी आई है।

चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक।
रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक।। १०९ ।।

पायों के ऊपर जो चार थंभ आए हैं। उन पर कई बेलों की नक्शकारी है। कई रंग के नग बेशुमार जड़े हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

चार खूंने के चार नकस, कई कांगरी कटाव फूल।
बीच पांखड़ी फिरती फूल ज्यों, ए अर्स तखत इन सूल।। ११० ।।

चार कोनों के थंभों में चार प्रकार की नक्शकारी है। जिनमें कई किस्म की कांगरी, कटाव और फूल बने हैं। बीच में फूलों की पखुड़ियां घेरकर आई हैं। यह परमधाम का तख्त इसी तरह की शोभा लेता है।

फूल कटाव कई बीच में, कई विध के नकस।
इन के बीच में मानिक, गिरदवाए नीलवी सरस।। १११ ।।

इन थंभों के बीच में कई किस्म के फूल, कटाव तथा नक्शकारियां हैं। इनके बीच माणिक और चारों तरफ सुन्दर नीलवी के नग हैं।

दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल ज्यों बिराजत।
देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत।। ११२ ।।

दोनों स्वरूपों के ऊपर दो फूलों जैसी शोभा बनी है। और भी अनेक चित्रों को देखा, परन्तु यह शोभा अद्‌भुत है।

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गिरदवाए।
ए आठ कलस हैं हेम के, सुन्दर अति सोभाए।। ११३ ।।

दो छतरियों के ऊपर दो कलश हैं और छः कलश घेरकर आए हैं। यह आठ कलश सोने के सुन्दर शोभा देते हैं।

Nijanand App

जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत।
ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढ्यो अतंत।। ११४ ।।

श्री राजजी महाराज के तख्त के ऊपर जवेरों की किरणें जगमगाती हैं। जिनका नूर जमीन से आसमान तक फैला है।

सो ए धरया इत तखत, जानों नजर ना छोड्डूं खिन।
पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन।। ११५ ।।

ऐसा सुन्दर तख्त यहां रखा है। लगता है यहां से एक क्षण के लिए नजर न हटाएं। इस सुन्दर तख्त की शोभा को देखकर पलक भी बन्द न होने दें।

एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस।
चौखूंने कटाव कई पसमी, जो देखों सोई सरस।। ११६ ।।

तख्त पर एक गद्दी दो चाकला हैं। पीछे भी उसी तरह से सुन्दर हैं। यह चाकले चौरस तथा कटाव से भरे पशम के हैं। जो भी देखिए वही सुन्दर शोभा देते हैं।

किनार बाएं बीच जवेर के, और रोसन बेसुमार।
ए तखत नूरजमाल का, अर्स सब चीजों अपार।। ११७ ।।

बाएं किनारे पर सुन्दर जवेर (जवाहरात) जड़े हैं। जिनकी रोशनी बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के बैठने का यह तख्त परमधाम की सभी चीजों से बेशुमार शोभा वाला है।

इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर।
वस्तर भूखन सिनगार, सुन्दर जोत अति जोर।। ११८ ।।

इस सिंहासन के ऊपर श्री राजश्यामाजी बैठते हैं। इनके वस्त्र, आभूषण और सिनगार की सुन्दर तरंगें उठती हैं।

एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन।
बल बल जाऊं मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन।। ११९ ।।

सिंहासन के बीच बैठे श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी की कमल के समान मुख की शोभा तथा चरणों पर मैं बलिहारी जाती हूं।

कहा कहूं जोत रूहन की, और समूह भूखन वस्तर।
ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर।। १२० ।।

रूहों की समूह के वस्त्र और आभूषण की तरंगें कैसे बताऊं? यह शोभा पूर्ण नूर सागर की तरंगों की है। जिसका सबसे पहले वर्णन किया है।

ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज।
कई इन सागर लेहेरें उठें, पूरन नूर को पुंज।। १२१ ।।

श्री राजजी का स्वरूप ही नूर से भरपूर नूर सागर है। जिसकी गंजानगंज किरणें सागर की लहरों की तरह उठती हैं जो नूर ही नूर के पुंज के समान हैं।

Nijanand App

महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन।
ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन।।१२२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब दूसरा सागर रूहों के स्वरूप की शोभा का है जो अखण्ड परमधाम में अत्यन्त सुन्दर और सुखदायी है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १२२ ।।

सागर दूसरा रूहों की सोभा

हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज।
बड़ी भई रदबदल, रूहें बड़ी रूहसों राज।।१।।

श्री राजजी महाराज सब रूहों को साथ में लेकर खेल दिखाने के वास्ते बैठे हैं। जहां पर श्यामा महारानी और रूहों के साथ बड़ा भारी इश्क का वार्तालाप हुआ।

देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन।।२।।

रूहों ने जुदाई का खेल देखने की दिल में चाहना की। श्री राजजी महाराज तख्त पर रूहों को खेल दिखाने के वास्ते बैठे।

देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह।
देखें पातसाही हक की, देखें इस्क बड़ा किन का।।३।।

सब रूहों को जुदाई का डर लग रहा है, पर खेल देखने की चाह अति भारी है, ताकि श्री राजजी महाराज की बादशाही देख सकें और इश्क किसका बड़ा है, जान सकें।

एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल।
क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल।।४।।

सब रूहें इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठी हैं। उनके बीच सुन्दर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। इनके स्वरूपों का तेज बेशुमार है। उसकी शोभा यहां की जबान से कैसे कहें?

सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए।
यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए।।५।।

सब सुन्दरसाथ एक रूप होकर भरके बैठे हैं। वह इस तरह से हिल-मिलकर बैठी हैं कि इनके स्वरूप को दो नहीं कह सकते।

एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग।
क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग।।६।।

सब एक स्वरूप होकर बैठी हैं। जिनके वस्त्रों में कई तरह के रंग हैं और रंग-रंग में कई तरंग हैं। इनका वर्णन कैसे हो?

देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।।७।।

अन्दर की आंखें खोलकर विवेक से देखो तो एक का भी वर्णन करना सम्भव नहीं है। गले से गले लगाकर बैठी हैं।

Nijanand App

महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन।
ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन।।१२२।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब दूसरा सागर रूहों के स्वरूप की शोभा का है जो अखण्ड परमधाम में अत्यन्त सुन्दर और सुखदायी है।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ १२२ ॥

सागर दूसरा रूहों की सोभा

हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज।
बड़ी भई रदबदल, रूहें बड़ी रूहसों राज।।१।।

श्री राजजी महाराज सब रूहों को साथ में लेकर खेल दिखाने के वास्ते बैठे हैं। जहां पर श्यामा महारानी और रूहों के साथ बड़ा भारी इश्क का वार्तालाप हुआ।

देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन।।२।।

रूहों ने जुदाई का खेल देखने की दिल में चाहना की। श्री राजजी महाराज तख्त पर रूहों को खेल दिखाने के वास्ते बैठे।

देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह।
देखें पातसाही हक की, देखें इस्क बड़ा किन का।।३।।

सब रूहों को जुदाई का डर लग रहा है, पर खेल देखने की चाह अति भारी है, ताकि श्री राजजी महाराज की बादशाही देख सकें और इश्क किसका बड़ा है, जान सकें।

एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल।
क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल।।४।।

सब रूहें इस प्रकार एक साथ मिलकर बैठी हैं। उनके बीच सुन्दर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। इनके स्वरूपों का तेज बेशुमार है। उसकी शोभा यहां की जबान से कैसे कहें?

सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए।
यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए।।५।।

सब सुन्दरसाथ एक रूप होकर भरके बैठे हैं। वह इस तरह से हिल-मिलकर बैठी हैं कि इनके स्वरूप को दो नहीं कह सकते।

एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग।
क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग।।६।।

सब एक स्वरूप होकर बैठी हैं। जिनके वस्त्रों में कई तरह के रंग हैं और रंग-रंग में कई तरंग हैं। इनका वर्णन कैसे हो?

देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।।७।।

अन्दर की आंखें खोलकर विवेक से देखो तो एक का भी वर्णन करना सम्भव नहीं है। गले से गले लगाकर बैठी हैं।

Nijanand App

एक सागर कह्यो तेज जोत को, दूजो सोभा सुन्दर।
कई तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आंख अंदर॥८॥

एक तो नीर सागर का तेज दूसरा रूहों की सुन्दरता के रंगों में कई तरंगें उठती हैं। यह आत्म दृष्टि से देखो।

ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।
आवे न निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग॥९॥

यह रूहों का मेला एक-दूसरे से लगकर बैठा है, जिनके बीच में से एक उंगली जाने की जगह नहीं है।

गिरदवाए तखत के, कई बैठियां तले चरन।
जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन॥१०॥

तख्त के चारों तरफ श्री राजजी महाराज के चरणों तले सखियां बैठी हैं और सोच रही हैं कि हम ऐसे ही मिलकर चरणों को पकड़े रखेंगे ताकि अलग न हो सकें।

चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारों तरफों भराए।
ज्यों मिल बैठियां बीच में, योंही बैठियां गिरदवाए॥११॥

सखियां चारों तरफ कठेड़े तक भरकर बैठी हैं। जैसे बीच में मिलकर बैठी हैं उसी तरह घेरकर बैठी हैं।

एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग।
दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग॥१२॥

एक सखी दूसरी सखी के गले में हाथ डालकर अंग से अंग लगाकर बैठी है। इनके दिल में खेल देखने की बड़ी उमंग है।

जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले।
मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए॥१३॥

सब सखियां ऐसे मिलकर बैठी हैं कि देखकर बड़ी हैरानी होती है। उनके दिलों में डर समाया है कि कहीं अलग न हो जाएं।

अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर॥१४॥

इस तरह से पूरे चबूतरे पर भरकर कभी नहीं बैठीं। आज इस तरह चबूतरे पर भरकर बैठी हैं कि सागर के समान शोभा बेशुमार है।

माहें ऊंची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर।
अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर॥१५॥

सभी सखियां अंग में उमंग लेकर खेल देखने की चाहना से बराबर बैठी हैं। कोई ऊंची नीची नहीं है।

सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक बड़ी रूह अरवाहें।
ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबांए॥१६॥

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की बैठक की शोभा और सुन्दरता बेशुमार है। नीर सागर के समान शोभा है, जिसका वर्णन यहां के मुख और जबान से सम्भव नहीं है।

Nijanand App

अर्स अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन।
नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन।। १७ ।।

परमधाम की रूहों के मुख की शोभा का वर्णन यहां की जबान कैसे करे? रूहों के नेत्र, कान, मुख नासिका बेशुमार शोभा युक्त हैं।

गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार।
जो एक अंग बरनन करूं, वाको भी न आवे पार।। १८ ।।

सखियों के रंग गोरे हैं और मुखारबिन्द पर लालिमा है। जिससे उनकी शोभा बेशुमार है। इनके एक अंग का भी वर्णन करना सम्भव नहीं है।

मुख चौक छबि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी दंत अधूर।
बीच लांक मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर।। १९ ।।

उनके मुख की शोभा कैसे कहूं? सुन्दर हरवटी, दांत, होंठ, और हरवटी के बीच की गहराई तथा मुस्कराहट की शोभा कहां तक कहूं?

साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार।
कई जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार।। २० ।।

बदन पर साड़ी, चोली, चरनियां के जड़ावों के रंग झलकते हैं। कई जवाहरात सिनगार में शोभा देते हैं। कहां तक उनका वर्णन कहूं?

रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर।। २१ ।।

सब रूहें अलग-अलग वस्त्रों की शोभा में हिल-मिल एक रूप होकर बैठी हैं। उनकी बैठक में साड़ियों के कई रंग हैं। जिनका बयान कैसे करूं?

कई साड़ी रंग सेत की, कई साड़ी रंग नीली।
कई साड़ी रंग लाल हैं, कई साड़ी रंग पीली।। २२ ।।

कई रूहों की साड़ी सफेद रंग की है। कई की नीली, कई की लाल और कई की साड़ी के रंग पीले हैं।

एक लाल माहें कई रंग, और कई रंग नीली माहें।
कई रंग पीली कई सेत में, कई रंग क्यों कहूं जुबांए।। २३ ।।

एक लाल रंग में कई रंग हैं। इसी तरह कई रंग नीले, पीले और सफेद रंगों में हैं। जिनके रंगों की शोभा यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

मैं नाम लेत रंगों के, कहूं केते लाल माहें एक।
एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक।। २४ ।।

मैं रंगों के नाम लेती हूं तो एक लाल रंग में ही कई लाल रंग हैं। एक नीला रंग बताती हूं तो उसमें भी कई तरह के नीले रंग हैं।

Nijanand App

इन बिध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए।। २५ ।।

इस तरह से कई रंग के वस्त्र हैं जिनकी शोभा वर्णन करने में नहीं आती। फिर सब सखियां अंग से अंग लगाकर बैठी हैं। उनमें कोई अलग नहीं है तो उनकी साड़ियों का रंग कैसे बयान करें?

अनेक रंगों साड़ियां, माहें कई बिरिख बेली पात।
फल फूल नकस कटाव कई, ताथें बरन्यो न जात।। २६ ।।

अनेक रंग की साड़ियों में कई तरह के वृक्ष, बेल, पत्ते, फल, फूल, नक्शकारी, कटाव बने हैं, जिससे उनका वर्णन करना सम्भव नहीं है।

कई रंग कहूं वस्तरों, के कहूं जवेरों रंग।
इन बिध रंग अनेक हैं, ताके उठें कई तरंग।। २७ ।।

वस्त्रों के कई रंग कहे हैं। जवेरों के कई रंग कहे हैं। इस तरह के कई रंग हैं जिनमें कई तरह की तरंगें उठती हैं।

कई किरने उठें कंचन की, कई किरने हीरन।
पाच पांने मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन।। २८ ।।

कई तरंगें सोने की, कई हीरों की, कई पाच की, कई पन्ना की, कई मोती और माणिक की, जवेरों की किरणें उठती हैं। यह कहा नहीं जा सकता।

सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन।
आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन।। २९ ।।

यह किरणें ऊपर दरवाजे, दीवारों, थंभों में आमने-सामने टकराती हैं।

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए।। ३० ।।

चोली और चरनियां (लहंगा) सबके अंग की ही शोभा दिखाई देती है। रूहों के एक अंग का वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह तो सब लिपटकर बैठी हैं।

हेम हीरा मोती मानिक, कई रंगों के हार।
पाच पांने नीलवी लसनिए, कई जवेरों अंबार।। ३१ ।।

सोना, हीरा, मोती, माणिक तथा और कई रंगों के हार पहने हैं जिनमें पाच, पन्ना, नीलवी और लसनियां के जड़े नग बेशुमार शोभा देते हैं।

सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन।
मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन।। ३२ ।।

आभूषणों की शोभा भी बेशुमार है जो हाथ और पैर चलाने से आवाज करते हैं। उनकी सुन्दर नर्म और मीठी वाणी और खुशबू बेहद सुखदाई हैं।

Nijanand App

वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३३ ।।

सब अंगों के वस्त्र आभूषणों के कितने ही रंग हैं। कैसे कहूं? एक-एक नग में अनेक रंग हैं और एक-एक रंग में कई तरंगें हैं।

निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार।
हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार।। ३४ ।।

रूहों का मस्तक, कान, नाक, सिर, तन तथा गले के हार, हाथ, पांव, चरण के आभूषण के कई बेशुमार सिनगार हैं।

जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर।। ३५ ।।

जो परमधाम की रूहें हों वह विचार कर देखना। यहां अंगों के रंग तथा नग के रंग सब आपस में जंग करते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

महामत कहे बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर।
कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से रूहों को इकट्ठा बैठा देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और कहते हैं कि देखें खेल में जाकर कैसे इकट्ठी रहती हैं?

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १५८ ॥

ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस।। १ ।।

इस सुख के सागर की शोभा परमधाम की रूहें लेंगी, क्योंकि इनकी ही परआतम मूल-मिलावे में बैठी हैं। जिसे यह परस्पर देखेंगी।

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन।। २ ।।

यह जो सपने के स्वरूप हैं इनकी परआतम की नजर इनको ही देख रही है। वह परआतम हमारे सपने के तनों को सपने में देख रहे हैं।

उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर।
अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर।। ३ ।।

जब हमारी आत्मा परआतम को परमधाम की नजर से देखे तो खेल में बैठे ही अखण्ड घर के सुख हृदय में चुभ जाते हैं।

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम।। ४ ।।

हमारी परआतम की नजर हमारे संसार के तनों पर है। जहां हम अलग-अलग हो गए हैं। इस संसार में हम जो कुछ करते हैं वह सब श्री राजजी का हुकम कराता है।

Nijanand App

वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।। ३३ ।।

सब अंगों के वस्त्र आभूषणों के कितने ही रंग हैं। कैसे कहूं? एक-एक नग में अनेक रंग हैं और एक-एक रंग में कई तरंगें हैं।

निलवट श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार।
हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार।। ३४ ।।

रूहों का मस्तक, कान, नाक, सिर, तन तथा गले के हार, हाथ, पांव, चरण के आभूषण के कई बेशुमार सिनगार हैं।

जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर।। ३५ ।।

जो परमधाम की रूहें हों वह विचार कर देखना। यहां अंगों के रंग तथा नग के रंग सब आपस में जंग करते हैं। ऐसी सुन्दर शोभा बनी है।

महामत कहे बैठियां देख के, हक हंसत हैं हम पर।
कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से रूहों को इकट्ठा बैठा देखकर श्री राजजी महाराज हंस रहे हैं और कहते हैं कि देखें खेल में जाकर कैसे इकट्ठी रहती हैं?

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १५८ ॥

ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस।। १ ।।

इस सुख के सागर की शोभा परमधाम की रूहें लेंगी, क्योंकि इनकी ही परआतम मूल-मिलावे में बैठी हैं। जिसे यह परस्पर देखेंगी।

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन।। २ ।।

यह जो सपने के स्वरूप हैं इनकी परआतम की नजर इनको ही देख रही है। वह परआतम हमारे सपने के तनों को सपने में देख रहे हैं।

उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर।
अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर।। ३ ।।

जब हमारी आत्मा परआतम को परमधाम की नजर से देखे तो खेल में बैठे ही अखण्ड घर के सुख हृदय में चुभ जाते हैं।

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम।। ४ ।।

हमारी परआतम की नजर हमारे संसार के तनों पर है। जहां हम अलग-अलग हो गए हैं। इस संसार में हम जो कुछ करते हैं वह सब श्री राजजी का हुकम कराता है।

Nijanand App

इन बिध हक का इलम, हमको जगावत।
इलम किल्ली हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत।।५।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी हमको इस तरह से जगाती है। श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान हमको दिया है जिससे अखण्ड घर की पहचान होती है।

बीच असल तन और सुपने, पट नींदै का था।
सो नींद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का।।६।।

हमारे मूल परमधाम के तन में और सपने के तन में परदा फरामोशी का था जिसे तारतम वाणी के ज्ञान से उड़ा दिया। फिर भी हम सपने के तन में बैठे हैं। श्री राजजी महाराज ने ऐसी करामात की है।

ना तो नींद उड़े पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के।।७।।

नींद समाप्त होने पर सपना कितनी देर रहता है। इसी तरह से जागृत होने पर यह सपने का तन नहीं रहना चाहिए, पर क्या करें? श्री राजजी महाराज के हुकम से तन खड़ा है।

हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी दे।
खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले।।८।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने ही खेल दिखाया और फरामोशी देकर अलग-अलग किया। फिर खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत किया। अब हुकम ही हमको इकट्ठा ले चलेगा।

बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम।
उमेदां तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम।।९।।

अब समय नजदीक आ गया है जितने दिन बाकी रहना है उतने दिन तुम्हारी चाहना पूरी करने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने अपने हुकम से तुम्हें खेल में रखा हुआ है।

जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार।
ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार।।१०।।

इसलिए, हे परमधाम की रूहो! तुम सब प्यार से मिलो और इस फजर की वाणी को देखकर सब सावचेत हो जाओ।

अब फरामोसी क्यों रहे, जब खुल्या बका द्वार।
रूबरू किए हमको, तन असल नूर के पार।।११।।

अब परमधाम की पहचान तारतम वाणी से हो गई है, फिर फरामोशी कैसे रह सकती है। हमको तारतम ज्ञान ने अक्षर के पार मूल परआतम के सामने खड़ा कर दिया है।

बैठी थीं डर जिनके, सब हिल मिल एक होए।
हुकम हक के कौल पर, उलट तुमको जगावे सोए।।१२।।

जिस डर से रूहें हिल-मिलकर एक होकर बैठी थीं। अब श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार उनका हुकम तुम्हें जगा रहा है।

Nijanand App

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत।। १३ ।।

वरन यह स्वप्न के तन तो सपने की तरफ ही खींचते हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही है जो हमें सपने से खींचकर श्री राजजी से मिलवाता है।

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम।। १४ ।।

इस उलटी दुनियां से सीधे रास्ते पर जागृत बुद्धि तारतम वाणी के बिना कोई नहीं ला सकता। जागृत बुद्धि तुम्हारी चाहना पूरी करके यहां जगाकर श्री राजजी की तरफ खींचती है।

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए।। १५ ।।

यह जो कुछ हो रहा है सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है। नहीं तो जाग जाने पर परआतम में फरामोशी कैसे रह सकती है? यह हुकम ही जगाकर मिला देगा।

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कौन सी मेहर कर रहे हैं उसकी खबर हमको नहीं होती। मेहरबान श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह से मेहर करते ही रहते हैं।

महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर की समझ रूहों को आ जाए तो अज्ञानता की रात मिटकर ज्ञान का सवेरा हो जाए।

|| प्रकरण || ३ || चौपाई || १७५ ||

सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तीसरा सागर नैरित दिशा में रूहों की एकदिली का है। अर्श की रूहें मूल-मिलावा में विराजमान हैं। यदि आत्म-दृष्टि से देखते हैं तो इनकी महिमा का पता लगता है।

अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए न सकें एक खिन।
ए माहें क्यों होंए जुदियां, असल रूहें एक तन।। २ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकतीं, क्योंकि एक तन हैं।

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित।। ३ ।।

इन सबकी अकल, चित्त, दिल और इश्क एक हैं। स्नेह, हित हमेशा अखण्ड है।

Nijanand App

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत।। १३ ।।

वरन यह स्वप्न के तन तो सपने की तरफ ही खींचते हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही है जो हमें सपने से खींचकर श्री राजजी से मिलवाता है।

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम।। १४ ।।

इस उलटी दुनियां से सीधे रास्ते पर जागृत बुद्धि तारतम वाणी के बिना कोई नहीं ला सकता। जागृत बुद्धि तुम्हारी चाहना पूरी करके यहां जगाकर श्री राजजी की तरफ खींचती है।

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए।। १५ ।।

यह जो कुछ हो रहा है सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है। नहीं तो जाग जाने पर परआतम में फरामोशी कैसे रह सकती है? यह हुकम ही जगाकर मिला देगा।

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कौन सी मेहर कर रहे हैं उसकी खबर हमको नहीं होती। मेहरबान श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह से मेहर करते ही रहते हैं।

महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर।। १७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की मेहर की समझ रूहों को आ जाए तो अज्ञानता की रात मिटकर ज्ञान का सवेरा हो जाए।

|| प्रकरण || ३ || चौपाई || १७५ ||

सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि तीसरा सागर नैरित दिशा में रूहों की एकदिली का है। अर्श की रूहें मूल-मिलावा में विराजमान हैं। यदि आत्म-दृष्टि से देखते हैं तो इनकी महिमा का पता लगता है।

अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए न सकें एक खिन।
ए माहें क्यों होंए जुदियां, असल रूहें एक तन।। २ ।।

परमधाम की जितनी रूहें हैं एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकतीं, क्योंकि एक तन हैं।

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित।। ३ ।।

इन सबकी अकल, चित्त, दिल और इश्क एक हैं। स्नेह, हित हमेशा अखण्ड है।

Nijanand App

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल।। ४ ।।

इनके दिल में बैठकर देखें तो सबका एक रूप एक सागर के समान दिखाई देता है, क्योंकि सबों का दिल एक है, इसलिए हिल-मिलकर बैठी हैं।

हांस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल।
तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल फैल जो हाल।। ५ ।।

इनकी हंसी, विलास, सुख, कहनी, करनी, रहनी और स्वभाव एक सा है। इनका वर्णन कैसे करूं?

तो कह्या वाहेदत इनको, अर्स अरवा हक जात।
ज्यों जोतें जोत उद्दोत है त्यों, सूरत की सूरत सिफात।। ६ ।।

इसलिए अर्श की वाहेदत श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, यह अखण्ड परमधाम में रहने वाली हैं, इसलिए ही तो वाहेदत कहते हैं। जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक अधिक सुन्दर लगता है ऐसे ही इनके एक स्वरूप से दूसरा अधिक तेजोमयी है।

इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए।। ७ ।।

यदि एक रूह श्री राजज महाराज के रहस्य को दूसरी से बताती है तो दूसरी के तन में अपार खुशी होती है। इस तरह से रूह की एकदिली का वर्णन कैसे करूं?

वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से।
दिल दूजी के यों आवत, ए सब सुख लिया मैं।। ८ ।।

एक सखी दूसरी से बताती है कि मैंने श्री राजजी महाराज से कैसे सुख लिया, तो दूसरी समझती है कि ओहो! यह सुख तो मैंने भी लिया है।

एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों।
यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों।। ९ ।।

एक ही बात से दूसरी सखी को भी सुख मिलता है। इसी तरह से सबों के दिल एक हैं। फिर इनका वर्णन जुदा-जुदा कैसे करें?

एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए।
जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए।। १० ।।

एक सखी श्री राजजी महाराज से बात करती है तो दूसरी को सुख मिलता है। जब श्री राजजी को बोलते हुए देखती हैं तो दोनों को सुख होता है।

अरस-परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए।
अति सुख पावें बड़ीरूह, ए तिनके अंग सब सोए।। ११ ।।

इस तरह से सभी अरस-परस श्री राजजी महाराज से आराम व सुख लेती हैं। इससे बड़ी रूह श्यामाजी महारानी को अपार सुख होता है, क्योंकि सब रूहें तो श्यामाजी के अंग हैं।

Nijanand App

जो सुख पावत बड़ीरूह, सब तिनके सुख सनकूल।
ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल।। १२ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी को जो सुख मिलता है वही सुख सबको मिलता है। जैसे वृक्ष की जड़ में जल सींचने से ठीक उसी तरह पत्ते, डाली, फल, फूल को जल पहुंच जाता है।

त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ीरूह को।
बड़ीरूह का सुख रूहन, आवत है सब मों।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज का जितना सुख श्यामा महारानी को मिलता है, उतना ही श्यामा महारानी का सुख सब रूहों में आ जाता है।

या भूखन या वस्तर, सिनगार के बखत।
एक पेहेने सुख दूजी को यों, सबों सुख होत अतंत।। १४ ।।

सिनगार के समय में एक सखी वस्त्र और आभूषण धारण करती है तो सुख दूसरी को होता है। इसी तरह से सभी सखियों को सुख मिलता है।

या जो बखत आरोगने, या कोई अर्स लज्जत।
सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत।। १५ ।।

आरोगने के समय या और किसी लज्जत के समय एक रूह से दूसरी देखने वाली को और कहने वाली को अधिक सुख मिलता है।

ए सुख बातें अर्स की, अलेखे अखंड।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड।। १६ ।।

यह परमधाम के सुख की बातें अखण्ड और बेशुमार हैं। संसार में बैठकर इस झूठी जबान से मैं कैसे वर्णन करूं?

मैं नेक कही इन बिध की, सो अर्स में बिध बेसुमार।
इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार।। १७ ।।

मैंने तो यह थोड़ी सी हकीकत कही है। परमधाम में तो बेशुमार शोभा है। जिस खूबी और शोभा का पार न हो उसे यहां के शब्दों में कैसे कहा जाए?

तो कह्या रसूल ने, अर्स में वाहेदत।
सो कह्या इन माएनो, ए रूहें एक दिल एक चित्त।। १८ ।।

इसलिए रसूल साहब ने कहा है कि परमधाम में रूहें एक दिल, एक चित्त होने से उनकी वाहेदत कहलाती हैं।

एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार।
तो कही जो चीज अर्स की, सो चीजें चीज अपार।। १९ ।।

एक रूह जो सुख लेती है, वह सुख बारह हजार को होता है, इसलिए परमधाम की जो चीजें कही हैं, सभी बेशुमार हैं।

Nijanand App

जो कोई चीज अर्स में, बाग जिमी जानवर।
ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्यों ए कर।। २० ।।

परमधाम के बाग, जमीन, जानवरों के इश्क का बल और सुख का पार नहीं है।

या पसु या बिरिख कोई, अपार तिनों की बात।
तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात।। २१ ।।

पशु हो या वृक्ष, सबकी शोभा बेशुमार है तो फिर रूहों के सुखों का वर्णन कैसे करूं जो श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं।

जिन किनको संसे उपजे, खेल देख के यों।
ए जो रूहें अर्स की, तिनका इस्क न रह्या क्यों।। २२ ।।

परमधाम की रूहों को खेल में देखकर संशय नहीं होना चाहिए कि इनका इश्क कहां गया।

इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अर्स के माहें।
क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहें।। २३ ।।

रूहें और इनका इश्क सदा अखण्ड परमधाम में अखण्ड है, इसलिए परमधाम से न ही रूहें आ सकती हैं और न उनका इश्क ही, क्योंकि वहां कुछ कम नहीं होता।

उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत।
और इस्क जाए क्यों इनों का, जिनकी एती बड़ी सिफत।। २४ ।।

वहां कमी कैसे हो सकती है? और भला रूहें कैसे यहां आ सकती हैं? जिनकी इतनी बड़ी भारी महिमा है उनका इश्क कहां जा सकता है?

जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत।
जो इलम विचारे हक का, ताको इस्क बढ़त।। २५ ।।

यह रूहें श्री राजजी की ही अंगना कहलाती हैं। परमधाम में यह सब एक हैं। इस तरह से जो जागृत बुद्धि तारतम वाणी से विचार करेगा, खेल में उसका इश्क बढ़ता रहेगा।

ए केहेती हों मैं तिनको, कोई संसे ल्यावे जिन।
ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हांसी ऊपर रूहन।। २६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस बात में कोई संशय मत लाओ। यह अनहोनी श्री राजजी महाराज ने रूहों से मजाक (हंसी) करने के लिए की है।

ना तो ए कबहूं नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन।
एक जरा अर्स का, उड़ावे चौदे भवन।। २७ ।।

वरना यह हो नहीं सकता कि पारब्रह्म अक्षरातीत की रूहें सपने में आकर झूठ का खेल देखें, क्योंकि परमधाम के एक कण के सामने चौदह लोक का ब्रह्माण्ड टिक नहीं सकता।

ए हकें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन।
पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन।। २८ ।।

यह तो श्री राजजी महाराज ने अपनी हिकमत (कारीगरी) से रूहों को फरामोशी देकर उनको झूठा खेल दिखाया है। रूहें परआतम की नजर से खेल देख रही हैं।

Nijanand App

आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक।। २९ ।।

यह परदा श्री राजजी महाराज के सामने नहीं है। यह उन्होंने अपनी रूहों के आगे फरामोशी का परदा करके खेल दिखलाया है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को देखते हैं। यह फरामोशी तो नाम मात्र की है।

इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर।
अपने तन हकें जानके, करी हांसी रूहों ऊपर।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज ने इस तरह से खेल दिखाया है वरना रूहें यह झूठा खेल कैसे देख सकतीं, श्री राजजी महाराज ने रूहों को अपनी अंगना जानकर उन पर मजाक (हंसी) किया है।

सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें।
खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहें।। ३१ ।।

यह मजाक (हंसी) भी सुख देने के वास्ते की है, जिसकी खबर अभी किसी को नहीं है। परमधाम में जब जागेंगे तब यह खेल बहुत सुख देगा।

हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर।
इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर।। ३२ ।।

श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से हैं और सब रूहें श्री श्यामा महारानी के नूर से हैं। इस तरह से परमधाम में सब एकदिली है और सब श्री राजजी महाराज के तन की शोभा हैं।

महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर।
अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अंतर।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने रूहों के एकदिली के यह तीसरे सागर का बयान किया है। अब चौथा सागर दधि सागर जो सिनगार का सागर है, का बयान करती हूं। इसे अपनी रूह की नजर से देखो।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || २०८ ||

सागर चौथा जुगल किसोर का सिनगार
श्री राजजी का सिनगार–मंगला चरन

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।। १ ।।

चौदह लोक की दुनियां में किसी ने भी आज दिन अखण्ड परमधाम की हकीकत नहीं बताई। वह बता भी नहीं सकते। परमधाम कहां है, इसका ज्ञान भी उन्हें नहीं है।

आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह।। २ ।।

खुदाई इलम (कलमा) गवाही देता है कि खुदा एक अक्षरातीत है। अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मैं (महामति) अखण्ड परमधाम पहुंची।

Nijanand App

आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक।। २९ ।।

यह परदा श्री राजजी महाराज के सामने नहीं है। यह उन्होंने अपनी रूहों के आगे फरामोशी का परदा करके खेल दिखलाया है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपनी रूहों को देखते हैं। यह फरामोशी तो नाम मात्र की है।

इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर।
अपने तन हकें जानके, करी हांसी रूहों ऊपर।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज ने इस तरह से खेल दिखाया है वरना रूहें यह झूठा खेल कैसे देख सकतीं, श्री राजजी महाराज ने रूहों को अपनी अंगना जानकर उन पर मजाक (हंसी) किया है।

सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें।
खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहें।। ३१ ।।

यह मजाक (हंसी) भी सुख देने के वास्ते की है, जिसकी खबर अभी किसी को नहीं है। परमधाम में जब जागेंगे तब यह खेल बहुत सुख देगा।

हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर।
इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर।। ३२ ।।

श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से हैं और सब रूहें श्री श्यामा महारानी के नूर से हैं। इस तरह से परमधाम में सब एकदिली है और सब श्री राजजी महाराज के तन की शोभा हैं।

महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर।
अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अंतर।। ३३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने रूहों के एकदिली के यह तीसरे सागर का बयान किया है। अब चौथा सागर दधि सागर जो सिनगार का सागर है, का बयान करती हूं। इसे अपनी रूह की नजर से देखो।

|| प्रकरण || ४ || चौपाई || २०८ ||

सागर चौथा जुगल किसोर का सिनगार
श्री राजजी का सिनगार–मंगला चरन

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।। १ ।।

चौदह लोक की दुनियां में किसी ने भी आज दिन अखण्ड परमधाम की हकीकत नहीं बताई। वह बता भी नहीं सकते। परमधाम कहां है, इसका ज्ञान भी उन्हें नहीं है।

आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह।। २ ।।

खुदाई इलम (कलमा) गवाही देता है कि खुदा एक अक्षरातीत है। अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मैं (महामति) अखण्ड परमधाम पहुंची।

Nijanand App

अर्स देख्या रूह अल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अन्दर।।३।।

अब परमधाम में पहुंचकर मैंने अखण्ड घर के अन्दर श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज की किशोर सूरत (अमरद सूरत) तथा अर्श (मूल-मिलावा) की रूहों को देखा।

नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत।
रूह अल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत।।४।।

जमुनाजी, हौज कौसर तालाब, बगीचे, पशु-पक्षी और अखण्ड परमधाम (घर) की सब हकीकत को देखा। जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें रहती हैं जिसकी गवाही श्री श्यामा महारानी ने भी दी है।

महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत।।५।।

रसूल साहब परमधाम में गए और उन्होंने श्री राजजी महाराज की किशोर (अमरद) सूरत को देखा। उन्होंने भी हौज कौसर, जमुनाजी, बाग, जानवर की सब हकीकत बताई।

देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर।।६।।

रसूल साहब ने श्री राजजी महाराज के हजूर में पहुंचकर उनके किशोर स्वरूप और उनके घुंघराले बाल (जुल्फें) देखे और बहुत बातें कीं। उन्होंने कुछ जाहिर शरीयत की बातें कही हैं और कुछ हकीकत और मारफत की छिपाकर रखीं।

ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक।
सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक।।७।।

हक के इलम से इस बात की गवाही मिलती है कि खुदा एक अक्षरातीत ही है। मुहम्मद साहब का कहा सब सत्य है। जो बातें हकीकत और मारफत की छिपाकर रखी हैं उनकी सुध जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के बिना कैसे हो सकती है? तारतम वाणी से ही सब संशय मिट सकते हैं।

महंमद की फुरमान में, कही तीन सूरत।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत।।८।।

रसूल साहब के कुरान में मुहम्मद की तीन सूरतों बसरी, मलकी और हकी का बयान है। जिनमें एक शुरू में रसूल साहब और दो (मलकी और हकी) का आखिरत में आने का बयान है।

मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी।
ना तो अव्वल से आज लगे, कहूं जाहेर न बका की।।९।।

मैं जो अब अखण्ड स्वरूप का वर्णन करने जा रही हूं वह श्री राजश्यामाजी दोनों की मेहर से है। जो आज दिन तक किसी ने वर्णन नहीं किया।

आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए।
ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए।।१०।।

मेरी आत्मा चाहती है कि मैं श्री राजजी महाराज और श्यामाजी महारानी के स्वरूप का वर्णन करूं, परन्तु कठिनाई यह है कि वह दोनों तो एक ही हैं, तो दो स्वरूप का वर्णन कैसे करें?

Nijanand App

बरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए।
एक देखाऊं बातून में, जाहेर बरनवूं दोए।। ११ ।।

बातूनी में श्री राजश्यामाजी को एक ही जाहिर करूंगी और जाहिरी में ऊपर के सिनगार से दो वर्णन करूंगी। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि तारतम वाणी से यह वर्णन हो सकता है।

रूह चाहे बका सरूप की, बरनन करूं जिमी इन।
इलम लदुन्नी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन।। १२ ।।

मेरी आत्मा चाहती है कि परमधाम के अखण्ड स्वरूप का वर्णन जागृत बुद्धि तारतम वाणी से इस संसार में करूं जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं सुना है।

जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका।। १३ ।।

ऐसा नहीं समझना कि मैं किसी आदमी के स्वरूप का वर्णन कर रही हूं। यह वर्णन सबसे अलग अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का करती हूं।

मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर।
नूर पार नूरतजल्ला, ए जो अछरातीत सब पर।। १४ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर शून्य (निराकार) है। उनके ऊपर अक्षर ब्रह्म है। अक्षर ब्रह्म के परे अक्षरातीत है। इसे कुरान में नूरतजल्ला कहते हैं।

अर्स ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत।
सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत।। १५ ।।

परमधाम तथा श्री राजजी महाराज का स्वरूप सिनगार सब अखण्ड है। इसमें घट-बढ़ नहीं होती।

जित जैसा रूह चाहत, तहां तैसा बनत सिनगार।
नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार।। १६ ।।

परमधाम की रूहें जैसा अपने धनी का सिनगार देखना चाहती हैं, वैसे ही अखण्ड सिनगार हैं। नित्य नए-नए सिनगार धारण किए श्री राजजी महाराज दिखाई देते हैं।

या वस्तर या भूखन, जो दिल रूह चहे।
सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूं ही बन रहे।। १७ ।।

मेरी रूह श्री राजजी महाराज के अंग पर जैसे वस्त्र, आभूषण देखना चाहती है कहने से पहले ही वह सिनगार बदला हुआ दिखता है।

हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर।
चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न अग्या बिगर।। १८ ।।

आभूषणों को हाथ लगाओ तो उनके आकार का पता नहीं लगता, क्योंकि वह अंग की शोभा है और बिना आज्ञा के अलग नहीं हो सकता। ऐसे सब अंगों पर चितचाहे सिनगार शोभा देते हैं।

Nijanand App

जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूंही बनि आवे।
इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे।। १९ ।।

जिस क्षण में जिस सिनगार की चाहना होती है, वह पहले से ही बनकर सबमें हमेशा नया रूप दिखाई देता है।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख।
वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख।। २० ।।

यहां पहनना और उतारना नहीं होता। दिल में चाहे के अनुसार ही नए सुख हमेशा मिलते हैं। श्री राजजी महाराज़ की नजर से सींची आत्माओं को यह अखण्ड सुख हमेशा मिलते हैं।

सब्द न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे।
तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए।। २१ ।।

असल स्वरूप के वर्णन करने के लिए शब्द ही नहीं मिलते, परन्तु रूहों को सेवा करने की चाहना है, इसलिए मैं इनका वर्णन करती हूं जिससे रूहों के दिल में यह स्वरूप आ जाए।

इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान।
तो ए बरनन क्यों होवहीं, अर्स साहेब सुभान।। २२ ।।

परमधाम के एक कण की रोशनी आसमान में नहीं समाती, तो परमधाम के मालिक श्री राजजी महाराज का वर्णन कैसे हो?

आसिक क्यों बरनन करे, इस्क लिए रेहेमान।
एक अंग को देखन लगी, सो तित हीं भई गलतान।। २३ ।।

फिर श्री राजजी महाराज के आशिक जो परमधाम की रूहें हैं, वह तो अपने माशूक के एक अंग को ही देखकर वहीं अटक जाती हैं, तो फिर वह स्वरूप का वर्णन कैसे करें?

सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए।
आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इन के।। २४ ।।

श्री राजश्यामाजी के युगल-स्वरूप के सिनगार का यह चौथा दधि सागर है जो अत्यन्त सुखदाई है। इसमें गर्क होने वाली रूहों को ही इसका अपार आनन्द मिलता है।

खूबी जुगल किसोर की, प्रेम वचन इन रीत।
आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत।। २५ ।।

श्री राजश्यामाजी के प्रेम भरे वचनों से श्री राजजी महाराज के आशिक रूहें अपने माशूक के इश्क भरे प्याले पीती हैं।

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।। २६ ।।

मेरी रूह की आंख की पुतली और फिर पुतली के अन्दर जो छोटा नूर है, उसमें अपने माशूक श्री राजजी महाराज को बसा लूं, जिससे मेरी आत्मा को चैन व करार मिले।

।। मंगला चरन तमाम ।।

Nijanand App

सिर पाग बांधी चतुराई सों, हकें पेच हाथ में ले।
भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहूं विध ए।। २७ ।।

अपने आशिक रूहों के दिल के भाव को देखकर श्री राजजी महाराज अपने हाथ से पाग के लपेट को सुन्दरता से सम्भालते हैं। उस सुख का कैसे वर्णन करूं?

केस चुए में भीगल, लिए जुगतें पेच फिराए।
पेच दिए ता पर बहु बिध, बांधी सारंगी बनाए।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के घुंघराले बालों में सुगन्धित इत्र लगा है। जिनके ऊपर पाग के लपेट कई तरह से आए हैं जिससे पाग की शोभा सारंगी जैसी बनी है।

उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत।
बांधी हिरदे विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज के हस्त कमल अत्यन्त कोमल और उज्जवल हैं। जिनसे उन्होंने हृदय में चाही इच्छानुसार पाग बांधी है। इन दोनों हस्त कमल की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

रंग लाल जरी माहें बेल कई, कई फूल पात नकस कटाव।
कई रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव।। ३० ।।

पाग का रंग लाल है जिसकी जरी में बेल, फूल, पत्ते, नक्शकारी, कटाव कई रंग के नगों से जड़े जवेर झलकते हैं। जिस प्रेम के भाव को लेकर श्री राजजी महाराज ने पाग बांधी है मैं उस पर बलिहारी जाती हूं।

आसिक एही विचार हीं, तब याही में रहे लपटाए।
अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए।। ३१ ।।

रूहें मन में जब विचार करती हैं तो इसमें मग्न हो जाती हैं। श्री राजजी महाराज के हस्त कमलों की कारीगरी से बांधी हुई पाग से चित्त को कैसे हटाएं?

ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत।
याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उद्दोत।। ३२ ।।

पाग के ऊपर कलंगी लटकती है। जिसकी तरंगें जगमगा रही हैं। उसका नूर आसमान तक छाया है।

ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट।
ए देखे अंतर आंखें खुलें, ए जो हैड़े के कपाट।। ३३ ।।

सारंगी की बनावट जैसी, पाग के ऊपर, दुगदुगी जगमगा रही है। आत्म-दृष्टि से यदि देखे, तभी इस शोभा का अनुभव होता है।

इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत।
और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी लटकत।। ३४ ।।

कलंगी में जो पर लगे हैं उन्हें देख-देखकर रूह का चित्त अटक जाता है। उसके नीचे जो दुगदुगी लगी है उसके नगों की जोत अलग ही है।

Nijanand App

ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भरयो ताके तेज।
आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज।। ३५ ।।

दुगदुगी में माणिक लगा है, जिसका तेज आसमान तक फैला है। आसमान और जमीन के बीच में कण-कण में इसकी तरंगें झलकती हैं।

सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए।। ३६ ।।

मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन करने के लिए शब्द ही नहीं मिलता। यह मुखारबिन्द परमधाम के नूर श्री राजजी महाराज और श्री राजजी महाराज के नूर का ही मुखारबिन्द है। उसके रंग की शोभा किस तरह से कहें?

ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले।
मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए।। ३७ ।।

यह परमधाम के अंग के रंग की उज्जवलता है जिसमें लालिमा झलक रही है। ऐसे श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की छवि का वर्णन कैसे करूं?

तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर।
चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिन्दी अन्दर।। ३८ ।।

माथे पर सोने जैसे रंग का तिलक लगा है। जिसके चारों तरफ दाने-दाने (छोटी-छोटी बिन्दियां) दिखाई देते हैं। उनके अन्दर सुन्दर लाल बिन्दी दिखाई देती है।

लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर।। ३९ ।।

कानों के ऊपर और गालों के ऊपर बालों की जो सुन्दरता है, उसका तेज जमीन और आसमान के बीच भर गया है।

नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे।
सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे।। ४० ।।

नेत्रों का मैं कैसे वर्णन करूं? जिनमें सफेदी के बीच में लालिमा दिखाई देती है। तिरछी चितवन वाले हैं जो मस्ती से भरपूर हैं।

रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे।
कई रंग रस छबि इनमें, निमख न होंए न्यारे।। ४१ ।।

आत्मा की दृष्टि से देखें तो यह अति प्यारे हैं। इनके रंग और रस देखने योग्य हैं। यह छोड़े नहीं जाते।

नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें।
जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहें।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका का वर्णन कैसे करूं? जिसका कोई नमूना ही नहीं है। इसको जिन्होंने देखा है उसकी शोभा उनके हृदय में चुभ रही है।

Nijanand App

कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास।
बीच लाल की लालक, जोत मावत नहीं आकास।। ४३ ।।

कानों में सुन्दर मोती लटकते हैं। जिनकी तरंगें साफ हैं। उन मोतियों के बीच लाल की लालिमा की किरणें आकाश में नहीं समातीं।

लाल बाला अर्स धात का, करड़े बने चार चार।
इन मोती और लाल की, रूह देख देख होए करार।। ४४ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों में परमधाम के नूर तत्व की बाला है। जिनमें चार-चार बल पड़े हैं और उनमें मोती और लाल लटकते हैं, जिसे देखकर अर्श की रूहों को चैन मिलता है।

गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए।
दोऊ भ्रकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिए।। ४५ ।।

गाल गोरे रंग के हैं। जिसमें गहरी लालिमा है। दोनों भौहों के बीच सुन्दर नासिका और ऊपर तिलक शोभा देता है।

गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर।
बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर।। ४६ ।।

मुखारबिन्द की ठोडी बड़ी सुन्दर है। होठ और ठोडी के बीच की गहराई देखकर, ऐसे शोभा युक्त मुखारबिन्द पर मैं बलिहारी जाती हूं। हरवटी और अधर का वर्णन कैसे करूं?

कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस।
गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स।। ४७ ।।

कमर अति कोमल है। पसलियां और पीठ गोरे रंग की शोभा देती हैं। गर्दन के बाल तथा पाग के लपेटों की छवि का वर्णन कैसे करूं, क्योंकि यह परमधाम के सुभान के अंग हैं।

कोमल अंग कंठ हैड़ा, खभे मछे गौर लाल।
कोनी कांड़े कोमल देखत, आसिक बदलत हाल।। ४८ ।।

श्री राजजी महाराज का सुकोमल अंग गला, हृदय, बाजू, भुजा, कोहनी, कलाई सब कोमल दिखाई देते हैं, जिसको देखकर हालत बदल जाती है।

लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल।
रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूरजमाल।। ४९ ।।

कोमल हाथ की रेखाएं लाल रंग की सुन्दर शोभायमान हैं। उनका रंग लाल कहूं या सफेद? इनसे आत्म दृष्टि जुदा नहीं होती। ऐसे श्री राजजी महाराज के अंग की कोमलता है।

नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए।
रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित्त ल्याए।। ५० ।।

उंगलियां पतली हैं और पंजों की शोभा भी अलग ही दिखाई देती है। इन पंजों का रंग हथेली पर शोभा देता है। इसका बयान यहां के मुख से कैसे करें?

Nijanand App

नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर।
ए देखत हीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर।।५१ ।।

आंखें, कान, मुख, नाक की छवि (शोभा) बड़ी सुन्दर है। इसको देखते ही आशिक के अंगों में शोभा समा जाती है।

बीड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तम्बोल रंग लाल।
ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल।।५२ ।।

मुख में जब पान चबाते हैं तब पान के लाल रंग का वर्णन यह आत्मा तभी करती है जब तक उसके हृदय को शोभा चुभ नहीं जाती।

जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस।
ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स।।५३ ।।

लगता है कि अभी नई जवानी (यौवन) का रंग चढ़ रहा है। परमधाम के अंग इस तरह से कायम हैं।

सेत जामा अंग लग रह्या, मिहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें।
दावन क्यों बरनन करूं, इन अंग की जुबांए।।५४ ।।

श्री राजजी के अंग पर सफेद जामा शोभा देता है। जिसकी बाहों पर सुन्दर चुन्नटें दिखाई देती हैं। संसार की जबान से कैसे वर्णन करूं?

बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जड़ाव।
नकस बेल गिरबान बन्ध, पीछे अतंत बन्यो कटाव।।५५ ।।

बागे में दोनों तरफ बेलें और नक्शकारी हैं। हाथ के पहुंचे पर और जामे की मोहरी पर बारीक सुन्दर जड़ाव जड़े हैं। पीठ पर गले के पास सुन्दर बेलि बनी है। जिसके कटाव बेशुमार शोभा देते हैं।

ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर।
लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर।।५६ ।।

यह सब जो जवेरों के रंग, नक्शकारी, कटाव तथा जरी की बेलें दिखाई देती हैं, वह हाथ को छूने में नहीं आतीं। यह सब बागे के धागों की शोभा है।

इजार रंग जो केसरी, झांईं जामें में लेत।
दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत।।५७ ।।

चूड़ीदार पायजामा केसरिया रंग का है। जिसकी चमक बागे में से दिखाई देती है। इसका बन्धन बहुत जगमग करता है। इस केसरिया रंग के ऊपर सफेद रंग का जामा है।

नीले पीले के बीच में, झांईं लेत रंग दोए।
सो पटुका कमर बन्या, रंग कह्या सुन्दरबाई सोए।।५८ ।।

नीले और पीले के बीच में हरे रंग का पटका कमर में बना है। ऐसा रंग सुन्दरबाई (श्यामाजी) ने बताया है।

Nijanand App

जरी पटुका कटाव कई, कई नकस बेल किनार।
पाच पांने हीरे पोखरे, कई रंग नंग झलकार।।५९ ।।

पटके में जरी जड़ी है। इसके किनारे पर कई तरह की नक्शकारी और बेलें बनी हैं जिनमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज और कई तरह के रंग झलकते हैं।

मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्योतकार।
फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार।।६० ।।

उसके घेरों पर मणि, माणिक, लसनियां तथा नीलवी, फूल, पत्ते, बेल की नक्शकारी में सुन्दर शोभा देते हैं।

हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत।
जो कोई चीज अर्स की, खुसबोए अति बेहेकत।।६१ ।।

सोने के वस्त्रों में नग जड़े हैं। बहुत कोमलता है। जो भी चींज परमधाम की है, उसमें सुन्दर खुशबू आती है।

एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक।।६२ ।।

एक हार मोतियों का, एक नीलवी का, एक हीरे का, एक लाल माणिक का और एक लसनियां का ऐसे सुन्दर पांच हार शोभा देते हैं।

इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए।
जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रह्यो भराए।।६३ ।।

इन हारों के बीच दुगदुगी (पैंडलों) के बीच के नगों की शोभा कहने में नहीं आती। इनकी तरंगें उठकर आकाश तक छाई हैं।

इन पांचों हार के फुमक, तिन फुमक पांचों रंग।
रंग पांचों सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग।।६४ ।।

इन पांच हारों के पांच रंग के फुम्मक हैं। यह पांचों अलग-अलग जरी से जड़े हारों के धागे में शोभा देते हैं।

ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध।।६५ ।।

सोने में पांच तरह के रंगों से बाजूबन्ध भुजा पर शोभा देते हैं। फुम्मक अच्छी तरह से लटकते हैं, जिनकी शोभा का वर्णन यहां के मुख से कैसे करें?

दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज।।६६ ।।

दोनों हाथों पर दो पोहोंची अलग-अलग बनावट की शोभा देती हैं। जिनमें मणि, माणिक, मोती, पुखराज, हीरा, लसनियां और नीलवी के नग सोने में जड़े शोभा देते हैं।

Nijanand App

एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजी को।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों।। ६७ ।।

पोहोंची के बीच दुगदुगी और दुगदुगी के चारों तरफ घेरकर सात-सात नग जड़े हैं। यह शोभा दोनों दुगदुगियों की है। यह सातों नग अलग-अलग जिनस के हैं। इनकी शोभा का वर्णन नहीं हो सकता।

पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अगुंरियों सात।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात।। ६८ ।।

सोने की धातु में जड़ी सात मुंदरी सात उंगलियों में शोभा देती हैं जिनमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज, नीलवी, मोती और लसनियां सात नग जड़े हैं।

एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर।
सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर।। ६९ ।।

आठवीं अंगूठी जिसमें माणिक का नग जड़ा है यह सबसे सुन्दर है अंगूठे के साथ वाली उंगली में पहनी है।

इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कई कोट सूरज ढंपाए।
ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए।। ७० ।।

इस मुख से उनके नखों की शोभा जो शीतल सुखकारी अत्यन्त तेजोमयी है, की सिफत कैसे कहें? इसकी जोत में करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं।

अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर।
ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर।। ७१ ।।

जामे के ऊपर आसमानी रंग की पतली सुन्दर चादर (पिछौरी) शोभा देती है जिसमें जामे के आभूषण, बेलों का कटाव सब दिखाई देता है।

लाल नीले पीले रंग कई, सोभें छेड़ों बीच किनार।
जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार।। ७२ ।।

पिछौरी के पल्लों के किनारे पर लाल, नीले, पीले कई रंगों की किरणें उठ रही हैं। यह जामे के ऊपर शोभा देती हैं।

गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झांई इजार।
सेत केसर दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार।। ७३ ।।

बारीक जामे के घेरे में गहरे केसरिया रंग की इजार झलकती है। जामे का सफेद रंग तथा इजार के केसरिया रंग की शोभा बहुत होती है।

नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग।
लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग।। ७४ ।।

इजार की कमर में नेफें में चुन्नटें आई हैं जिसमें मोती और नगों की बेल बनी है। इस बेल में सोने के तारों की लाल, नीली, पीली, चुन्नटें शोभा देती हैं।

Nijanand App

कई रंग इजार बंध में, अनेक विध के नंग।
सारी उमर बरनन करूं, तो होए ना सुपन के अंग।।७५।।

इजार बन्ध में कई तरह के रंग तथा अनेक तरह के नग जड़े हैं। सारी उम्र वर्णन करें तो सपने के तन से वर्णन हो नहीं सकता।

एक एक नंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक।
एकै इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक।।७६।।

मैं एक-एक नग और रंग के नाम लेती हूं, जबकि एक-एक रंग में कई रंग दिखाई देते हैं। इस तरह से एक इजार बन्ध के रंगों और नगों का वर्णन कैसे करूं?

याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनी के चरन।
लांक तली रंग सोभित, ग्रहूं रूह के अन्तस्करन।।७७।।

धनी के चरण कमलों के रंग की शोभा कैसे बताऊं? चरण के नीचे की लांक (गहराई) का रंग बहुत सुन्दर है जिसे आत्मदृष्टि से देखती हूं।

देखूं रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर।
नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अगुंरियों पर।।७८।।

श्री राजजी महाराज के चरण के अंगूठे के रंग और सलूकी (बनावट) का वर्णन कैसे करूं? चरण के नख, अंगूठे से छोटी उंगली तक छोटी-छोटी उतरती दिखाई देती हैं।

पोहोंचे सोभित रंग सुन्दर, टांकन घूंटी काड़े कोमल।
लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊं बल बल।।७९।।

पांव का पोहोंचा (पंजा) अति सुन्दर है जिसमें, टखना, घूण्टी और कड़ा (चूड़ा पहनने की जगह) कोमल हैं। लांक, एड़ी, पिंडली को निहारकर वारी-वारी जाती हूं।

ए चरन नख अति सोभित, जानो तेज पुंज भर पूर।
लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर।।८०।।

चरण के नख बड़े सुन्दर शोभा देते हैं। लगता है तेज का ही पुंज है जिनकी किरणें चलते समय आकाश में चलती दिखाई देती हैं।

अब जो भूखन चरन के, हेम झांझर घूंघर कड़ी।
अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी।।८१।।

अब जो चरणों के आभूषण हैं वह सब सोने के हैं जिनमें झांझर, घुंघरी, कड़ा तीनों में अनेक रंग के नग झलकते हैं। लगता है यह सब जवेरों से जड़े हैं।

जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल।
नई न पुरानी अर्स में, इत होत न चल विचल।।८२।।

इनको किसी ने बनाया या संवारा नहीं है। यह सदा से ही अखण्ड हैं। परमधाम में कोई चीज नई पुरानी नहीं होती। सदा एक सी रहती है।

Nijanand App

जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात।
ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात।। ८३ ।।

सिनगार में मैंने यहां की जबान से जरी, जवेर, रंग, रेशम, बेलों, फल, फूल और पत्तों का जिक्र किया है, परन्तु यह शब्द वहां की उचित उपमा नहीं हैं।

अब जो वस्तर भूखन की, क्यों कर होए बरनन।
इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन।। ८४ ।।

अब जो वस्त्र आभूषण हैं वहां का कैसे वर्णन करें? जहां अक्ल नहीं पहुंचती और न ही कुछ कहने का ठिकाना है।

ए भूखन अर्स जवेर के, हक सूरत के अंग।
कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोब्रन नंग।। ८५ ।।

यह भूषण और जवेर परमधाम के हैं और श्री राजजी महाराज के ही अंग की शोभा हैं, इसलिए रंग, रेशम, सोना और नग जबान से कैसे कहें?

आसिक इन चरन की, अर्स मेला रूहन।
ए खिलवत खाना गैब का, जिन इत किया रोसन।। ८६ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरणों की आशिक हैं और परमधाम में मिल्कर बैठी हैं। यह श्री राजजी महाराज का खिलवतखाना है (मूल-मिलावा है) जिसका यहां बयान किया है।

चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल।
ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथें जाए चल।। ८७ ।।

चरण के नीचे के भाग (तली) में उज्ज्वल लाल रंग शोभा देता है। रूहों की नजर यहां से नहीं हटती। जिसकी नजर यहां से हट जाए तो उसे आशिक कैसे कहा जाए?

पांउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली पर ही रूहों की नजर रहती है और उसके दर्शन ही उनका खाना-पीना है। यही उनकी अखण्ड दोस्ती है जिससे वह धनी के दीदार करती हैं।

इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान।
और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान।। ८९ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों में ही रूहों की जियारत और जकात देना है। खेल से नजर हटाकर श्री राजजी महाराज के चरणों में नजर लगाना ही उनका तीर्थ है। उनकी बन्दगी तथा परहेज सब श्री राजजी के चरणों के वास्ते हैं। इसके अतिरिक्त रूहें और कुछ नहीं चाहती। वह इन्हीं चरणों में कुर्बान होना चाहती हैं।

खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस।
दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास।। ९० ।।

श्री राजजी महाराज का दीदार ही उनका खाना है और उनके नाम की स्वासों में इनका जीवन है तथा उनकी अखण्ड दोस्ती श्री राजजी महाराज से है, उनके दर्शनों से ही इनकी प्यास बुझती है।

Nijanand App

हक खिलवत जाहेर करी, इत सिजदा हैयात।
इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात।। ९१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने श्री राजजी महाराज की गुझ खिलवत (मूल-मिलावा) का बयान किया है, इसलिए हे मोमिनो! तुम यहीं पर अपना अखण्ड सिजदा बजाओ। इसी मूल-मिलावा की रसूल साहब ने सिफत की और अब इमाम साहब श्री प्राणनाथजी महाराज आगे होकर रूहों को यहीं का रास्ता बता रहे हैं।

कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद।
सो कहूं जाए ना सके, पड्या इस्क के कैद।। ९२ ।।

जिस किसी ने श्री राजजी महाराज के इस छिपे भेद को समझ लिया है वह फिर इस मूल-मिलावा से अपना चित्त कभी हटा नहीं सकते और वह इश्क (प्रेम) में बंध जाते हैं।

आसिक पकड़े जो दावन, तो छूटे नहीं क्योंए कर।
देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर।। ९३ ।।

आशिक रूहें जब धनी का दामन पकड़ लेती हैं तो फिर उनसे वह छूट नहीं सकता। उसकी चुन्नटें देखते-देखते ही उसकी सांसारिक आयु समाप्त हो जाती है।

बोहोत अटकाव है आसिक, कछू सेवा भी किया चाहे।
ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए।। ९४ ।।

यहां देखते ही नजर अटक जाती है, परन्तु सुन्दरसाथ की कुछ सेवा करने की उमंग मेरे अन्दर है, इसलिए थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोड़े ए।
ए लांक पटुका छोड़ के, जाए न सके उर ले।। ९५ ।।

यदि आशिक रूह की नजर कमर में अटक गई तो कमर की लांक और पटका को छोड़कर ऊपर पेट तक भी नजर नहीं जाती।

जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुन्ज।
क्यों छोड़े आसिक इनको, हक दिल इस्क गन्ज।। ९६ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के दिल को देखें तो गंजानगंज इश्क भरा नजर आता है, इसलिए रूहें इनको कैसे छोड़ें?

मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स हक का घर।
इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर।। ९७ ।।

मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपने गंजानगंज इश्क से भरे प्याले (दिल) से रूहों को अपनी नजर से पिलाकर मस्ती देते हैं।

इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर।। ९८ ।।

इश्क की सुराही लेकर श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिलों में बैठे हैं और आशिक मोमिनों को भर-भर प्याले पिला रहे हैं।

Nijanand App

जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए।
सराब तहूरा ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए।। ९९ ।।

मोमिन भी जब मस्ती में आ जाते हैं तो उनको एक प्याला ही काफी होता है। इस इश्क की शराब का नशा ऐसा चढ़ता है कि तुरन्त ही दिल माया से हटकर धनी के चरणों में लग जाता है।

जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए।
वाको अर्स सराब की, आवत है खुसबोए।। १०० ।।

जिन मोमिनों को श्री राजजी महाराज स्वयं ही इश्क की शराब पिलाते हैं, तो उसे और अधिक अखण्ड परमधाम के इश्क की खुशबू मिलने लगती है।

आइ जो कदी खुसबोए, ए जो अर्स की सराब।
इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब।। १०१ ।।

यदि अर्श की रूहों को परमधाम के इश्क की थोड़ी सी मस्ती मिल गई तो उस मस्ती में ही अपने सपने के तन को छोड़ देंगी।

आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर।
सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर।। १०२ ।।

आज दिन तक श्री राजजी महाराज ने इश्क को छिपाकर रखा था। अब श्री राजजी महाराज ने इश्क के प्याले को मोमिनों के लिए खोल दिया है।

एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे।
खोल्या दरवाजा अर्स का, वास्ते अर्स अरवाहों के।। १०३ ।।

कई मोमिनों ने इश्क के प्याले को पी लिया है। कई पी रहे हैं। कई पिएंगे। परमधाम का दरवाजा (हकीकत) अब रूहों के वास्ते (खुल गया) जाहिर हो गया है।

अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए।
जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए।। १०४ ।।

मोमिन जो श्री राजजी महाराज के ऐसे आशिक हैं और अभी ऊपर से ही देखकर ललचा रहे हैं। यदि यह परमधाम में प्रवेश कर जाएं जहां गंजानगंज इश्क भरा है तो फिर उससे कैसे निकल सकते हैं?

हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल।
ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल।। १०५ ।।

श्री राजजी महाराज के हस्तकमल को देखें तो वह अत्यन्त कोमल हैं। जिनको छोड़कर मोमिन जिनके दिल इश्क के भरे हैं, आगे नहीं जा सकते।

नख अंगुरियां निरखते, मुंदरियां अति झलकत।
ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित्त गलित।। १०६ ।।

हाथ की उंगलियां देखें तो सुन्दर मुंदरियां झलकती हैं। इनके रंग और रेखाएं मोमिन, जो आशिक हैं, उनके दिल को दीवाना करती हैं।

Nijanand App

पोहोंची बांहें बाजू बन्ध, दोऊ निरखत नीके कर।
एक नंग और फुन्दन, चुभ रहत हैडे़ अन्दर।।१०७।।

बाहों में पोहोंची, बाजूबन्ध दोनों को देखने से लगता है कि एक ही नग और एक ही किस्म के फुन्दन इनके हैं। जिसकी छवि हृदय में चुभ जाती है।

हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग।
जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोडे़ इनको संग।।१०८।।

मोमिनों के हृदय कमल अत्यन्त कोमल हैं। वह श्री राजजी महाराज के अंग को देखकर इनका साथ कैसे छोड़ सकते हैं, जब यह आशिक कहलाते हैं।

हार कण्ठ गिरवान जो, अति सुन्दर सुखदाए।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए।।१०९।।

गले के हार अत्यन्त सुखदाई हैं। इनमें लाल और मोती के नग लटकते हैं। यह शोभा मोमिनों से नहीं छोड़ी जाती है।

मुख सरूप अति सुन्दर, क्यों कहूं सोभा मुख इन।
एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन।।११०।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा वर्णन करने में नहीं आती। उनके एक अंग को भी देखें तो वहीं वर्णन करना रुक जाता है। नजर उन्हें देखती ही रह जाती है।

छबि सरूप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधूर।
ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधूर।।१११।।

श्री राजजी महाराज के सुन्दर मुख की छवि को छोड़कर होठों के नीचे की गहराई (हरवटी) को भी नहीं देख पाते। ऐसे सुन्दर लाल होठों की लालिमा जो अमृत के समान मधुर (मीठे) हैं, उनका वर्णन कैसे करूं?

ए मुख अधुर लांक छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए।
देत नाम निमूना इत का, सों इन सरूपें क्यों सोभाए।।११२।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द और हरवटी को छोड़कर दांत तक कैसे जाया जाए? यदि यहां का नमूना बताते हैं तो श्री राजजी महाराज की शोभा का वर्णन नहीं होता।

सो दन्त अधुर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल।
सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल।।११३।।

इसलिए दांत और होठों के नीचे की हरवटी को छोड़कर नजर गाल तक भी नहीं जाती। अगर चली भी गई, तो लाल गाल और मुख को छोड़कर नजर आगे नहीं जाती।

मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत।
नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत।।११४।।

श्री राजजी महाराज के मुख और नासिका की शोभा को आशिक रूहें बड़े प्यार से देखती हैं। आंखों के बीच माथे पर तिलक शोभा देता है। आशिक रूहें अपनी नजर यहां से हटा ही नहीं सकतीं। यह उनका जीवन है।

Nijanand App

भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान।
सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन॥ ११५ ॥

भौहें और तिलक की शोभा को देखकर रूहों की नजर कान तक नहीं जाती। यह अत्यन्त कोमल और सुन्दर है, जिन्हें देखकर रूहें बेहद सुख प्राप्त करती हैं।

और भी खूबी कानन की, दिल दरदां देवे भान।
जाको केहे लेऊं पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान॥ ११६ ॥

कान की महिमा दिल के दर्द को दूर करती है। जिस किसी प्रश्न के उत्तर चाहने की इच्छा श्री राजजी महाराज से होती है, उसका उत्तर कान से सुनने पर बेहद सुख होता है। इस सुख के समान और कोई सुख नहीं है।

कहें सुनें बातें करें, ए जो अर्स मेहेरबान।
सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान॥ ११७ ॥

अर्श के मेहरबान श्री राजजी महाराज अपनी रूहों की बातें प्यार से सुनते है, प्यार से ही बातें करते है। ऐसे खिलवत के सुख छोड़कर रूहों से श्री राजजी के नैन जो प्रेमबाण के समान हैं वहां (नैनों) तक नहीं जाया जाता, देखा जाता, अर्थात् नजर से नजर भी नहीं मिलाई जाती।

ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमिन।
ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन॥ ११८ ॥

श्री राजजी महाराज के नैनों के इशारों के बाण रूह मोमिन किसी तरह से नहीं छोड़ सकते। इन नैनों के आनन्द को छोड़कर अगर किसी रूह का चित्त दूसरी जगह जाता है, तो उनको शर्मिन्दा होना पडता है।

नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल।
स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल॥ ११९ ॥

श्री राजजी महाराज के नैन नुकीले और तीखे हैं। उनके बीच के तारे बड़े चंचल हैं। इन नैनों की सुन्दरता सफेदी और लालिमा लिए हुए हैं, जिनका वर्णन स्वप्न की अक्ल से कैसे हो?

नैन रसीले रंग भरे, खैंचत बंके मरोर।
सो आसिक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर॥ १२० ॥

श्री राजजी महाराज के नैन आनन्द और मस्ती से भरे हैं। तिरछी नजर से जिस रूह को देख लेते हैं, वह रूह इन नैनों के बाणों की चोट से अलग नहीं जा सकती।

ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन।
ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन॥ १२१ ॥

श्री राजजी महाराज के रस भरे नैनों को देखो, तो रूह को बेहद सुख मिलता है। ऐसी रूह श्री राजजी महाराज के नैनों की सैन को छोड़कर कैसे अलग हो सकती है?

जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन।
इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतस्करन॥ १२२ ॥

संसार की सारी उम्र ही क्यों न खत्म हो जाए, रूहें श्री राजजी महाराज के नैनों के सुख को कैसे छोड़ सकती हैं? इनकी आत्मदृष्टि नैनों के सुख से तृप्त नहीं होती हैं।

Nijanand App

निलवट सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद।
ए छबि कही न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद।। १२३ ।।

श्री राजजी महाराज का माथा तथा मुखारबिन्द की सुन्दर मीठी शोभा का कैसे वर्णन करूं, जबकि एक अंग की शोभा कहने में नहीं आती। श्री राजजी महाराज तो शोभा के सागर ही हैं।

हंसत सोभित हरवटी, दंत अधुर मुख लाल।
आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल।। १२४ ।।

श्री राजजी महाराज जब हंसते हैं तो उनकी हरवटी, दांत, होंठ और लाल मुखारबिन्द की शोभा बढ़ जाती है। वह रूहों के अन्तःकरण में रस देती है। ऐसी शोभा रूहें कैसे छोड़ सकती हैं?

अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद।
ए छबि अंग अर्स के, पोहोंचत नहीं सब्द।। १२५ ।।

श्री राजजी महाराज का किशोर तन अखण्ड मस्ती से भरा अत्यन्त कोमल है, जिसका वर्णन करने के लिए यहां के शब्द नहीं पहुंचते।

मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान।
हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत केहेत मुख बान।। १२६ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख, नासिका, आंखें, भौंहें, तिलक, माथा कान, हाथ, पांव और हृदय सब बोलते समय मुस्कराते हैं।

जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग।
और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग।। १२७ ।।

मोमिन जो श्री राजजी महाराज के आशिक हैं, वह एक ही अंग में अटककर रह जाते हैं। वह उस अंग को छोड़कर दूसरे अंग तक जा ही नहीं सकते। किसी एक अंग को देखने में ही मग्न हो जाते हैं।

देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख।
पीऊं सराब लेऊं मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख।। १२८ ।।

श्री राजजी महाराज को मुख में पान का बीड़ा चबाते हुए देखकर रूहों को अति सुख होता है। मैं श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब को पीकर मस्त हो जाऊं और उनके मुखारबिन्द पर वारी-बारी जाऊं।

ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए।
मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो चुभाए।। १२९ ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की सुन्दर छवि को छोड़कर आशिक रुहें कैसे आगे जा सकती हैं। श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द रूहों के मन को मोह लेता है। वह शोभा रूहों के चित्त में चुभ जाती है।

नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग।। १३० ।।

आत्मदृष्टि से देखने से श्री राजजी महाराज के माथे पर सारंगी रूप पाग बनी दिखाई देती है। पाग में दुगदुगी (कलंगी) की छवि रूह के हृदय में घर कर जाती है।

Nijanand App

होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम।
एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम।। १३१ ।।

कोई आशिक रूह अपनी चतुराई से इसका वर्णन करे तो उसको शर्मसार होना पड़ता है, क्योंकि आशिक की रूह एक अंग को छोड़कर दूसरे तक नहीं जा सकती।

आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर।
आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और।। १३२ ।।

श्री राजजी महाराज की आशिक वही रूह है जो एक ठिकाने लगी रहे और दूसरे अंग की तरफ देखे ही नहीं।

इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर।
सो झीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर।। १३३ ।।

इन आशिक रूहों की नजर से श्री राजजी महाराज का दिल सागर के समान दिखाई देता है। वह रूहें इस सागर के सुख में गर्क रहती हैं और किसी तरह से निकलती नहीं हैं।

तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन।
लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन।। १३४ ।।

इस संसार की जबान से श्री राजजी महाराज के पूर्ण स्वरूप की शोभा कैसे कही जाए? श्री राजजी महाराज के स्वरूप की लहरें किरणों के समान आकाश तक जाती हैं, जिसे छोड़कर मोमिनों का और कोई ठिकाना नहीं है।

आसिक न लेवे दानाई, पर ए दानाई हक।
इस्क आपे पीवहीं, और पिलावें बेसक।। १३५ ।।

आशिक मोमिन कभी चतुराई नहीं दिखातीं। यह सब चतुराई श्री राजजी महाराज की है जो रूहों का इश्क पीते हैं और अपना इश्क रूहों को पिलाते हैं।

ए चतुराई हक की, और हकै का इलम।
ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम।। १३६ ।।

यह श्री राजजी महाराज और उनके इलम की चतुराई है। इन रूहों को अपने स्वरूप के सुख स्वयं श्री राजजी महाराज देते हैं।

इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए।
याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए।। १३७ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन उनकी चतुराई से ही किया है। अब उन्हीं रूहों को आशिक समझना जो श्री राजजी महाराज से लिपटी रहती हैं।

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम।
जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम।। १३८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के इस सुख को आशिक रूहें बड़े आराम से लेती हैं। जब तक उनको इश्क नहीं आ जाता, तब तक इलम से ही आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम।। १३९ ।।

इलम का सुख और इश्क का सुख दोनों की लज्जत अलग-अलग हैं। श्री राजजी महाराज की यह अपनी मर्जी है जिसको जैसा चाहें सुख दें।

ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए।। १४० ।।

इल्म और इश्क दोनों ही श्री राजजी महाराज को चाहते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज जिनको जो मेहर कर दें (इश्क या इल्म), उसे रूह अपने सिर पर स्वीकार करती है।

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस।। १४१ ।।

श्री महामतिजी रूहों को कहते हैं कि तुम यदि परमधाम की अरवाहें हो तो श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले पर प्याले लेकर गर्क हो जाओ।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || ३४९ ||

श्री ठकुरानी जी को सिनगार पेहेलो

मंगला चरन

बरनन करुं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।। १ ।।

श्री महामतिजी बड़ी रूह श्यामा महारानीजी की साहेबी का वर्णन करती हैं। बारह हजार रूहें इनके नूर के अंग हैं। परमधाम में यह सब एक दिल है। यह सब शोभा इनकी ही है।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।। २ ।।

सर्वप्रथम श्री श्यामा महारानी के चरणों में प्रणाम करती हूं और श्री राजजी से विनती करती हूं कि हे धनी! मुझे श्री श्यामा महारानीजी के चरणों से जुदा नहीं करना। इन चरण कमलों की लाल एड़ियां और लांक ही मेरे जीव के जीवन हैं (मेरे जीने का सहारा यही हैं)।

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों के नख की महिमा को कहूं या उंगलियों की, या ऊपर के टखने के रंग की, या कोमलता की महिमा को किस जबान से कहूं? मेरे तो जीव के यही जीवन हैं।

रंग नरमाई सलूकी, अर्स अंग चरन।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन।। ४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमल जो परमधाम के हैं उनकी नरमाई और सलूकी देख-देखकर बलि बलि जाती हूं। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

Nijanand App

इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम।। १३९ ।।

इलम का सुख और इश्क का सुख दोनों की लज्जत अलग-अलग हैं। श्री राजजी महाराज की यह अपनी मर्जी है जिसको जैसा चाहें सुख दें।

ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए।। १४० ।।

इल्म और इश्क दोनों ही श्री राजजी महाराज को चाहते हैं, परन्तु श्री राजजी महाराज जिनको जो मेहर कर दें (इश्क या इल्म), उसे रूह अपने सिर पर स्वीकार करती है।

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस।। १४१ ।।

श्री महामतिजी रूहों को कहते हैं कि तुम यदि परमधाम की अरवाहें हो तो श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले पर प्याले लेकर गर्क हो जाओ।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ३४९ ।।

श्री ठकुरानी जी को सिनगार पेहेलो

मंगला चरन

बरनन करुं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।। १ ।।

श्री महामतिजी बड़ी रूह श्यामा महारानीजी की साहेबी का वर्णन करती हैं। बारह हजार रूहें इनके नूर के अंग हैं। परमधाम में यह सब एक दिल है। यह सब शोभा इनकी ही है।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।। २ ।।

सर्वप्रथम श्री श्यामा महारानी के चरणों में प्रणाम करती हूं और श्री राजजी से विनती करती हूं कि हे धनी! मुझे श्री श्यामा महारानीजी के चरणों से जुदा नहीं करना। इन चरण कमलों की लाल एड़ियां और लांक ही मेरे जीव के जीवन हैं (मेरे जीने का सहारा यही हैं)।

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानीजी के चरणों के नख की महिमा को कहूं या उंगलियों की, या ऊपर के टखने के रंग की, या कोमलता की महिमा को किस जबान से कहूं? मेरे तो जीव के यही जीवन हैं।

रंग नरमाई सलूकी, अर्स अंग चरन।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन।। ४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमल जो परमधाम के हैं उनकी नरमाई और सलूकी देख-देखकर बलि बलि जाती हूं। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

Nijanand App

इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन।
पल न वालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन।।५।।

श्री श्यामा महारानी के चरणों में ही मैं पड़ी रहूं। हे मेरे धनी! मेरी रूह की नजर खोल दो जिससे अपने नैनों से बिना पल्क झपकाए इन्हें देखती रहूं। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

चारों जोड़े चरन के, और अनवट बिछिया रोसन।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन।।६।।

श्री श्यामा महारानी के चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घूंघरी, कांबी और कड़ला तथा चरणों के पंजे में अनवट और बिछुआ का तेज और सुन्दर सुरीली आवाज यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन।।७।।

हे मेरे प्राणों से भी प्यारे श्यामा महारानी! अब मुझे एक पल के लिए भी छोड़ना नहीं। अब मुझे प्यारे मेहबूब श्री राजजी महाराज की मेहर से आपके चरण कमल की पहचान हो गई है। यही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन।
पकड़ राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन।।८।।

आपके चरण कमलों को अपनी आंखों की पुतलियों के तारों में बसा लूं और पलक ढांपकर उनको पकड़ लूं, क्योंकि यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तस्करन।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन।।९।।

यह चरण कमल मेरी आत्मा को बहुत ही (मीठे) प्यारे लगते हैं और मेरी रूह की नजर से हृदय में चुभ गए हैं। मेरी रूह की नजर को यह मीठे (प्यारे) लगते हैं। अब यही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन।
ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन।।१०।।

यह चरण कमल परमधाम के हैं। इनमें से वतन की खुशबू आती है (पहचान होती है)। यह चरण कमल अखण्ड परमधाम के श्यामा महारानीजी के हैं। यह मेरे जीव के जीवन हैं।

ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन।।११।।

इन चरण कमलों को अपने नैनों में बसा लूं। एक क्षण के लिए भी न छोडूं। इन चरणों की कृपा से मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं और मेरा घर परमधाम है, की पहचान हुई है। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन।।१२।।

श्री राजजी महाराज की मेहर ने इन चरण कमलों को मेरी रूह के अन्दर बिठाया जिससे अक्षर के पार परमधाम के दरवाजे खुल गए (पहचान हुई), मैं अखण्ड घर में पहुंच सकी। अब यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

Nijanand App

सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन।
सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन।। १३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमल ही मेरा सिनगार हैं, मेरी शोभा हैं, मेरे अंग को सुख देने वाले हैं, मेरे गले के हार हैं और खूबियां इन चरण कमलों से हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन।। १४ ।।

यह श्री राजजी महाराज की बेशुमार मेहर ही है कि मेरी निसबत में परमधाम के यह चरण कमल थे। जिनकी कृपा से मुझे अखण्ड परमधाम के श्री राजश्यामाजी मिल गए। अब यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।। १५ ।।

इन चरणों ने मेरे चित्त को खींच लिया और सब तरह से मुझे धन्य धन्य किया है। ऐसे चरण कमलों की सिफत इन जुबान से कैसे कहूं? यह मेरे जीव के जीवन है।

ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन।। १६ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आप जैसा चाहो वैसा करो। इन चरणों के सुखों को किसी और दूसरे को नहीं दिया जा सकता। दूसरे को देने की बात ही तब करूं जब कोई दूसरा हो। यह चरण ही मेरे जीव का जीवन हैं।

क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन।। १७ ।।

हे श्री राजजी महाराज! श्री श्यामा महारानीजी के चरणों की महिमा कैसे कहूं? यहां बोलने का और कोई ठिकाना नहीं है। यह चरण कमल ही आपके और श्यामा महारानी के स्वरूप को मिला देते हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन।। १८ ।।

जिन पर यह चरण कमल पूरी मेहर करते हैं उन्हें पूर्ण स्वरूप के साक्षात् दर्शन होते हैं। तब पूरा इश्क आ जाता है, इसलिए मेरे जीव के यह ही जीवन हैं।

ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन।। १९ ।।

यह चरण कमल मूल निसबत से ही दिल में आते हैं। यह रूहों की परमधाम की न्यामत है जिसे धनी की मेहर ने दिया है, इसलिए इसे अब छोड़ नहीं सकते। मेरे जीव के यही जीवन हैं।

धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन।
आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन।। २० ।।

श्री राजजी महाराज यदि सब तरह की पहचान दें तो मैं अपने नैनों से रात-दिन, आठों पहर, चौसठ घड़ी इन चरण कमलों को ही देखती रहूं, क्योंकि मेरे जीव के यह ही जीवन हैं।

Nijanand App

महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन।
आए बैठे मेरे सब अंगों, मेरे जीव के एही जीवन॥ २१ ॥

श्री महामतिजी मन, वचन, और कर्म से इन चरण कमलों को चाहती हैं क्योंकि अब यह चरण कमल मेरे हृदय में विराजमान हो गए हैं। यह ही मेरे जीव के जीवन हैं।

॥ मंगला चरन सम्पूर्ण ॥

ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन॥ २२ ॥

श्री श्यामाजी महारानी का स्वरूप यहां के पांच तत्व का नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के मन के स्वरूप हैं। इनका खाना, पीना, सुख सिनगार, सभी इच्छा करते ही पूरी हो जाती हैं।

जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान।
कहूं दुनियां में किन बिध, किन कबहूं न सुनिया कान॥ २३ ॥

श्री श्यामाजी महारानी का परमधाम में सिनगार बड़ा अद्‌भुत है। दुनियां में बैठकर उसका कैसे वर्णन करूं? जिसे आज दिन तक किसी ने भी कानों से सुना तक नहीं था।

कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन।
ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन॥ २४ ॥

श्यामाजी गले में, कान में, मुखारबिन्द पर, नासिका में जो-जो आभूषण धारण करती हैं, ऐसा न समझना कि जैसे दुनियां पहनती है वैसे ही श्यामाजी पहनती हैं।

या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे॥ २५ ॥

वस्त्र हों या आभूषण, पूरे अंग के हों या हाथ-पैर के, जैसे मन में इच्छा होती है वैसे ही तन में दिखाई देते हैं।

अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक असल।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल॥ २६ ॥

अंग के आभूषण दिल की इच्छानुसार बदलते हैं। इसी तरह से परमधाम में उनके स्वरूप का सिनगार इच्छानुसार बदल जाता है। परमधाम में नकल नहीं, अंगों की शोभा है।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने॥ २७ ॥

जैसे अंग वैसे ही उन पर वस्त्र, आभूषण बने ही रहते हैं। जिस क्षण में दिल में जैसी चाहना होती है, वैसा वह पहले से ही पहना हुआ दिखाई देता है।

जाको नामै कायम, अखंड बका अपार।
सोई भूल जानी अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार॥ २८ ॥

परमधाम जो अखण्ड है और जहां हर वस्तु बेशुमार हैं, वहां की शोभा शुमार में लाकर वर्णन करना ही अपनी भूल है।

Nijanand App

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान।
नहीं जुदागी इन में, जुगल किसोर परवान।। २९ ।।

पहले श्री राजजी महाराज की शोभा का वर्णन किया। ऐसी ही शोभा श्री श्यामाजी महारानी की समझो। इन दोनों स्वरूपों में जरा भी अलगाव नहीं है।

हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर।। ३० ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से हैं। इनको कोई अलग अंग नहीं समझना। श्री श्यामाजी महारानी के ही नूर के स्वरूप सब रूहें वाहेदत में हैं। इनके अतिरिक्त परमधाम में और कोई नहीं है।

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर।
अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर।। ३१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की शोभा अति सुन्दर है। आत्मदृष्टि से देखिए तो श्रीराज श्रीश्यामाजी दोनों एक ही युगल-स्वरूप हैं।

लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस।
क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस।। ३२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की साड़ी का रंग लाल है। जिसमें कई तरह के कटाव हैं। कई तरह के छापे, बेलियां और नक्शकारी हैं। साड़ी के पल्लू की किनारी बहुत ही सुन्दर दिखाई देती है।

माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगूंहीं बने असल।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल।। ३३ ।।

इसके अन्दर जरी तथा कई रंग के जवेर जहां जैसे चाहिए उसी अनुसार पहले से बने दिखाई देते हैं।

बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित।
कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत।। ३४ ।।

पल्ले के किनारे पर बनी बेलें, कटाव, फूल, नक्शकारी तथा अलग-अलग युक्ति के जड़ाव बहुत सुन्दर शोभा देते हैं।

ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर।
ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर।। ३५ ।।

इन वस्त्रों को किसी ने बुना नहीं है। इसी तरह से आभूषणों को किसी ने घड़ा या बनाया नहीं है। यह शुरू से ही उनके अंग की ही शोभा है।

चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक।
जड़तर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं विवेक।। ३६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चोली (ब्लाउज) का रंग काला है। जिसमें सोने के साथ अनेक जवेर जड़े हैं। उनके गले में, हृदय पर, और बांहों पर चोली में सुन्दर जड़ाव दिखाई देता है। उसका वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल।
कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल।। ३७ ।।

ब्लाउज में जहां पर बेलें होनी चाहिए वहां पर बेलें बनी हैं और इसी तरह से कांगरी, फूल, नक्शकारी, खजूरे, बूटियां सब शोभायमान हैं।

नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर।
नकस कटाव बेली तो कहूं, जो किन बनाए होंए हाथों कर।। ३८ ।।

सोने और नगों का वर्णन तो तब करूं जब किसी ने यह जड़े हों या बनाए हों। इसी तरह से ब्लाउज में नक्शकारी और बेलियों का वर्णन तब करूं जब वह किसी ने हाथ से बनाए हों।

चरनी नीली अतलस, माहें अनेक बिध के रंग।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग।। ३९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का पेटीकोट (लहंगा, चरनियां) रेशमी है और नीले रंग का है, जिसमें अनेक तरह के रंग शोभा देते हैं। इसकी चुन्नटों पर बेलें बनी हैं और बीच में जरी, बेल, फूल और नगों की शोभा है।

क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग।
हीरे लसनिए पांने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग।। ४० ।।

पेटीकोट के किनारे पर कांगरी बनी है, जिसमें सात नग माणिक, मोती, हीरा, लसनियां, पन्ना, पुखराज और पाच सोने में जड़े जगमगाते हैं।

वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस।
वस्तर भरयो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस।। ४१ ।।

पेटीकोट के कपड़े में धागा दिखाई नहीं देता। सब तरफ एक सी जरी और कशीदे से भरा है। इस कपड़े को किसी ने न बुना है और न किसी ने कशीदा किया है। यह सब इनके अंग की ही शोभा है।

नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल।
ए केहेती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल।। ४२ ।।

पेटीकोट के नाड़े में नौ तरह के रंगों की बनावट है जो सोने की तरह उज्जवल है। यह अपने पवित्र दिल से समझना। यह परमधाम की शोभा है।

क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार।। ४३ ।।

वस्त्र हों या आभूषण, सभी सुखदाई हैं। इन सबमें खुशबू है, चमक और कोमलता है। ऐसा परमधाम का सिनगार है।

सिर पर सोहे राखड़ी, जोत साड़ी में करे अपार।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार।। ४४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के मस्तक पर राखड़ी (मस्तक का आभूषण) शोभा देती है। इसके बीच माणिक नग हैं जिसे घेरकर मोती आए हैं। दोनों किनारों के ऊपर पन्ना और पुखराज के नग शोभा देते हैं।

Nijanand App

ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल।
आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल।। ४५ ।।

राखड़ी के बीच जो माणिक हैं। उसकी उपमा कैसे दूं? जिसके तेज से आसमान और जमीन सब लाल दिखाई देते हैं।

कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार।
बेन गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार।। ४६ ।।

यह राखड़ी का लाल माणिक सोने में जड़ा है और आकाश तक जगमगा रहा है। इसके नीचे चोटी गूंथी है जिसमें तीन फुम्मक लटकते हैं। उनमें घूंघरी जड़ी है जो आवाज करती है।

तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर।
बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर।। ४७ ।।

चोटी में तीन रंग की जरी और फुन्दनों में नगों का जड़ाव शोभा देता है। नग बारीक नीले रंग के नक्शकारी में जड़े हैं, जिसका वर्णन असम्भव है।

पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव।
हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव।। ४८ ।।

मांग के ऊपर पान के पत्ते जैसी शोभा आई है। जिसमें कई तरह की बेल, कांगरी, कटाव, हीरे, खजूरे, बूटियां शोभा देती हैं, लगता है यह बड़ी जुगत से जड़ाव में जड़े हैं।

सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग।। ४९ ।।

सिर पर पटली (बाल बांधने की पट्टी) की लरें मोतियों से बनी शोभा देती हैं। इनमें पांच तरह के रंग झलकते हैं। यह नीले, पीले, लाल, सफेद और मोती के हैं। मोतियों की लरें मांग के ऊपर से शोभा देती हैं।

तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी।
निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी।। ५० ।।

इन्हीं नगों के फूल बने हैं जो सिर के ऊपर पटली की कांगरी में शोभा देते हैं। माथे (मस्तक) से लेकर राखड़ी तक बीच में मांग भरी है।

अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें।
ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें।। ५१ ।।

यह बड़ी अद्‌भुत शोभा है जो देखने योग्य है। कहनी में नहीं आती। कहें तो तब, जब ऐसी शोभा कहीं और दिखती हो?

बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत।
देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत।। ५२ ।।

श्री श्यामाजी के बालों की चोटी एक अलग ही तरीके से गूंथी है यह उनकी गोरी पीठ पर बलखाती लटकती है। उसके फुंदड़े में घुंघरियों की आवाज आती है तथा साड़ी के अन्दर सुन्दर शोभा दिखाई देती है।

Nijanand App

चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर।
झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर।।५३ ।।

चोली के चारों बंध पीठ पर शोभा देते हैं जिनकी कांगरी और फुम्मक साड़ी के अन्दर से झलकते दिखाई देते हैं।

ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक।
ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक।।५४ ।।

इनकी शोभा का कैसे बयान करूं? पीठ गोरे रंग की है और बीच में सुन्दर गहराई है। इसका वर्णन करते हुए यह कठोर जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत।
ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत।।५५ ।।

मुखारबिन्द की शोभा तथा माथे की शोभा कैसे बयान करूं? यह शोभा परमधाम के मूल स्वरूप की है और जबान यहां संसार की है।

पाच हीरे मोती मानिक, बेना चौक टीका सोभित।
सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अतंत।।५६ ।।

पाच, हीरा, मोती, माणिक के नगों से जड़ा हुआ सुन्दर बेंदा माथे पर टीका के समान शोभा देता है। इसकी मोतियों की लर लाल मांग के नीचे सुन्दर जगमगाती है।

जड़ित पानड़ी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत।।५७ ।।

कानों में सुन्दर टाप्स हैं। इसके नीचे दो लरें लाल और मोती की लटकती हैं। उसके जड़ाव की जोत में पांच तरह के नग झलकते हैं।

काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन।।५८ ।।

आंखों में काजल की रेखा का बयान तो तब करें, जब यह नैना सपने के तन के हों, श्री श्यामाजी महारानी के नैनों में सफेद, काला और लाल रंग सदा सुख देने वाले दिखाई देते हैं।

ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह।
ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह।।५९ ।।

श्री श्यामाजी का तन, नेत्र परमधाम के हैं। कोई और नहीं है। आत्मदृष्टि से देखने पर इनके अन्दर प्रेम ही प्रेम भरा दिखाई देता है।

नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए।
आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए।।६० ।।

श्री श्यामाजी के नैन नुकीले और तिरछे हैं। जिनकी छवि वर्णन करने में नहीं आती। वह अपने माशूक श्री राजजी महाराज को तिरछी चितवन से देखती हैं।

Nijanand App

सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान।। ६१ ।।

उनके सब अंगों में अपने धनी से बात करने के लिए उमंग भरी है। माशूक श्री राजजी महाराज के इश्क से भरे गंजानगंज दिल को देखकर प्रेम भरे वचनों से उन्हें अपनी ओर खींचती हैं।

कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए।। ६२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के नैनों के तारों की शोभा कैसे कहूं? उनकी आंखों की सफेदी पर लालिमा शोभा देती है और कोनों के ऊपर काजल की रेखाएं अंग में असल बनावट की जैसी दिखाई देती हैं।

तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस।
पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस।। ६३ ।।

इनके नैनों की जो पुतलियां हैं उनमें इश्क की मस्ती भरी है। वह अपनी प्यार भरी नजर से प्रीतम को निहारती हैं और आमने-सामने श्री राजजी महाराज से नजर मिलाकर सुख लेती हैं।

चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन।
जो धनी देवें पट खोल के, तो तब हीं उड़े एह तन।। ६४ ।।

नैनों की चंचलता और चतुराई की छबि की शोभा कैसे कहूं? श्री राजजी महाराज ही यदि यह माया का परदा हटा दें तो यह संसारी तन उसी समय छूट जाए।

बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग।
अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग।। ६५ ।।

आंखों के ऊपर की भौंहें तिरछी हैं जो गोरे अंग पर शोभा देती हैं। उनके अंग-अंग के आभूषणों की किरणें आपस में जंग करती हैं।

दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल।
सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांईं उठत माहें गाल।। ६६ ।।

झालों में सात किस्म के नगों के रंग तथा दोनों तरफ के जड़ाव शोभा देते हैं। उसकी झाई गालों पर सुन्दर शोभा देती है।

फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग।
तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग।। ६७ ।।

झालों के फूल के नग मुख पर शोभा देते हैं। उनके नगों के जोत की बहुत सी तरंगें उठती हैं।

ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने झाल ऊपर।। ६८ ।।

ऊपर साड़ी की किनारी शोभा देती है, जिसमें लाल, नीली, पीली, जरी की शोभा है। श्री श्यामाजी महारानी की मांग के ऊपर तथा झालों के ऊपर साड़ी की शोभा बनी है।

Nijanand App

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार।। ६९ ।।

साड़ी की किनारी में जो कांगरी बनी है उसमें नगों की सुन्दर शोभा है। गोरे माथे तथा काले बालों की शोभा आकाश में जगमगाती है।

सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल।। ७० ।।

सपने के तन की बुद्धि के अनुसार ही मैं इस शोभा को कहती हूं, क्योंकि यहां के शब्द अखण्ड परमधाम के स्वरूप को नहीं पहुंचते।

गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अर्स मोमिन।। ७१ ।।

गालों का रंग गोरा है। इनके रंग परमधाम की रूहें ही जानती हैं, क्योंकि वही इस स्वरूप के दर्शन करती हैं। वह परमधाम की रहने वाली हैं।

मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत।। ७२ ।।

मुखारबिन्द, नैन, नाक की बेशुमार शोभा है। नाक के अगले भाग में बेसर में मोती का नग लटक रहा है।

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए।
क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए।। ७३ ।।

एक खसखस के दाने के समान नग की रोशनी आकाश में छा जाती है तो फिर नाक के आभूषण मुरली के नग की शोभा यहां की जबान से वर्णन कैसे हो?

हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद।। ७४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी अखण्ड परमधाम के मालिक श्री राजजी महाराज के अंग के नूर से हैं। जिनकी सौंदर्य शोभा मंद बुद्धि से कैसे कही जाए?

दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल।। ७५ ।।

श्री श्यामाजी के लाल होठों में मुख के अन्दर दांत शोभा देते हैं, जिनकी लालिमा का वर्णन कैसे हो? कौनसी उपमा दूं? जब कुछ पहचान हो जाए तो आत्मा अनुभव कर सकती है।

सुन्दर सरूप स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार।। ७६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के अखण्ड स्वरूप के सिनगार की सुन्दरता रूहें देखना चाहती हैं। उनके हृदय पर लटकते हुए हारों को भी देखना चाहती हैं।

Nijanand App

एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत।।७७ ।।

एक हार मोती का है, दूसरा माणिक का, तीसरा लसनियां का सुन्दर शोभा देता है।

चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी।
इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली।।७८ ।।

चौथा हार हीरों का है। पांचवां नीलवी के नग का सुन्दर हार है। इन पांचों हारों के बीच दुगदुगी की शोभा बहुत सुन्दर दिखाई देती है।

क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सैन्या चढ़ाए।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए।।७९ ।।

दुगदुगी के पांचों नगों की शोभा कैसे कहूं? इनकी तरंगें टकराती हैं और आकाश में समाती नहीं हैं।

पांचों ऊपर हार हेंम का, मुख मोती सिरे नीलवी।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली।।८० ।।

पांचों हारों के ऊपर सोने के हार के बीच मोती और किनारे पर नीलवी के नग आए हैं। उसके ऊपर जड़ाव चम्पकली का हार है।

पाच पांने पुखराज, जरी मांहें जड़ित।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत।।८१ ।।

पाच, पन्ना, पुखराज, जरी चंपकली के हार में जड़े शोभा देते हैं। यह छाती के ऊपर लटकता है।

ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी।।८२ ।।

चोली के ऊपर गले में कांगरी के समान बेल बनी है। इसके ऊपर चंपकली के हार के मोती, माणिक, पन्ना के नगों के जड़ाव शोभा देते हैं।

पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए।
रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए।।८३ ।।

पांच लड़ी का चीर का हार कंठ में लगा शोभा देता है। इसके नग, रंग और धातु सब परमधाम के हैं। जिसकी सिफत यहां की जबान से कैसे हो?

सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग।।८४ ।।

सातों हारों के सात फुम्मक सात रंगों के पीठ पर चोटी के नीचे जगमग करते हैं।

बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत।
हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत।।८५ ।।

दोनों बाजुओं में बाजूबन्ध पहने हैं। जिनमें हीरा, लसनियां, नीलवी तथा जरी में लटकते फुम्मक देखकर रूह अटक जाती है और देखती ही रह जाती है।

Nijanand App

नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार।
चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार।। ८६ ।।

परमधाम की धातु की नौ रंगों के रत्नों के नगों का चूड़ा पहने हैं जिसकी शोभा अति अधिक है। चूड़े की जोत आकाश के अन्दर झलकती है।

नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत।
जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत।। ८७ ।।

चूड़े के अन्दर नौ रंगों के रत्नों की अलग-अलग चूड़ियां झलकती हैं। जिनकी किरणें आपस में टकराती हैं। ऐसे परमधाम की शोभा का यहां कैसे वर्णन करें?

अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत।। ८८ ।।

वहां की धातु में बेशुमार चमक है और उसी में रंगों की चमक बेशुमार है। वस्त्रों में रेशम की तरंगें भी बेशुमार हैं और कोमल हैं।

कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार।। ८९ ।।

हाथ की कंकनी (कंगन) सोने के जड़ाव की हैं जो झनझन की आवाज करती हैं। उसमें बेल, फूल, नक्शकारी जड़ी है और किनारे पर चूड़ा शोभा देता है।

निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग।
अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग।। ९० ।।

पोहोंची और नवघरी शोभा देती है जिनमें पांच-पांच तरह के नग दोनों में जड़े हैं। आपस में इनकी किरणें टकराती हैं। इनका जड़ाव भी परमधाम की रसायन में समझना।

हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल।। ९१ ।।

हाथ की रेखाओं को कैसे कहूं? वह बहुत ही साफ और कोमल हैं। पूरे पोहोंचे का (पंजे का) रंग कैसे बताऊं? यहां की जबान से बयान करने में नहीं आता।

पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस।
अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस।। ९२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के हाथ की पांचों उंगलियां पतली तथा अलग-अलग तरह की हैं। परमधाम के अंगों का कैसे वर्णन करूं? यह अति उज्ज्वल और लालिमा लिए हुए हैं।

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी।। ९३ ।।

उनमें आठ रंग के नगों की मुंदरियां पहन रखी हैं। एक कंचन और एक आरसी यह दो अंगूठों में पहनने से दस हो गई हैं यह दस उंगलियो की शोभा है।

Nijanand App

मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज।। ९४ ।।

माणिक, मोती, लसनियां, पाच, पन्ना, पुखराज, गोमादिक और नीलवी आठ नगों की आठ मुंदरियां उंगलियों में शोभा देती हैं।

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार।। ९५ ।।

अंगूठे में एक हीरे की आरसी वाली मुंदरी है, जिसमें श्री श्यामा महारानीजी अपना सिनगार देखती हैं। उसका तेज आकाश में झलकता है।

नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए।
एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए।। ९६ ।।

हाथ के नखों का नमूना यदि हीरे से देती हूं तो भी देने योग्य नहीं है, क्योंकि नाखून के जर्रे का तेज करोड़ों सूर्य को ढांप देता है।

अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन।
बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन।। ९७ ।।

परमधाम की सखियों के जो जीवन हैं उन चरण कमलों की हकीकत कहती हूं। परमधाम की रूहें हमेशा इन चरणों तले रहती हैं।

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए।
मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए।। ९८ ।।

चरणों के नीचे का भाग अति कोमल है, जिसका रंग लाल है। दोनों चरणों के नीचे गहराई (लांक) है और कई तरह की बारीक रेखाएं हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर।
जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रेहेत हैड़े अन्दर।। ९९ ।।

चरण कमलों की बनावट अति लुभावनी है। अर्श की रूहों के हृदय में यह चुभ जाते हैं।

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित।
टांकन घूंटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत।। १०० ।।

इनका कोई दूसरा नमूना नहीं है। पांव के पंजे बड़े शोभा देते हैं जिनमें टखने, घूंटी, कड़ा पहनने की जगह है। एड़ियां तथा पांव के तले वाला भाग सुन्दर झलकता है।

ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत।
ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत।। १०१ ।।

ऐसी सुन्दरता की छवि को देखकर इन चरणों के तले बसने वाली रूहें ही परमधाम के सुखों को जानती हैं जिनकी इन चरणों से निसबत है।

चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी।
कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी।। १०२ ।।

चरणों में झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला अलग से नगों से जड़े हुए शोभा देते हैं।

Nijanand App

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरीं।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी।। १०३ ।।

इनमें नीले, पीले नगों की झांझरी है जिसमें मोती, माणिक, पन्ना के नग जड़े हैं। घुंघरी का नग लाल है जिसके कुण्डे सोने के हैं।

गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग।
घूंघरी नाकों बीच पीपर, फुमक करत जवेरों जंग।। १०४ ।।

इन घुंघरियों को रसायन से सुन्दर गांठों में बांधा है। अर्श के पांचों नगों की इनमें शोभा है तथा घुंघरी के कुण्डों के बीच में पीपल के पत्ते जैसी शोभा है जिनके फुम्मक जवेरों की किरणों जैसे जगमगाते हैं।

हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत।
नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत।। १०५ ।।

चरण कमलों में कड़े सोने के हैं जिनमें हीरा और लसनियां के नग जड़े हैं। कांबी में कुन्दन से नीलवी के नग जड़े शोभा देते हैं, लगता है इसकी जोत सबसे अच्छी है।

बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार।। १०६ ।।

जब श्री श्यामाजी महारानी चलती हैं तो इन आभूषणों से सुन्दर मधुर ध्वनि निकलती है और कड़े की रनकार की आवाज होती है। इन आभूषणों में खुशबू है, चमक है और कोमलता है तथा बेशुमार रोशनी है।

अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार।। १०७ ।।

उंगलियों में बिछुए पहने हैं और अंगूठे में अनवट जिनमें पन्ना, मणिक, मोती जड़े हैं। श्यामा महारानी ठुमक-ठुमक कर चलती हैं तो सुन्दर आवाज करते हैं।

नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार।। १०८ ।।

अंगूठे व उंगलियों के नखों की जोत आकाश में नहीं समाती। इनके तेज के सामने करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं और इनकी रोशनी शीतल और सुखदाई होती है।

एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर।
जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर।। १०९ ।।

एक नख की रोशनी में जब करोड़ों सूर्य ढक जाते हैं, तो कोटि-कोटि कहूं तो भी एक नख के नूर के सामने कुछ नहीं होते।

कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब।
हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब।। ११० ।।

श्री श्यामाजी महारानी की ऐसी बेशुमार छवि की शोभा है कि जिससे उनके पेट, पसलियां, छाती तथा सारे अंग, हाथ, पांव, कण्ठ और मुखारबिन्द शोभायमान हैं, जिनका कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे।। १११ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की कोहनी, कलाई, उंगली, पेट, पसलियां, छाती, बाजू, हाथ, पांव, पीठ और मुखारबिन्द की छवि सब श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की शोभा है।

में सोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का।
सो क्यों पोहोंचे इन सांई को, जो बीच अर्स बका।। ११२ ।।

संसार की जबान से और यहां की चीजों से इनकी शोभा का वर्णन कैसे करें जो अखण्ड परमधाम के मालिक हैं।

बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल।
सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल।। ११३ ।।

जब मुख में लाल पान बीड़ा चबाती हैं तो उनके मुखारबिन्द की शोभा के समान कोई और दिखता ही नहीं है जिससे उपमा दी जाए।

सुच्छम वय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर।
बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर।। ११४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की किशोर अवस्था और युवा अवस्था की मस्ती से भरे अंगों की शोभा अखण्ड है। जो कभी नहीं बदलती। वह सदा प्रेम और स्नेह से भरपूर है।

नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़ जाए।
जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए।। ११५ ।।

इन स्वरूप का नाम ही लेने मात्र से स्वप्न का तन उड़ जाता है। जब तक रूह को इश्क नहीं मिला है तभी तक शोभा का वर्णन कर रही हूं।

कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊं।
ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊं।। ११६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के ऐसे सुन्दर मुखारबिन्द को देखकर करोड़ों बार बलिहारी जाऊं। यह सुख अपने परमधाम की रूहों को मिले, तो उन्हें बताऊं।

मुख छबि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार।
देख अगूंठे आरसी, भूखन करत झलकार।। ११७ ।।

मुखारबिन्द की सुन्दरता और सिनगार सब सुन्दर शोभा देते हैं। जब यह अंगूठे की आरसी में देखती हैं तो सभी आभूषण जगमगाते हैं।

भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान।
हाथ पांउं उर कण्ठ हंसें, सब नाचत मिलन सुभान।। ११८ ।।

आंखों के ऊपर भौहें, नैन, मुख, नासिका, हरवटी, होंठ, गाल, कान, हाथ, हृदय और गला सभी श्री राजजी महाराज से मिलने के लिए हंसते और नाचते हैं।

Nijanand App

तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक।
कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक।। ११९ ।।

श्री श्यामा महारानी के मुखारबिन्द की शोभा, तेज, सुन्दरता का थोड़े से थोड़ा (कम से कम) वर्णन भी असम्भव है।

श्रवन कण्ठ हाथ पांउं के, भूखन सोभित अपार।
एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार।। १२० ।।

कान, गला, हाथ, पांव के आभूषण बेशुमार शोभा देते हैं। एक ही आभूषण में कई तरह की नक्शकारी और रंग हैं। जिनका रूह दिल में विचारकर वर्णन कैसे करे?

नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए।
ए सोभा न आवे सब्द में, नेक कह्या वास्ते रूहों के।। १२१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने सिनगार के एक थोड़े से अंश का ही यहां की जबान से रूहों के वास्ते बयान किया है। वरना परमधाम के सुख और शोभा यहां के शब्दों में किसी तरह कहे नहीं जा सकते।

मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम।
पिउ सों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम।। १२२ ।।

श्यामाजी महारानी मधुर जबान से सुन्दर मीठे वचन प्रेम से बोलती हैं। वह प्रीतम से मर्यादा में हंसकर बातें करती हैं।

सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत।
कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत।। १२३ ।।

उनके इशारों से अंग में चैन और करार आता है। इनका हृदय अति कोमल है, कोमलता की सिफत कैसे करूं?

चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत।
अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत।। १२४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चतुर चाल का बयान कैसे करूं? जब उनसे बोलेंचालें तो पहचान होती है। वह श्री राजजी महाराज के नूरी अंग की किरण हैं और इसलिए इनके इश्क की खूबियां बेशुमार हैं।

मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें।
सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें।। १२५ ।।

मुखारबिन्द में सुन्दर मीठी जबान है। जिसकी मीठी बोली हृदय में चुभ जाती है। उस सुख को अर्श की रूहें ही जान सकती हैं। कहा नहीं जा सकता।

क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउं भरत।
नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत।। १२६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की चटक-मटककर चलने की चाल का कैसे वर्णन करूं? इनका नमूना कोई नहीं है।

Nijanand App

बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार।
गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार।। १२७ ।।

इनकी चाल पर आभूषण अधिक तेज झलकते हैं जिसे देखकर मैं बलिहारी जाती हूं। इनके चारों तरफ रूहें सिनगार सजाकर बैठी हैं।

सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन।
जोत न माए आकास में, यों घेर चली रोसन।। १२८ ।।

इन रूहों के वस्त्र-आभूषणों की बहुत बड़ी शोभा है। जिनकी किरणें आकाश में नहीं समातीं। चारों तरफ फैली हैं।

अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान।
किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान।। १२९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तीसरी भोम के आसमानी रंग के मन्दिर से दिलचाहा सिनगार करके रूहों का मिलावा लेकर धनी से मिलने चलीं तो आगे से श्री राजजी महाराज ने आकर उनका स्वागत किया।

ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख।। १३० ।।

श्री राजजी महाराज और श्यामाजी महारानी तथा सब रूहों के सिनगार के सुख का चौथा दधि सागर है जो अति सुखदाई है। यदि तुम्हें श्री राजजी महाराज बल दें तो इश्क के प्याले पीकर उनके दर्शन करो।

जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत।। १३१ ।।

युगल स्वरूप जो रूहों को बड़े प्यार से सुख देते हैं, उसको कैसे कहूं? श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की नहरों से यह सुख बार-बार तुमको देते हैं।

ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत।। १३२ ।।

यह मेरे वचन सब सपने के हैं और स्वप्न के शब्दों में ही मैंने महिमा गाई है। सपने का अखण्ड से कैसा सम्बन्ध? इसलिए मेरे इन वचनों से युगल किशोर की शोभा को कैसे कहा जाए?

सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बांएं नजर।। १३३ ।।

यहां के शब्द श्री राजजी महाराज को नहीं पहुंचते फिर भी चुप कैसे रहें? मेरे दिल, कान और जबान श्री राजजी महाराज के बाएं अंग विराजमान श्यामा महारानी जी की ओर ले चलते हैं।

एते दिन ढ़ांपे रहे, किन कही न हकीकत।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत।। १३४ ।।

इतने दिन तक किसी ने भी इस हकीकत का बयान नहीं किया। यदि मैं अब भी दुनियां में हक की सूरत जाहिर न करती तो फिर हक की सूरत कभी जाहिर न होती।

Nijanand App

ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत।
सो द्वार खोले मैं हुकमें, अर्स बका हक मारफत।। १३५ ।।

यह श्री राजजी महाराज की खिलवत की छिपी बातों के भेद क्यों कहें? यह मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही अखण्ड घर परमधाम की, श्री राजजी महाराज की तथा मारफत के ज्ञान की पहचान कराई है।

दुनियां से ढ़ांपे रहे, अर्स बका एते दिन।
रेहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन।। १३६ ।।

अब तक दुनियां में अखण्ड परमधाम की हकीकत छिपी हुई थी। यदि मेरी आत्मा अब भी जाहिर न करती तो यह ढकी ही रह जाती।

ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन।
इनसे हैयाती पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन।। १३७ ।।

परमधाम के इस छिपे रहस्य को खोलने में मेरी रूह और रूहों को बड़ा सुख मिलता है। इससे चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड तथा त्रिगुण को भी अखण्ड मुक्ति मिलती है।

कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन।
हकें आखिर अपने कौल पर, किए जाहेर आगूं रूहन।। १३८ ।।

जब तक कयामत का समय नहीं आ गया तब तक यह ज्ञान छिपा रहा। आखिर श्री राजजी महाराज ने अपने किए कौल (वायदे) के अनुसार अपनी रूहों के आगे आकर जाहिर किया।

ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप।
दई साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अर्स सरूप।। १३९ ।।

यह मैंने परमधाम के युगल स्वरूप श्री राजजी श्यामा महारानी का वर्णन किया है, जिसकी गवाही रसूल साहब ने कुरान में और श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने दी है।

एही लैलत-कदरकी फजर, ऊग्या बका दिन रोसन।
हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन।। १४० ।।

लैल तुल कदर की रात्रि के बाद फजर का ज्ञान यही है जिसमें अखण्ड घर (परमधाम) की हकीकत जाहिर हुई जिससे श्यामा महारानी और रूहें अपने घर पहुंचेंगी।

महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन।। १४१ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह को और रूहों को कहती हैं कि ऐसे सुख के सागर में गर्क होकर अपने घर आओ।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४९० ।।

Nijanand App

चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामा जी साथ जी, जित बैठे चौक वतन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे साथजी! श्री राजश्यामाजी के स्वरूप सिनगार को हृदय में लेकर जागिए। यही हमारा जीवन है (हमारी जिन्दगी है)। श्री राजजी, श्यामाजी और सब सुन्दरसाथजी अपने मूल वतन परमधाम के प्रथम भोम (मूल-मिलावा) में बैठे हैं।

याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।। २ ।।

हे साथजी! उस घड़ी को याद करो जब हमने श्री राजजी महाराज से हंसी के खेल की मांग की थी। अब खेल की खुशियों को दिल में लेकर परमधाम में जागो और अपने धनी का सुख लो।

सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें।। ३ ।।

अपनी सुरता को सदा मूल-मिलावा में विराजमान श्री श्याम श्यामाजी के चरणों में रखो जहां प्रथम भोम में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और हम सब सखियां बैठी हैं।

चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत।। ४ ।।

उस गोल हवेली के चबूतरे को घेरकर चौसठ थंभ आए हैं, जिसमें कठेड़ा लगा है। नीचे गिलम बिछी है और ऊपर चौसठ थंभों को लगता चन्द्रवा लगा है।

कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए।। ५ ।।

चबूतरे के किनारे पर घेरकर सोलह थंभों को लगता चार भागों में कठेड़ा है, जिसकी बहुत सुन्दर शोभा है।

चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर।। ६ ।।

चारों तरफ के चार दरवाजे छोड़कर बाकी सब थंभों में कठेड़ा लगा है। चौसठ थंभों के बीच चबूतरा भरकर पश्म की गिलम (गलीचा) बिछी है।

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग।। ७ ।।

चौसठ थंभों का बेवरा इस प्रकार है चार खांचों में सोलह-सोलह थंभ आए हैं, जिनमें चार-चार धातुओं के और बारह-बारह थंभ नगों के चारों तरफ आए हैं। इस प्रकार सोलह तरह के रंग आए हैं।

चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार।। ८ ।।

चारों तरफ एक-एक खांचे में एक-एक रंग के थंभ शोभा देते हैं, जिनके रंग एक-दूसरे के साथ मिलकर चारों तरफ से चौसठ थंभों की शोभा को बढ़ा देते हैं।

Nijanand App

ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर।। ९ ।।

चार धातुओं के जो थंभ कहे हैं उनमें हेम, कंचन, चांदी तथा नूर के थंभ हैं। यह अन्दर चार रंग की शोभा देते हैं।

और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज।। १० ।।

बारह थंभ जवेरों के हैं, उनमें पाच, पन्ना, हीरा, पुखराज, माणिक, मोती, गोमादिक और पिरोजा के हैं तथा

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल।। ११ ।।

नीलवी, लसनियां, परवाल और कपूरिया रंग के हैं। चार द्वारों में चार रंग हैं और इस तरह से यह बारह रंग आए हैं।

चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन।। १२ ।।

चार रंग के चार दरवाजे हैं। इनके आठ थंभ हुए। इनमें पूरब की दिशा में पाच का, दक्षिण में माणिक का, पच्छिम में नीलवी (नीलम) का और उत्तर में पुखराज का रंग शोभा देता है।

और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग।
द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग।। १३ ।।

नीलवी के दो थंभ पूरब के दरवाजे में पाच के थंभों के दाएं-बाएं आए हैं। इसी तरह पच्छिम के दरवाजे में नीलवी के थंभों के दाएं-बाएं पाच के दो थंभ आए हैं, जिनके रंग आमने-सामने टकराते हैं।

दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास।
दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास।। १४ ।।

दक्षिण के द्वार के माणिक के थंभों के दाएं-बाएं दो थंभ पुखराज के आए हैं। उत्तर के द्वार में दो थंभ जो पुखराज के हैं, उनके दाएं-बाएं दो थंभ माणिक के आए हैं।

थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक।। १५ ।।

बाकी चारों खांचों में एक-एक में बारह-बारह थंभ सबमें आए हैं। इस तरह से यह बारह रंग के बारह थंभ चारों तरफ एक दूसरे के सामने आए हैं।

हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल।। १६ ।।

पूरब की तरफ से और पच्छिम की तरफ गिनना शुरू करें तो थंभों के रंग में पहले हीरा, लसनियां, गोमादिक, मोती, पन्ना, परवाल, हेम, चांदी, नूर और कंचन के शोभा देते हैं।

Nijanand App

पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए।। १७ ।।

इनके आगे पिरोजा और कपूरिया के थंभ शोभा देते हैं। इस तरह से पिरोजा और कपूरिया के दो रंगों के आठ थंभ चारों खांचों में शोभा देते हैं। अब इनको पूरब और पच्छिम के दरवाजे से शुरू करके उत्तर और दक्षिण के दरवाजों की तरफ गिनना है तो हर एक रंग के चार-चार थंभ उसी क्रम में दिखाई देंगे।

ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए।। १८ ।।

यह सोलह थंभों की हकीकत बताई है। एक-एक रंग के चार-चार थंभे हैं, जो आमने-सामने शोभा देते हैं और इस तरह से चौसठ थंभों की शोभा है।

चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच।। १९ ।।

चौसठ थंभों के बीच में चारों तरफ भरकर चन्द्रवा लगा है और उसी तरीके से चबूतरे पर भरकर गलीचा बिछा है। यहां पर हर थंभों की किरणें टकराती हैं।

माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस।। २० ।।

चन्द्रवा में कई तरह के वृक्ष, बेलियां, कटाव, फूल, पत्ते, नक्शकारी जवेरों से बनी हैं, जो बहुत ही अच्छी लगती हैं।

इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिंघासन।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन।। २१ ।।

इस चबूतरे के ऊपर गिलम (गलीचा) बिछी है जिसके ऊपर सिंहासन रखा है। सिंहासन की जोत चारों तरफ झलकती है। रंगों की किरणें उठती हैं।

झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन।। २२ ।।

सुन्दर गिलम के ऊपर सुन्दर सिंहासन शोभा देता है, जिसमें श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। वहां की जमीन और जवेरों का तेज बेशुमार है।

लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर।। २३ ।।

थंभों से लगते घेरकर एक सीध में लाल तकिए रखे हैं जो पशम से भरे बेहद नरम हैं।

जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले।। २४ ।।

जितना कठेड़ा आया है उतने सबमें तकिए शोभा ले रहे हैं। उन तकियों के साथ सखियां एकदिली से भरके बैठी हैं।

Nijanand App

जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए।। २५ ।।

सखियां जैसे बीच में बैठी हैं वैसे ही घेरकर आई हैं। चारों तरफ कठेड़ा तक भरकर बैठी हैं।

किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत।। २६ ।।

सिंहासन के नए-नए रंगों की कई तरह की तरंगें उठती हैं जो सिंहासन में जड़े हुए नूर के नगों की तरंगें हैं।

पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन।। २७ ।।

इस तख्त के पाए सुन्दर सोने के हैं। छः पायों पर छः डंडे आए हैं, जिनसे सिंहासन सजा है।

दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए।। २८ ।।

सिंहासन के डंडों में दस पहलों में दस रंगों की शोभा है और हर तरफ दसों दिशाओं में अलग-अलग रंग दिखाई देते हैं।

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग।
यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग।। २९ ।।

एक तरफ एक रंग है, दूसरी तरफ दूसरा रंग है। इसी तरह से दसों दिशाओं में दस रंग हैं। जिन रंगों की कई तरंगें उठती हैं।

तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन।। ३० ।।

पीछे के जो तीन डंडे हैं, उनके बीच दो तकिए रखे हैं, जिनमें कई रंगों के वृक्ष, बेलें और बूटियां बनी हैं इनका वर्णन कैसे करूं?

चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार।। ३१ ।।

चारों तरफ बेलों की चार पंक्तियां आई हैं, जिनमें ऊपर चढ़ते हुए सुन्दर फूल बने हैं, जो जगमगा रहे हैं।

तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए।। ३२ ।।

छः डंडों पर सुन्दर दो छतरियां हैं, जिनमें कई तरह की डोरी, बेली, कांगरी की शोभा है। इनका वर्णन कैसे करूं?

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन।। ३३ ।।

दो छतरियों के ऊपर दो कलश शोभा दे रहे हैं और छः कलश छः डंडों पर हैं। इन आठों कलशों की रोशनी आकाश में आपस में टकराती है।

Nijanand App

नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित।। ३४ ।।

नक्शकारी, फूल और कटाव में कई तरह की तेज और जोत की जुगत कलशों में दिखाई देती है। जिसे बार-बार देखने पर भी नयन तृप्त नहीं होते हैं।

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार।
बैठे सुन्दर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार।। ३५ ।।

सिंहासन के ऊपर दो चाकले पश्म के बिछे हैं, जिनकी किरणों का तेज अति नर्म है। उन चाकलों पर युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी को देखकर बलि-बलि जाती हूं।

जरे जिमी की रोसनीं, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान।। ३६ ।।

यहां की जमीन के कण की रोशनी आकाश में नहीं समाती। फिर जिस तख्त पर श्री राजजी महाराज बैठे हैं, उसकी जोत का वर्णन कैसे करूं?

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम।। ३७ ।।

मैं यहां की जबान से मूल-मिलावा के रंगों का, नगों का वर्णन करती हूं, परन्तु यहां के शब्द वहां तक पहुंचते ही नहीं। बिना कहे चाहना भी पूरी नहीं होती।

ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई।। ३८ ।।

यह जवेर कई तरह के हैं। कई तरह की बनावट में शोभा देते हैं। इनसे प्रतिक्षण कई तरह के रूप दिखाई देते हैं। इस तरह से यह सारा एक ही नूर का स्वरूप है।

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर।
जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर।। ३९ ।।

गिलम के ऊपर बने फूल और बेलों का तेज और ऊपर के चन्द्रवा और थंभों का तेज एक-दूसरे से मिल जाता है, इसलिए अलग-अलग रंगों के नगों का कैसे बयान करूं?

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत।। ४० ।।

यह मूल-मिलावा अपना है। यहीं पर अपनी नजर रखो। पीछे जरा भी मत हटाओ। इससे अपने तन में इश्क पैदा हो जाएगा।

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम।। ४१ ।।

अपने मूल स्वरूप जिनको अपनी परआतम कहते हैं, उनमें सावचेत होकर श्री राजजी महाराज के साथ आनन्द करो।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं श्री राजजी महाराज के मूल स्वरूप का वर्णन करती हूं। वर्णन करने की मेहर माशूक श्री राजजी महाराज ने मुझे दी है, जिससे मैं वर्णन करती हूं। तुम अन्तःकरण में धारण करना।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ५३२ ।।

श्री राजजी को सिनगार दूसरो

मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी श्री राजजी महाराज! आपका अर्श मेरा दिल है। आप आकर अपने अर्श में आराम करें। मैंने हृदय में बड़ी चाहनाओं के साथ आपके लिए सुन्दर सेज बिछाई है। इसमें आकर आप विश्राम करें।

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।। २ ।।

मोमिनों का दिल ही आपका अर्श है। जहां सब सुख सुविधाएं हैं। यह मोमिन आपकी ही अंगना हैं, इसलिए एक क्षण के लिए आपसे अलग नहीं हो सकतीं।

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।। ३ ।।

अपने इश्क से लबरेज (लबालब भरी) दिल की सुराही को हाथ में लेकर रात-दिन अपने मोमिनों को इश्क की शराब पिलाइए और इन्हें अपने इश्क की पूरी खुराक दीजिए।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम।
रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम।। ४ ।।

आपने स्वयं आकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और रसूल साहब के द्वारा अपने आने की गवाही दिलाई। रूहें आपके प्रेम की प्यासी थीं और आपके प्रेम को ही चाह रही थीं।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम।। ५ ।।

दूसरी गवाही शुकदेवजी भागवत के द्वारा लाए, जिसमें लिखा है कि श्री अक्षरातीत पारब्रह्म अपने परमधाम से अपनी आत्माओं के साथ कलियुग में आएंगे और अपने तारतम ज्ञान से सबको पहचान कराएंगे।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।। ६ ।।

परमधाम के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में तख्त पर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। हे श्री राजजी महाराज! आप अपने इश्क की ऐसी मस्ती दे दो जिससे मैं श्री राजजी श्री श्यामाजी के ही चरण कमलों में गर्क हो जाऊं।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं श्री राजजी महाराज के मूल स्वरूप का वर्णन करती हूं। वर्णन करने की मेहर माशूक श्री राजजी महाराज ने मुझे दी है, जिससे मैं वर्णन करती हूं। तुम अन्तःकरण में धारण करना।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ५३२ ॥

श्री राजजी को सिनगार दूसरो

मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी श्री राजजी महाराज! आपका अर्श मेरा दिल है। आप आकर अपने अर्श में आराम करें। मैंने हृदय में बड़ी चाहनाओं के साथ आपके लिए सुन्दर सेज बिछाई है। इसमें आकर आप विश्राम करें।

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात।। २ ।।

मोमिनों का दिल ही आपका अर्श है। जहां सब सुख सुविधाएं हैं। यह मोमिन आपकी ही अंगना हैं, इसलिए एक क्षण के लिए आपसे अलग नहीं हो सकतीं।

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।। ३ ।।

अपने इश्क से लबरेज (लबालब भरी) दिल की सुराही को हाथ में लेकर रात-दिन अपने मोमिनों को इश्क की शराब पिलाइए और इन्हें अपने इश्क की पूरी खुराक दीजिए।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम।
रूहें त्रिखावंती हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम।। ४ ।।

आपने स्वयं आकर अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और रसूल साहब के द्वारा अपने आने की गवाही दिलाई। रूहें आपके प्रेम की प्यासी थीं और आपके प्रेम को ही चाह रही थीं।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम।। ५ ।।

दूसरी गवाही शुकदेवजी भागवत के द्वारा लाए, जिसमें लिखा है कि श्री अक्षरातीत पारब्रह्म अपने परमधाम से अपनी आत्माओं के साथ कलियुग में आएंगे और अपने तारतम ज्ञान से सबको पहचान कराएंगे।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।। ६ ।।

परमधाम के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में तख्त पर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। हे श्री राजजी महाराज! आप अपने इश्क की ऐसी मस्ती दे दो जिससे मैं श्री राजजी श्री श्यामाजी के ही चरण कमलों में गर्क हो जाऊं।

Nijanand App

तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब।।७।।

आपने कुरान में लिखा है कि आपका अर्श मोमिनों का दिल है। हे मेरे लाड़ले धनी! तुम अपने उन वचनों को पूरा करो।

और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह।
सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह।।८।।

आपने कुरान में लिखा है कि समनून के साथ मेरी पक्की दोस्ती है (समनून एक बड़ा त्यागी और प्रतापी राजा था, जिसने जनता की सेवा जीवन भर कष्ट ही सहन करके की। यही किस्सा वक्त आखिरत को श्री प्राणनाथजी के लिए आया है, जिन्होंने अपनी रूहों के वास्ते न सहने योग्य कष्ट उठाए और अपने मोमिन को माया के बन्ध से छुड़ाया। यही वचन उन्होंने मोमिनों को परमधाम से उतरते समय कहे थे)। हे मेरे धनी! अब आप उन वचनों को पूरा करके अपनी दोस्ती निभाओ और मेरे हृदय में आकर विराजमान हो जाओ। मैं आपकी राह में पलकें बिछाए बैठी हूं।

कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत।
हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत।।९।।

आज दिन तक अखण्ड परमधाम की और श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान किसी को नहीं थी। अब मेरे हृदय में सिंहासन पर आकर विराजमान हो तो मैं इन दोनों छिपे भेदों के रहस्यों को जाहिर करूं।

ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के।
ढूंढ्या बुजरकों इसदाए से, इत जाहेर न हुए कबूं ए।।१०।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! यह वर्णन सपने की दुनियां के तन का नहीं है। यह तो अखण्ड अक्षरातीत धाम के धनी के चरण कमलों का वर्णन है, जिसे दुनियां के बड़े-बड़े लोगों ने ढूंढ़ा, परन्तु किसी को इनका पता नहीं चला।

उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम।
छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम।।११।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की तली उज्ज्वल लाल रंग की है। यह रंग अखण्ड परमधाम के अंग चरण कमल की छवि की सलूकी आत्मा से एक क्षण के लिए भी नहीं छूटती।

मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें।
ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले माहें।।१२।।

चरण कमलों की तली की बारीक रेखाएं रूहों के दिल से नहीं निकल सकतीं। अंगना होने के कारण रूहों का इस पर अधिकार है।

नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन।
आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन।।१३।।

इन चरण कमलों के अंगूठे और नाखून की महिमा वर्णन करने के लिए यहां के वचन नहीं पहुंचते। आसमान और जमीन के बीच रूहें इन्हीं चरण कमलों में मग्न रहती हैं।

Nijanand App

एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर।। १४ ।।

परमधाम के एक छोटे से नख की रोशनी आसमान और जमीन के बीच में समाती नहीं है। उसके तेज से परमधाम के कण-कण सूर्य के समान चमकते हैं।

देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी।। १५ ।।

अंगूठा और उंगलियों की बनावट ऊपर से नीचे की ओर देखकर इनकी सुन्दर शोभा हृदय में अंकित हो जाती है।

लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूंटी काड़ों।
आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों।। १६ ।।

उंगलियां लाल रंग की नर्म-नर्म हैं। पंजा, टांकन, घूंटी, काड़ों की शोभा रूहें रात-दिन लेती हैं।

लाल लांकें लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल।। १७ ।।

तली की गहराई तथा एड़ी लाल रंग की है। तली का भाग अति उज्ज्वल है। ऐसे चरण कमल जिसके हृदय में आ जाते हैं, वही रूहें आशिक कहलाती हैं।

बसत सुखाले नरमाई में, आसमान लग रोसन।
ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन।। १८ ।।

यह चरण कमल अति नर्म और सुखदाई हैं। इनके तेज की रोशनी आकाश तक फैली है। रूह मोमिनों को अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरण कमल अति प्यारे हैं।

आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें।
ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहें।। १९ ।।

आशिक रूह इन चरणों के तले या परमधाम में रहती हैं। इस तरह से इश्क की खुशबू में नित्य मस्त रहती हैं।

सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे।
सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हकें कदम धरे।। २० ।।

चरण कमल की बनावट (छवि) अति सुन्दर है। यह रंग, रस और प्यार से भरे शोभा देते हैं। ऐसे चरण कमल जिसके हृदय में आ जाते हैं, उसी का दिल अर्श है और वही मोमिन है।

ए सुख देत अर्स के, कोई नाहीं निमूना इन।
ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हकसों जिन।। २१ ।।

यह चरण कमल ही मोमिनों को अर्श के सुख देते हैं। जिसका दुनियां में कोई नमूना नहीं है। इस सुख को अर्श की अरवाहें जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, ही जानती हैं।

Nijanand App

रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम।
जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम।। २२ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज से उनके चरण कमल पकड़कर इश्क की मांग करती हैं। जो इन चरण कमलों से जुदा हो जाता है वह अर्श की ब्रह्मसृष्टि नहीं है।

नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन।
धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की तली नर्म और लाल है। यही मोमिनों का जीवन है, इसलिए हे धनी! इन चरण कमलों को जाहिरी या बातूनी रूप से रूहों से मत छुड़ाना।

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे चरण कमलों को अपने नैनों में और छाती से चिपकाकर या सिर पर लिए घूमूं, इसलिए हे धनी! मेरे दिल को अर्श कर बैठो। यही मेरी इच्छा है।

तखत धरया हकें दिल में, राखूं दिल के बीच नैनन।
तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज मेरे दिल को अपना अर्श बनाकर विराजमान हो गए। अब उन्हें मैं अपने हृदय के नैनों में बसाकर रखूंगी। इन नयनों के बीच में अपनी आत्मा के नैनों के तारे में छिपाकर रखूं।

तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहें।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊं क्याहें।। २६ ।।

उन आत्मा की आंखों में जो पुतलियां हैं और पुतलियों में जो नैन हैं, उन नैनों के बीच इन चरण कमलों को छिपा लूं और कहीं जाने न दूं।

जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन।
ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन।। २७ ।।

जिन आंखों के खोलने से चरण जुदा हो जाएं उन आंखों को आशिक रूह क्यों खोलेगी? यह श्री राजजी महाराज की अखण्ड नजर है जिससे रूहों को चैन व करार होता है।

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए।। २८ ।।

एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग को देखने की चाहना करना आशिक का काम नहीं है। जो श्री राजजी महाराज के चरणों को छोड़ती है वह आशिक कैसे हो सकती है?

एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए।। २९ ।।

रूह जब श्री राजजी महाराज के एक अंग को देखकर उसी में गर्क हो जाती है, तो वह दूसरे अंग को नहीं देखती। श्री राजजी के तो सभी अंग बराबर सुख देने वाले हैं, इसलिए रूह अर्श के पकड़े हुए अंग को छोड़ती ही नहीं।

Nijanand App

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए।। ३० ।।

परमधाम की आत्मा को श्री राजजी महाराज का कोई भी अंग हल्का या भारी नहीं लगता, इसलिए जो श्री राजजी महाराज के एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग की चाहना करता है वह मोमिन नहीं है, क्योंकि आशिक को माशूक का कोई भी अंग हल्का नहीं लगता।

दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत।
यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित।। ३१ ।।

इस तरह से जब तक दूसरा अंग हृदय में आ नहीं जाता, तब तक पकड़ा हुआ अंग वह कैसे छोड़ेगा? इस तरह से आशिक एक अंग को छोड़कर दूसरे अंग को नहीं ले सकता। वह एक ही अंग में गर्क रहता है।

जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें।
देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें।। ३२ ।।

यदि आशिक श्री राजजी महाराज के एक आभूषण को ही पकड़ ले तो वह भी उससे छूटता नहीं है। अपने धनी के आभूषण को ही देख आशिक उसी में डूबा रहता है।

हकके अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें।
तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के सुख को परमधाम की जड़ वस्तुएं भी नहीं छोड़तीं, तो जो परमधाम की रूहें हैं और जिनके दिल में श्री राजजी के चरण कमल आ गए हैं, वह कैसे उन चरणों को छोड़ सकते हैं?

हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए।। ३४ ।।

सोना हो या नग, परमधाम के सब जड़ पदार्थ भी चेतन हैं। सभी चीजें दिल के चाहे अनुसार एक जैसी ही लगती हैं। वैसे ही एक चीज अनेक रूप धारण कर लेती है।

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए।
सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए।।३५।।

परमधाम की एक ही चीज में सभी रंग, गुण, नरमाई, तेज और खुशबू सब श्री राजजी महाराज के वास्ते ही अपना-अपना गुण रखते हैं, ताकि वह श्री राजजी का सुख ले सकें।

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन।। ३६ ।।

आशिक रूहें जो एक ही अंग में अटक जाती हैं उसका यही कारण है, क्योंकि श्री राजजी महाराज के सभी अंगों में तमाम शोभा है और गुण हैं, इसलिए किसको पकड़ें और किस को छोड़ें।

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर।
अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के सब अंग नूर के हैं। नूर के बिना कोई अंग नहीं है। सब अंगों से नूर ही नूर बरसता है जो आकाश में नहीं समाता। ऐसे इन अंगों की महिमा है।

Nijanand App

एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग।
एक लेहेर पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग में ही कई रंग हैं और रंग रंग में कई तरंगें हैं। आशिक रूहें अंग की एक ही लहर में अटककर अपना जीवन बिता देती हैं।

जो कदी मेहेर करें मासूक , तो दूजा अंग देवें दिल आन।
तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान।। ३९ ।।

यदि श्री राजजी महाराज ही मेहर करके अपना दूसरा अंग रूह के दिल में दे दें, तो श्री राजजी महाराज के सब अंगों के सुख को रूह ले सकती है।

जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए।
ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए।। ४० ।।

यदि आशिक रूह अपनी आंखों को खोलकर देखें और श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को पहले पकड़ लें, तो श्री राजजी महाराज के चरण कमल रूह के नयनों से अलग नहीं हो सकते।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज की इजार हरे रंग की है, जिसका नेफा लाल अतलस का है। नेफे में बेलें और मोहरी पर कांगरी तथा जरी नगों के जड़ाव की है। इसका वर्णन कैसे करूं?

काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चूड़ी सोभित इजार।
जोत करे माहें दावन, झांईं उठे झलकार।। ४२ ।।

पिंडली के नीचे के हिस्से में इजार की मोहरी में चुन्नटें शोभा देती हैं। यह इजार सफेद जामा के अन्दर से झलकती है।

इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें।
फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें।। ४३ ।।

इजारबन्ध में कई रंगों के नग लगे हैं और कई तरह की कांगरी, बेल, फूल और पत्तों की नक्शकारी है जिसकी शोभा को यहां के शब्द नहीं पहुंचते।

कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत।। ४४ ।।

इजारबंध रेशम का है जिसमें कई तरह के रंग, नग शोभा देते हैं। धागा दिखाई नहीं देता। हाथ के छूने पर भी लगते नहीं हैं। अति नर्म है।

अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नाहीं पार।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार।। ४५ ।।

नाड़े के फुन्दन की जोत बेशुमार है। यह अपनी बड़ी भूल है जो ऐसी शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करता हूं।

Nijanand App

रंग नीला कह्या इजार का, कई रंग नंग इन मों।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे न हाथ कों।। ४६ ।।

इजार का रंग नीला कहा है। वैसे इसमें कई रंग के नग हैं। जिनकी किरणें झलकती हैं, परन्तु हाथ के छूने से पता नहीं चलता।

सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए।। ४७ ।।

बाकी सभी अंगों का वर्णन बाद में करूंगी। पहले पाग की शोभा जो बांध रखी है उसको बताती हूं। पाग की सिफत का यहां के शब्दों से वर्णन करना सम्भव नहीं है। फिर भी मेरी रूह वर्णन करना चाहती है।

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे।। ४८ ।।

पाग हाथ से बांधी है। यह तब कहा जाए यदि वह हुकम से बांधने का काम न होता तो श्री राजजी महाराज जिस समय दिल में जैसे चाहते हैं एक पल में ही करोड़ों पागें बंध जाती हैं।

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए।। ४९ ।।

परन्तु श्री राजजी महाराज ने अपने हाथों से अपनी पाग के लपेट बड़े शौक से बांधे हैं, ताकि उनकी आशिक रूहें पाग को बांधता देखकर अत्यन्त सुखी हों।

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए।
तो कह्या फना का सब्द, बका को पोहोंचत नाहें।। ५० ।।

श्री राजजी महाराज का सभी सिनगार इसी तरह का है जो मैं इस जबान से बयान कर रही हूं। वैसे इस संसार के शब्द अखण्ड की शोभा को नहीं पहुंचते।

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम दिया खसम।
ताथें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम।। ५१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुझे इतनी शक्ति दी है, इसलिए चुप नहीं रहा जाता। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही कहलवाता है, इसलिए जैसे-तैसे करके वर्णन करती हूं।

बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल।
इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल।। ५२ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने लाल उज्ज्वल हाथों से पाग को बड़ी संभाल कर बांधा है। अपने नूरजमाल धनी की पाग की शोभा का मैं कैसे बयान करूं?

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए।
पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए।। ५३ ।।

श्री राजजी महाराज ने लाल रंग की पाग लटकती हुई बांधी है जिसकी शोभा कही नहीं जाती। उन्होंने पाग बांधते समय कई तरह की कारीगरी और दिल में प्यार भरकर बिद्ध-बिद्ध के लपेट देकर बांधी है।

Nijanand App

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल।।५४।।

पाग कुछ इस तरह की बंधी है कि उसके बीच कई तरह के कटाव, फूल, बेलें और कांगरी की शोभा बन जाती है, जिसे रूहें देखकर बहुत खुश होती हैं।

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल।।५५।।

एक लपेट में आधे फूल की शोभा आती है, जो पूरे लपेट में पूरी हो जाती है। इस तरह से पाग में बेलें और फूल बने हैं, जिसे देख-देखकर बलिहारी जाती हूं।

कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए।
न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें।।५६।।

एक फूल और पत्ते में, जो पाग में बने हैं कई तरह के रंग और नग झलकते हैं, जिनकी बनावट जबान से कहने में नहीं आती। यह रूह अपने दिल में विचार करके ही देख सकती है।

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए।
बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए।।५७।।

श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में खास तरह से पाग को लपेट फिराकर बांधी है। मैं उस पर वारी-वारी जाती हूं।

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर।।५८।।

पाग के ऊपर सुन्दर दुगदुगी शोभा देती है। जिसमें जड़े हीरे और पाच के नग आकाश तक शोभा देते हैं।

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज।।५९।।

मानिक, पुखराज और नीलवी के यह पांचों रंग आसमान तक झलकते हैं।

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए।।६०।।

कंधे के पीछे पीठ पर घुंघराले बालों का नूर झलकता है। उन्हीं के अनुसार पाग के लपेट दिए हैं। पीठ सुन्दर गोरे रंग की है और अति शोभा दे रही है, जिसकी सिफत जबान से वर्णन नहीं हो सकती।

कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भरया।।६१।।

गले में बांहों और खंभे, पेट, पसली और छाती की छवि को देखकर मेरी रूह अटक जाती है।

मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित।
रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत।।६२।।

बाहों के मच्छ (डौले) सुन्दर शोभा देते हैं, जिनके रंग, छवि और कोमलता आशिक के दिल में बस जाती है।

Nijanand App

हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग।। ६३ ।।

श्री राजजी महाराज के हस्त कमल का कैसे वर्णन करूं? पोहोंचा और हथेलियों में कई रंग हैं। वैसे लाल और उज्ज्वल रंग बताती हूं, परन्तु इन रंगों में कई तरह की तरंगें झलकती हैं।

कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक।। ६४ ।।

कोहनी, काड़ा, (जहां चूड़ा पहनते हैं), कलाइयों के रंग नरमाई और सलूकी सुन्दर शोभा देती है। मेरा जीव इतना कठोर हो गया कि ऐसा वर्णन करते समय टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता।

ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक।
क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिहीं हथेलियां लीक।। ६५ ।।

न रंग की और न ही छवि की शोभा वर्णन करने में आती है, तो फिर हाथ और पांवों की बीस उंगलियों और हाथ की हथेलियों की रेखाओं का वर्णन कैसे करूं?

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी पतली उंगलियों की मुट्ठी बांधकर हिलाते हैं। जब फिर मुट्ठी खोलते हैं तो उसकी कोमलता का बयान कैसे करूं?

क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर।
देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर।। ६७ ।।

उंगलियों के नखों का नमूना कैसे बताऊं? क्योंकि इन सभी अंगों का नूर नख ही हैं, जिनके सामने करोड़ों सूर्य कुछ भी दिखाई नहीं देते।

अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत।। ६८ ।।

पेट की पसली और पीठ की गहराई को चलते समय देखो तो इस सलूकी और शोभा को अपने दिल में बसा लेने की इच्छा होती है। फिर भी यह मेरा जीव संसार में ऐसा कठोर हो गया है कि ऐसी सुन्दर शोभा को बयान करते नहीं उड़ता।

देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर।। ६९ ।।

मुख की ठोड़ी, लाल गाल, होंठ और ठोड़ी के बीच की गहराई के गोरे रंग का बयान कैसे करूं?

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब।
उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब।। ७० ।।

श्री राजजी महाराज के गाल उज्ज्वल लाल रंग के सुन्दर शोभा देते हैं। ऐसे श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की छवि और सलूकी जो मेरे दिल को चुभ रही है, कैसे वर्णन करूं?

Nijanand App

कानन की किन बिध कहूं, जो सुने आसिक के बैन।
सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन।।७१ ।।

श्री राजजी महाराज के कानों की हकीकत कैसे बताऊं जो आशिक मोमिनों के वचनों को सुनते हैं और सुनकर उत्तर देते हैं जिससे आशिकों को सुख होता है।

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान।।७२ ।।

मुखारबिन्द, दांत और लाल होठों की छबि बोलते समय बड़ी सुन्दर लगती है। श्री राजजी महाराज के मीठे वचन रूह को खींच लेते हैं।

नैन अनियारे बकी छब, चंचल चपल रसाल।
बान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल।।७३ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन नुकीले, चतुराई युक्त और रसीले हैं, जिनकी बहुत सुन्दर छवि है। जब श्री राजजी महाराज अपनी तिरछी नजर से देखते हैं तो उनके आशिकों की छाती में चुभ जाते हैं (आशिक तड़प जाते हैं)।

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए।
असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए।।७४ ।।

माथे (मस्तक) पर लाल रंग का तिलक सुन्दर सुखदायी शोभा देता है। वह तिलक अंग में ही बना है और सदा नए-नए तेज से भरा दिखाई देता है।

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन।
हाथ पांउं कण्ठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख, नैन, कान, नासिका, हाथ, पांव, कंठ और छाती सब जवानी के रस में एक-दूसरे से चढ़ते ही दिखाई देते हैं।

नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल।
छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के नख से शिखा तक सभी अंग चंचल और चढ़ती शोभा से भरे हैं। उनके सभी अंगों का तेज, जोत, बल और छबि सब सुन्दर शोभायमान हैं।

सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग।
तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग।।७७ ।।

सभी अंग देखने में अच्छे व कोमल लगते हैं जिनका तेज मस्ती से भरा चढ़ता-चढ़ता दिखाई देता है।

कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अंदर।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज की कमर, दिल, छाती, उज्ज्वल और कोमल हैं। इनमें इश्क से चढ़ती मस्ती रूह के दिल में चुभ जाती है।

Nijanand App

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक।
छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक।।७९ ।।

जो श्री राजजी महाराज की रूहें हैं वह अपने माशूक के इन अंगों को छोड़कर कैसे निकल सकती हैं। छाती की शोभा तो ऐसे है कि बेशक रूहें उसको देखकर घायल हो जाती हैं।

जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन।
सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन।।८० ।।

श्री राजजी महाराज की इजार इस तरह की है कि उसके ऊपर सफेद रंग के जामे का दावन (घेरा, नीचे का हिस्सा) आया है। उस दावन को देखने से नीचे की इजार झलकती है।

गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर।
अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर।।८१ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे रंग के ऊपर सफेद जामा अंग से लगा है, जिसकी सुन्दरता कैसे कहूं?

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर।
बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर।।८२ ।।

जामे की झलकार चारों ओर फैल रही है। उसकी बांहों की चूड़ियां (चुन्नटें) और घेरे की बनावट अति सुन्दर है। हकीकत कैसे वर्णन करूं?

पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त।।८३ ।।

जामे की पीठ पर बने भरत में जड़े नग झलक रहे हैं तथा हाथों की मोरी पर चुन्नटें सुन्दर शोभा देती हैं।

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध।
चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध।।८४ ।।

दोनों बगलों में तथा तनियों के स्थान पर सुन्दर बेलें और नक्शकारी बागे में बनी है और हाथ के ऊपर चुन्नटें बड़े सुन्दर ढंग से बनी हैं। उसकी शोभा का बयान कैसे करूं?

छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास।
उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास।।८५ ।।

बागे की चुन्नटें न छोटी, न बड़ी, न पतली और न मोटी हैं। सब ऊपर से नीचे बारीक से बारीक आई हैं। उसकी खूबी यहां की जबान से कैसे बताएं?

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेडे किनार।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्दोत कार।।८६ ।।

कमर में पीला पटका बंधा है, जिसके पल्लू और किनारे पर सुन्दर नग जड़े हैं। बेल, फूल और पत्ते की नक्शकारी की जोत आकाश तक फैलती है।

Nijanand App

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव।
सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव।। ८७ ।।

पटके के किनारे की बेल के कटाव में लाल, नीला, सफेद और काला रंग झलकता है और पल्लू पर सात रंग के नगों का जड़ाव अति सुन्दर शोभा ले रहा है।

पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग।
बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग।। ८८ ।।

पाच, पन्ना, मोती, नीलवी, हीरा, पुखराज और माणिक के नग बेलें और कटाव और नक्शकारी में जड़े हैं। इनकी तरंगों से कई तरह के रंग दिखाई देते हैं।

जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार।
लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार।। ८९ ।।

हरे रंग की इजार की शोभा सफेद रंग के जामे में झलकती है, जिसमें लाल रंग का बन्धन और फुन्दन के रंग और नग बेशुमार शोभा देते हैं।

कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन।
ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन।। ९० ।।

श्री राजजी महाराज के अंगों के जुदा-जुदा आभूषणों में अर्श के जवेर जड़े हैं। उनमें से पहले चरणों के आभूषणों का बयान करती हूं।

चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार।। ९१ ।।

चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, काम्बी और कड़ला के जोड़े अति नरम और सुगन्धित हैं। उनकी सुन्दर आवाज आती है और झलकार होती है।

भूखन मेरे धनी के, किन विध कहूं जो ए।
के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज के आभूषणों की सुन्दरता और कोमलता कैसे कहूं? उनका तेज आकाश तक फैलता है।

एक नंग के कई रंग, सोभे झन बाजे झांझर।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर।। ९३ ।।

एक नग के कई रंग झांझरी में दिखाई देते हैं। पांच नग एक रंग के घुंघरी में सुन्दर आवाज करते हैं।

नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए।। ९४ ।।

घुंघरी के कुण्डों में जवेर जड़े हैं, जिनमें नरमाई है और तेज भी है। दोनों गुण हैं। तीसरा गुण सुन्दर आवाज का है। चौथा गुण खुशबू का है।

Nijanand App

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी।। ९५ ।।

इसी किस्म से कड़े में एक नग के पांच रंग दिखाई देते हैं। यह सभी रंग और नग अलग-अलग दिखाई देते हैं। ऐसा नहीं समझना कि किसी ने इनको जड़ा है या घड़कर बनाया है।

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस।
दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स।। ९६ ।।

कांबी एक जवेर की है उसमें बारीक नग दस रंग के हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज के आभूषण मन की पसन्द के अनुसार शोभा देते हैं।

मैं देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत।
कई रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित।। ९७ ।।

मैंने परमधाम के जवेरों को देखा और यहां संसार के सोने और आभूषणों को मिलाया। संसार के आभूषणों में कई तरह के रंग के नगों को मिलाकर रंग के अनुसार कई तरह के भूषणों में जड़ते हैं।

किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे।
अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए।। ९८ ।।

परमधाम के आभूषणों को न किसी ने बनाया है न घड़ा है। यह सब श्री राजजी महाराज की इच्छा के अनुसार शोभा देते हैं। परमधाम के जवेर सोने में बने हैं, ऐसा लगता है।

दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी।
दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी।। ९९ ।।

दस रंग के जवेर की नक्शकारी की हुई है। दस मुंदरियां हैं। दो अंगूठियां अंगूठों में और आठ तरह की आठ उंगली में शोभा देती हैं।

ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार।। १०० ।।

यह उंगलियां अति नर्म हैं। जिनके नख के तेज की शोभा अपार है। यह हमारी भूल है जो बेशुमार को शुमार में लाकर वर्णन करते हैं।

पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए।
छबि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके।। १०१ ।।

पोहोंचे और हथेलियों की सलूकी कही नहीं जा सकती। हाथों के रंगों की छवि को देखकर मैं बलिहारी जाती हूं।

कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत।। १०२ ।।

हाथों की कलाई में दो कड़े पहने हैं, जिनके लाल और नीले रंग आसमान तक झलकते हैं।

Nijanand App

रूह के दिल में चुभ जाती है।

पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस।। १०३ ।।

हाथ में जो पोहोंची पहनी है उसमें पांच नग, हीरा, पाच, पन्ना, मोती और नीलवी जड़े हैं, जिनकी सिफत जबान से कही नहीं जाती। इनकी तरंगें आपस में लड़ती हैं।

बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर।
कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर।। १०४ ।।

बाजूबन्ध श्री राजजी महाराज के दोनों बाजुओं पर शोभा देते हैं। जिनमें कई तरह की बारीक नक्शकारी और कटाव हैं। उनकी तरंगें आकाश तक फैलती हैं।

एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक।
इन बिध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक।। १०५ ।।

परमधाम के आभूषणों में एक नग में कई रंग तथा एक रंग में कई नग दिखाई देते हैं। उनका ब्योरा कैसे कहूं?

पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत।
पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत।। १०६ ।।

बाजूबन्ध की जरी और फुन्दन में पांच रंग शोभा देते हैं। पांच रंग जवेर के झलकते हैं। उनके नीचे फुन्दन लटकते शोभा देते हैं।

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए।
कई विध सुख लेवें हक के, सुख भूखन कहे न जाए।। १०७ ।।

यह बाजूबन्ध नर्म है और सुगन्धित हैं। दिल में चाहे अनुसार चमक है। श्री राजजी से रूहें सुख लेती हैं तो आभूषणों के सुख कहे नहीं जाते।

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल।
पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल।। १०८ ।।

गले में हीरा, माणिक, पाच, मोती, नीलवी और लसनियां के हार शोभा देते हैं।

और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल।
बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल।। १०९ ।।

हारों के बीच दुगदुगी में जड़े नग झलकते हैं। दुगदुगी के बीच में हीरा है। घेरकर छः नग आए हैं जिसकी जोत आकाश तक जाती है।

गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग।
झांई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग।। ११० ।।

श्री राजजी महाराज के गाल गोरे रंग के लालिमा लिए हैं। कानों में पहने कर्णफूलों की झांई गालों पर झलकती है।

Nijanand App

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल।। १११ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका को देखो। नीचे मोती और ऊपर लाल बेसर लटक रहा है। यह बेसर होठों पर लटकने के कारण अमीरस होठों से पीती है। होठों का रंग लाल गुलाल है।

करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग।
तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग।। ११२ ।।

कर्ण फूल का वर्णन कैसे करूं? इनकी किरणों में कई रंग हैं और उनमें नग के रंगों में कई तरह के रंगों की तरंगें दिखाई देती हैं।

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास।। ११३ ।।

कर्णफूल में माणिक की लालिमा, हीरा, मोती का सफेद रंग और पाच के हरे रंग की किरणें आकाश तक जाती हैं।

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज।। ११४ ।।

माणिक की लाल किरणों में पुखराज की पीली और नीलवी की आसमानी किरणें मिलने से पांचों रंग शोभा देते हैं।

पांच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत।। ११५ ।।

पाग में लगी कलंगी में पांच फूल ऊपरा ऊपर लटकते हैं परमधाम के नूर की कुछ शोभा ही ऐसी है कि जिसकी किरणें आकाश तक झलकती हैं।

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर।। ११६ ।।

कलंगी में एक ही हीरे के नूर की शोभा है। जिसकी आसमान जमीन के बीच प्रचण्ड रोशनी है लगता है करोड़ों सूर्य उदय हो गए हों।

जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब।। ११७ ।।

जब आकाश की तरफ देखते हैं तो जवेरों की किरणें आपस में जंग करती हैं, ऐसा दिखाई देता है।

कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर।। ११८ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं, हे मोमिनो! जो कोई परमधाम से आए हों वह श्री राजजी महाराज के चरणों को हृदय में लेकर अपने घर परमधाम चलो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ६५० ।।

Nijanand App

श्री ठकुरानीजी का सिनगार दूसरा

मंगला चरण

बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग।
रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री श्यामाजी महारानी जो श्री राजजी के नूर का अंग हैं और बारह हजार रूहें जो श्यामा महारानी के नूर के अंग है और हमेशा श्यामा महारानी के संग रहती हैं, उनकी हकीकत का वर्णन करती हूं।

हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए।
इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए।। २ ।।

श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के अंग हैं और परमधाम में ही रहते हैं, इसलिए इनके सरूप का सपने के संसार में बैठकर कैसे वर्णन करूं? यहां के कोई भी शब्द उस शोभा का वर्णन करने योग्य नहीं हैं।

किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए।
जो अरवा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए।। ३ ।।

आज दिन तक किसी ने भी अखण्ड परमधाम को देखा नहीं। कुछ कहा नहीं और न उसके बारे में किस तरफ है, जाना नहीं तो दुनियां में उस अखण्ड घर की पहचान कैसे मिले? जो परमधाम की आत्मा होगी, वही इसे सुनकर सुख पाएगी।

मेरी रूह चाहे बरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम।
वस्तर भूखन अर्स के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम।। ४ ।।

मेरी आत्मा श्यामा महारानीजी की हकीकत वर्णन करना चाहती है। वह बिना निज बुद्धि की वाणी के सम्भव नहीं है। परमधाम के वस्त्र और आभूषणों की शोभा वर्णन करने में दुनियां के शब्द उन्हें नहीं पहुंच सकते।

पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल।
इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल।। ५ ।।

पहनना और उतारना इस संसार में होता है। परमधाम में चल-विचल नहीं होता। परमधाम की नकल संसार में है ही नहीं। परमधाम की वाहेदत में तो सदा हर चीज असल ही है।

घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन।। ६ ।।

परमधाम में घट-बढ़ नहीं होती और न कुछ बनता-मिटता ही है, तो ऐसे श्री श्यामाजी महारानी के सुन्दर स्वरूप का यहां के मुख से कैसे वर्णन करें?

एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए।
जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए।। ७ ।।

एक पहनना दूसरा उतारना हो तो घट-बढ़ हो, परन्तु जैसी चित्त में इच्छा हो उसी के अनुसार सिनगार पहले से बना दिखाई देता है।

Nijanand App

अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक।
जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक।। ८ ।।

परमधाम की रूहें जो दिल में चाहना करती हैं वह एक पल में पूरी हो जाती हैं। जिनके अंग में जैसे वस्त्र चाहिए, एक पल में अनेक वस्त्र बदल जाते हैं।

सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन।। ९ ।।

रूह जैसा मन में विचार करती है उसी तरह से उनके स्वरूपों के सिनगार, वस्त्र और आभूषणों की सलूकी की छबि दिखाई देने लगती है।

वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन।। १० ।।

परमधाम के वस्त्र आभूषण सब चेतन हैं जो रूहों को सब तरह के सुख देते हैं, तो नेत्र और कान भी क्यों सुख नहीं देंगे, अर्थात् देंगे।

नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात।
नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात।। ११ ।।

नया सिनगार सजे तो नया पहना कहा जाता है? परमधाम में नया-पुराना है ही नहीं, तो फिर यहां की बात परमधाम में कैसे पहुंचे?

जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान।
फना बका को क्या कहें, ताथें पोहोंचत नहीं जुबान।। १२ ।।

यहां की महिमा को चित्त में ही धारण किया जा सकता है। जो ऐसा करे उसी की बड़ी अक्ल है। नहीं तो मिट जाने वाले संसार की जबान अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे कर सकती है?

तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे।
हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रह्यो न जाए।। १३ ।।

मेरे पास श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है, इसलिए मेरी रूह अखण्ड सत का वर्णन किए बिना नहीं रह सकती।

ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए।। १४ ।।

वरना झूठी जमीन में बैठकर अखण्ड का वर्णन करना कैसे सम्भव हो सकता है? श्री राजजी महाराज का हुकम और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आत्मा को अपनी तरफ खींचती है, इसलिए यहां बैठकर मैं अखण्ड का वर्णन करती हूं।

यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम।
कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम।। १५ ।।

ऐसा करने से मुझे तथा रूहों को सुख मिलता है। अब मैं श्यामा महारानीजी के सिखापन (शिक्षा) से और कुरान की गवाही लेकर वर्णन करती हूं।

Nijanand App

हक इलम सिर लेय के, वरनन करूं हक जात।
रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान के बल से श्री राजजी की अंगना श्यामा महारानी का वर्णन करती हूं। ऐसा करने से मेरी रूह को सुख होगा और रात-दिन मेरे सुभान श्यामा महारानी मेरे हृदय में बसे रहेंगे।

मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स बसे जित हक।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक।। १७ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और जहां अर्श है वहीं श्री राजजी रहते हैं। जिस मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज हैं वहीं जोश, हुकम, इश्क और इलम निश्चित रूप से होते हैं।

ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कह्या मोमिन।
तो बरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन।। १८ ।।

यह सब बरकतें अर्श में रहती हैं, इसलिए मोमिन के दिल को अर्श कहा है। जब इस तरह की सब बरकतें (न्यामतें) दिल में हों, तभी परमधाम का वर्णन हो सकता है।

बारीक बातें अर्स की, सो जानें अर्स के तन।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अन्तस्करन।। १९ ।।

परमधाम की बातें बहुत बारीक हैं। इन्हें परमधाम के तन मोमिन ही जान सकते हैं, इसलिए वह मोमिन जिनका दिल संसार से टूट चुका हो वही संसार में बैठकर अखण्ड सुख ले सकते हैं।

छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अर्स तन।। २० ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी छाती बड़ी नर्म है। आपके चरण कमल भी नर्म हैं। फिर परमधाम में आपसे हमारे तनों की निसबत है, इसलिए हमारे हृदय में आकर बस जाओ।

मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम।। २१ ।।

मेरी छाती में दिल कोमल है। उसमें नर्म चरण कमलों को रखो। मैं आपके-लिए इस दिल में ही सेज बिछा देती हूं, इसलिए अब आप एक पल भी मुझे चरणों से दूर न करें।

रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पांउं कोमल।
इत सुख देऊं मासूक को, सुख यों लेऊं नेहेचल।। २२ ।।

मेरी रूह की छाती दिल से भी कोमल है। उससे भी कोमल आपके चरण कमल हैं। इस रूह की छाती में, हे श्यामा महारानी! आपको बिठाकर सुख दूं और आपसे अखण्ड परमधाम के सुख लूं।

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन।
खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन।। २३ ।।

मेरी रूह के नैनों की पुतली और पुतली के अन्दर तारों में आपके चरण कमलों को रात-दिन बसा कर रखूंगी, इसलिए एक क्षण के लिए भी अपने चरण कमलों को मुझसे अलग न करों।

Nijanand App

चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल।। २४ ।।

आपके चरणों की तली अति कोमल है और इस तरह से मेरी रूह के नैन कोमल हैं। अब इन कोमल नैनों में कोमल चरण कमल को रात दिन बसाकर रखूंगी और पलक भी झपकने नहीं दूंगी।

या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन।
इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन।। २५ ।।

मेरी रूह के नैन की पुतली के बीच के तारों में आपके लिए रात-दिन सेज बिछी है, इसलिए अपने दोनों सुन्दर चरण कमलों को रखो।

मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बहुविध की मोहोलात।
कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात।। २६ ।।

मेरा दिल ही आपका अर्श है जिसमें तरह-तरह की मोहोलातें, सेज, हिंडोले और तख्त हैं। मेरी रूह उनको नई-नई शोभा से सजाती है।

आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार।
द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार।। २७ ।।

मेरे हृदय में आकर मेरी सब इच्छा को पूरी करके सुख दो। मैं भी आपको नए-नए सिनगारों से सजाऊंगी। आप मुझे अपनी पूरी मस्ती देना, बेहोशी नहीं, ताकि मैं सब अंगों को संभालकर आपके सुख ले सकूं।

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत हक जात।। २८ ।।

मेरे दिल में ही तुम्हारा अर्श है। जिसमें कुल सामान हैं। मेरे दिल में ही आपके खाने का, पीने का, सिनगार के सामान और रूहें रहती हैं।

सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन।
जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन।। २९ ।।

आपके दिल के छिपे रहस्य ने ही मेरी आत्मा को जगाया है। इस तरह से परमधाम की कुल हकीकत का ज्ञान मोमिनों के दिल में आ गया है।

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, हक बैठें उठें खेलाए।
सुख बका हक अर्स रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए।। ३० ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है जहां श्री राजजी महाराज उठते हैं, बैठते हैं और खेलते हैं। अखण्ड परमधाम के सुख रूहें अपने दिल में लेती हैं तो ऐसे दिल की महिमा जबान से कैसे कहें?

पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए।
तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए।। ३१ ।।

हे श्यामा महारानी! आपके दिल के अंग जो रूहें हैं, उनका दिल भी आपका अर्श है। वह सभी आपके दर्शन करती हैं। आपसे बातें करती, सुनती हैं और आपकी वाणी का आनन्द लेती हैं।

Nijanand App

पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब।
ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब।। ३२ ।।

हे धनी! तुम्हारे दिल की सुराही इश्क की शराब पीकर मस्ती में आती हैं जिससे यह सपना उड़ जाए।

एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास।
लेऊं खुसबोए बोलूं तुमसों, और क्यों कहूं दुलहा विलास।। ३३ ।।

आपके इश्क के प्याले पी लेने से मेरे दिल को आपको देखने का तथा मीठे वचनों को सुनने का स्वाद मिल जाता है। तुम्हारे साथ बोलकर आनन्द लूं। दुल्हा के विलास से सुख होता है। उसको कैसे कहूं?

जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल।
ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल।। ३४ ।।

हे धनी! जितना सुख तुम्हारे परमधाम में है, उतना सुख हमारे दिल में है। यह सुख मेरी रूह लेती है जो सुख आपने मेरे दिल को अर्श बनाकर दिए।

रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत।
इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत।। ३५ ।।

रूह के वर्णन करने से क्या होता है जब तक उसके अन्दर अंगना होने का भाव न आए। इश्क, इलम, जोश और हुकम यह सब न्यामते श्री राजजी महाराज की मेहर से ही मिलती हैं।

दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धस्या धनी बिगर।। ३६ ।।

हे श्यामा महारानी! आपके तथा आपके अंग मोमिन के तथा श्री राजजी महाराज के बिना यहां सुख कैसे मिलें? क्योंकि बिना धनी को देखे, बिना उनसे बातें किए, बिना सुने, बिना दिल को अर्श किए, कैसे कहा जाए?

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात।। ३७ ।।

जब तक श्री राजजी महाराज दिल की सेज पर नहीं आए, तब तक न उनको देखा और न उनसे बातें कीं और न ही सेज का सुख लिया, तो उसकी रात भी बेकार गई, अर्थात् जीवन व्यर्थ गया।

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात।
सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात।। ३८ ।।

मेरा दिल आपका अर्श है जिसमें अर्श की सब न्यामतें हैं। इसी तरह से सब रूहों के दिल में भी सब न्यामतें हैं।

पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग।
अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग।। ३९ ।।

अब सबसे पहले श्यामा महारानी के सिर के ऊपर की राखड़ी का वर्णन करती हूं। उसके बाद सब अंगों का वर्णन करूंगी, फिर श्यामा महारानी के अखण्ड सिनगार का वर्णन करूंगी जिनके साथ मेरी रूह हमेशा रहती है।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

Nijanand App

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले।। ४० ।।

श्री श्यामा महारानीजी के सिर पर जो राखड़ी (बीज) बंधी है, उसकी शोभा का कैसे बयान करूं? आसमान जमीन के बीच में केवल उसी की ही जोत दिखाई देती है।

गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्दोत।। ४१ ।।

उसके बीच में हीरा है। चारों तरफ माणिक के नग जड़े हैं। किनारे के ऊपर नीलवी के नगों की शोभा आई है; जिसकी तरंगें आसमान तक जाती हैं।

सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान।। ४२ ।।

सिर के ऊपर मांग में कांगरी बनी है। वह कांगरी पीछे जाकर पानड़ी का रूप बन जाती है। श्री श्यामाजी के इस सिनगार की शोभा का कैसे वर्णन करूं? यह शोभा बेशुमार है और इसकी कोई उपमा नहीं है।

माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत।। ४३ ।।

इसके बीच हारें, खजूरे, बूटियां और फूल अलग-अलग रंगों के तथा नगो की रोशनी जगमगाती है।

लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर।
बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर।। ४४ ।।

मांग में लाल सिन्दूर भरा है तथा दो पटली में (दावनी में) जवेर जड़े हैं जो सिर पर शोभा देती हैं। इस पटली में नगों की कांगरी बनी है, जिस पर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं।

निलवट पर सर मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक।। ४५ ।।

माथे (मस्तक) पर मोतियों की लरें आई हैं, जिनके ऊपर नीलवी तथा बीच में माणिक की शोभा है। इस तरह की तीन लरें मांग के दोनों तरफ शोभा देती हैं।

इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर।। ४६ ।।

इन तीनों लरों के ऊपर कांगरी बनी है, जो मांग के साथ शोभा देती है। मांग पर पीछे पान का कटाव बना है। यह शोभा कैसे बयान करूं?

मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज।। ४७ ।।

माणिक, मोती, नीलवी, हीरा और पुखराज सोने में जड़े राखड़ी में चमक रहे हैं। इस मुख से उस शोभा का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी बनाए।।४८ ।।

राखड़ी के चारों तरफ फूल और कटाव की शोभा आई है। ऐसी युक्ति राखड़ी के पिछले भाग तक है। आगे चोटी मोतियों के नगों से गूंथी हुई शोभायमान है।

तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग।।४९ ।।

चोटी के तीन गोफनों के तीन नग हैं। हर एक नग के तीन-तीन रंग हैं। हीरा, माणिक और नीलवी के नग सोने के साथ गोफने के साथ झलकते हैं।

तीनों गोफने घूंघरी, बेनी गूंथी नई जुगत।
बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित।।५० ।।

तीनों गोफनों के किनारे पर घुंघरियां (बोरियां) लगी हैं। चोटी एक नई तरह से गूंथी है। जिसे देख-देखकर वारी-वारी जाती हूं। फिर भी आत्मा की तृप्ति नहीं होती।

चारों बंध बेंनी तले, नीले पीले सोभित।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत।।५१ ।।

चोटी के नीचे चोली (ब्लाउज) की चारों तनी पीठ पर बंधी हैं। नीले और पीले रंग की शोभा देती है। चोली के नर्म बन्ध साड़ी के नीचे से दिखाई देते हैं।

बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के।
सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए।।५२ ।।

गोरी पीठ के ऊपर चोली के बन्ध व चोटी शोभित हैं जो साड़ी के अन्दर से झलकती हैं। इस तरह की सुन्दर शोभा है।

लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग।
मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग।।५३ ।।

लाल रंग की साड़ी है, जिसमें नक्शकारी की है। जिसमें अनेक तरह के नग जड़े हैं। बारीक नक्शकारी के जड़ाव बेशुमार हैं। गिनती में नहीं आते। यहां के जवेरों की किरणें आपस में टकराती हैं।

सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार।।५४ ।।

सिर पर नीली, पीली और सफेद किनारे वाली साड़ी है जिसमें कांगरी के पांच रंग के नगों की झलकार होती है।

साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित।
फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत।।५५ ।।

साड़ी के पल्ले और किनारे पर नगों की कांगरी, फूल, बेल और कई तरह के खजूरे झलकते हैं।

Nijanand App

कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार।
कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार।।५६ ।।

लाल साड़ी के बीच बेशुमार छापे, बूटियां, नक्शकारी और नग हैं। कई तरह के नगों के रंग साड़ी के बीचोंबीच झलकते हैं, जिनकी शोभा का पार नहीं।

मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें।।५७ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द गोरा, उज्ज्वल लालिमा लिए है, जिसकी छवि का वर्णन जबान से नहीं हो सकता। उसे देख-देखकर रूहें अपने दिल में सुख पाती हैं।

मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अर्स के।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए।।५८ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द चौक, नेत्र और नासिका की छबि परमधाम के अंग की है जो अखण्ड है। यहां के झूठे शब्द उपमा के लिए नहीं पहुंचते। फिर भी मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन किया है।

मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए।।५९ ।।

श्री श्यामाजी के माथे पर बैंदा (टीका) शोभा देता है जिसे देखकर रूहें बलिहारी जाती हैं। श्री श्यामाजी के मुखारबिन्द को देखकर रूह को बेहद सुख मिलता है।

रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए।
जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए।।६० ।।

नीले रंग की जोत हरे रंग में देखकर रूह अटक जाती है। यदि माणिक की जोत देखती है तो उसमें मग्न हो जाती है।

करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग।।६१ ।।

मोती उज्ज्वल हैं। उनकी लटकने की तरंगें आकाश तक जाती हैं। रूहें जो आशिक हैं और जिन्हें ऐसी मस्ती मिल गई है, वह ऐसी शोभा को कैसे छोड़ सकती हैं?

श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए।।६२ ।।

कानों में पानड़ी की बनावट के टाप्स हैं, जिसमें माणिक और नीलवी के नग जड़े हैं। दोनों की किरणें टकराती हैं।

मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन।।६३ ।।

मोती, पन्ना और पुखराज की लरें टोप्स में लटकती हैं, जिनकी किरणें आकाश में झलकती हैं।

Nijanand App

मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल।। ६४ ।।

मुख के ऊपर नासिका में बेसर लटकती है, जिसमें लाल और मोती के नग लटक रहे हैं। नीलवी के नग की शोभा देखूं तो चित्त बेहाल हो जाता है।

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन।
उज्जल माहें लालक लिए अतंत तेज तारन।। ६५ ।।

नैनों की चाल ही अलग है। वह नुकीले हैं तथा उज्ज्वलता में लालिमा की रेखाएं और बीच के तारों में अत्यन्त तेज है।

भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर।। ६६ ।।

भौंहे काले रंग की हैं जो गोरे अंग पर शोभा देती हैं। यहां की जबान से उनकी शोभा कही नहीं जाती। परमधाम की रूहों को उनका अनुभव है।

सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे।। ६७ ।।

नैनों का तिरछापन और इश्क की मस्ती को वही रूहें जानती हैं जिनकी छाती में यह चुभ गए हैं।

मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम देत देखाए।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए।। ६८ ।।

नैन मीठे और रसीले हैं जिनमें लज्जा समाई है। वह पूरे प्यार से और मेहर भरी सुखदाई नजर से देखते हैं।

अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए।। ६९ ।।

इनके नैन बेशुमार गुणों से भरे हैं जिनकी गिनती नहीं हो सकती। वैसे उनके सभी अंग बेशुमार सुख देते हैं, परन्तु नैनों के गुण बेशुमार हैं।

सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक।। ७० ।।

मुखारबिन्द और हरवटी गोरे रंग की है और अति सुन्दर है। होठों और हरवटी के बीच की गहराई तथा दांतों को देख-देखकर भी जीव टूक-टूक क्यों नहीं होता?

मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल।। ७१ ।।

मुखारबिन्द और दोनों गाल अति सुन्दर हैं। इनकी बनावट की छवि का वर्णन हो ही नहीं सकता। यह गोरे रंग में लालिमा लिए हैं।

Nijanand App

सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल।।७२ ।।

कानों के दोनों झालों में सात रंगों के नग झलकते हैं। इन झालों की लटकन और फूल की शोभा जो मुख पर आई है, बेमिसाल है। इसका यहां की जबान से वर्णन कैसे करूं?

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन।
हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन।।७३ ।।

इन झालों में घेरकर मोती आए हैं तथा बीच में सोने के अन्दर माणिक, पाच, हीरा, लसनियां और नीलवी यह सात नग जड़े हैं, जो आकाश तक जगमगाते हैं।

हेंम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए।
ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए।।७४ ।।

सोने के और नगों के नाम लेने से ऐसा लगता है मानो कि किसी ने इन्हें बनाया है, पर परमधाम में कोई चीज बनती नहीं है, इसलिए यहां की जबान से इनकी सिफत हो ही नहीं सकती।

कई रंग करे एक खिन में, नई नई जुगत देखाए।
सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे।।७५ ।।

एक पल के अन्दर एक नग के कई रंगों की युक्तियां दिखाई देती हैं। लगता है कि यह शोभा सर्वदा से ही सब अंगों में चाहे अनुसार पहने हैं।

चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन।
सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन।।७६ ।।

परमधाम के वस्त्र हों या आभूषण, सभी चेतन हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का सुख लेते हैं और जगमगाहट करते हैं।

हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन।।७७ ।।

हर एक नग में सभी रंग हैं तथा गुण हैं, इसलिए किसी भी नग को लेकर कुछ बनाना नहीं पड़ता। सब दिलचाहा बन जाता है।

वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग।।७८ ।।

वस्त्र, आभूषण, सोना, रेशम और नग कहां तक कहूं, सब दिल के चाहे अनुसार अंग पर शोभा देने लगते हैं। यहां पहनना और उतारना नहीं होता।

यों दिल चाह्या वस्तर, और दिल चाह्या भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होए माहें खिन।।७९ ।।

यहां दिल की चाहना अनुसार ही वस्त्र, आभूषण एक क्षण में पहले से ही हर अंग पर शोभा बदली दिखती है।

Nijanand App

सुन्दर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल।
जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल।।८०।।

श्री श्यामा महारानी के ऐसे सुन्दर स्वरूप को देखकर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं। परमधाम की जो रूह (मोमिन) होगी, वह ऐसी शोभा में गर्क हो जाएगी।

नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर।।८१।।

पीठ की गहराई बड़ी बारीक है। पेट, पसलियां सब गोरे रंग के हैं। इस छबि को रूह तब वर्णन करे जब परमधाम की जागृत बुद्धि उसके पास हो।

बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब।।८२।।

श्री श्यामाजी महारानी के मुखारबिन्द की छबि, रंग, तेज और सब अंगों पर बलि-बलि जाऊं।

स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत।
सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत।।८३।।

गोरे रंग पर काले रंग की चोली बेहद शोभा देती है, जिसमें बनी बेलें और कटाव की सिफत कहने में नहीं आती।

मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव।
बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव।।८४।।

चोली के मोहोरे, पेट के ऊपर, स्तनों के ऊपर के खड़पे, चोली के नक्शकारी और कटाव बाजुओं के खभे पर तथा उर (छाती) पर बने फूल नगों से जड़े हैं।

पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन।।८५।।

पांच हार हीरा, माणिक, मोती, लसनियां और नीलवी के अति सुन्दर हैं। जिनकी किरणें आसमान तक टकराती हैं।

इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान।।८६।।

इनकी तरंगों का टकराना तब देखा जा सकता है जब नजर सीधी आसमान में करें। इन रंगों की तरंगें एक-दूसरे को मिटा नहीं सकतीं, क्योंकि सब रंगों का तेज एक समान है।

जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास।
तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास।।८७।।

यदि किसी नग को पहले देख लें और पीछे आकाश की ओर देखें, तो सब जगह एक उसी नग की रोशनी दिखाई पड़ेगी। बाकी सभी की रोशनी ढक जाएगी।

Nijanand App

बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग।
माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग।। ८८ ।।

हीरों के बीच दुगदुगी लटकती है जिनमें पाच, पन्ना, हीरा, लसनियां और नीलवी के पांचों रंग आपस में टकराते हैं।

पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव।
कई बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव।। ८९ ।।

पांचों हारों के ऊपर एक जड़ाव डोरा नजर आता है, जिसमें कई तरह के बेल, फूल, पत्ते, नक्शकारी और कटाव बने हैं।

मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज।
और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज।। ९० ।।

मोती, माणिक, पन्ना, लसनियां, पाच, पुखराज, सोना और कई किस्म के आभूषणों के ऊपर यह डोरा शोभा देता है।

कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उद्दोत।। ९१ ।।

चोली के गले के किनारे पर सुन्दर बेलें शोभा दे रही हैं। माणिक, मोती, नीलवी और डोरा (चेन) उनके ऊपर झलकता है।

चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस।
सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स।। ९२ ।।

चीड़ के हार की चार लरें और हर लर में दस रंग शोभा देते हैं। उन रंगों का वर्णन इस जबान से कहने में नहीं आता। परमधाम की रूहों को इन हारों के रंगों को अपने चित्त से अनुभव करना है।

कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल।। ९३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के गले में कंठसरी शोभा देती है। उसका कोई नमूना नहीं है। यह अर्श के आशिक रूहों के दिल ही जानते हैं।

नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबांए।
सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें।। ९४ ।।

मैं नगों का नाम लेती हूं और जड़ाव का वर्णन यहां की जुबान से करती हूं, परन्तु यह शोभा शब्दातीत है। इसकी महिमा कहने में नहीं आती।

दोऊ बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव।
माहें रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव।। ९५ ।।

दोनों भुजाओं में जड़ाव के बाजूबन्ध शोभा देते हैं, जिसमें कई नगों के रंग दिखाई देते हैं। इस भाव से इसे जड़ाव कहा है।

Nijanand App

जो सोभा बाजू-बन्ध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।
मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ९६ ।।

बाजूबन्ध की शोभा का करोड़वां हिस्सा कहने में नहीं आता। श्यामा महारानी अपने चित्त के अनुसार पहनती हैं और मैं अपने दिल के अनुसार वर्णन करती हूं।

स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक।
तिन फुंदन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत।। ९७ ।।

काला, सफेद, लाल और नीलवी बाजूबन्ध में फुम्मक के फुंदड़ों में जरी झलकती है, जिसकी किरणें हिलते समय झलकती हैं।

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त।। ९८ ।।

चोली की मोहोरी के नीचे कंकनी पहनी है, जिसके स्वर सुहावने हैं और किनारे पर कटाव, कांगरी बनी है जो चूड़े के ऊपर शोभा देती है।

चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग।
नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग में कई तरंग।। ९९ ।।

कोहनी के किनारे चूड़ियां पहनी हैं। उसके आगे चूड़ा पहना है और चूड़ी-चूड़ी में हर किस्म के नग जड़े हैं। नग-नग में कई रंग और रंग-रंग में कई तरंगें उठ रही हैं।

इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार।। १०० ।।

इस तरह के रंगों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं? न रंगों का शुमार है और न तरंगों का।

चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर।। १०१ ।।

चूड़ियों के आगे दो डोरे शोभा देते हैं और ऊपर कंकनी शोभा देती है। जिससे सुन्दर मीठी आवाज आती है और दोनों तरफों से उसकी सुन्दरता फैलती है।

डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नवघरी।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी।। १०२ ।।

दोनों डोरे कंचन के नग के है। उनके आगे नवघरी पहन रखी है। नवघरी के नौ रंग है जिनकी जोत आकाश में फैली है।

पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल।
बलि जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल।। १०३ ।।

हथेली के पोहोंचे और हाथ का रंग अत्यन्त उज्ज्वल है। हाथ की रेखाओं पर मैं बलिहारी जाती हूं जो अधिक कोमल हैं।

Nijanand App

दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल।
चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल।। १०४ ।।

दोनों हाथों की उंगलियां पतली और कोमल हैं। आशिक मोमिनों के दिल से चरण ही नहीं छूटते, तो यहां की शोभा कैसे दिल से निकलेगी?

पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी।। १०५ ।।

पांचों उंगलियां जुदा-जुदा तरह की हैं, जो अत्यन्त कोमल और सुन्दर हैं। दोनों अंगूठों में आरसी हैं और आठ उंगलियों में आठ रंग की आठ मुंदरियां हैं।

पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे।। १०६ ।।

पाच, पन्ना, कंचन, नीलवी, हीरा, लसनियां, गोमादिक और पुखराज के नगों की आठ मुंदरियां हैं।

दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन।। १०७ ।।

दोनों अंगूठों में दर्पण के रंग की मुंदरियां हैं और नगों के दर्पण हैं। श्री श्यामाजी महारानी अपना सिनगार उसमें देखती है, जिसमें नख से शिख तक का सिनगार दिखता है।

आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट।। १०८ ।।

इन उंगलियों के आगे नाखूनों की जोत करोड़ों सूर्यों से भी अधिक है। नख के एक अंश के सामने वह सूर्य दिखाई नहीं देता।

ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए।। १०९ ।।

सूर्य का झूठा नमूना अखण्ड नाखून को नहीं दिया जाता, परन्तु चुप भी रहा नहीं जाता और झूठी उपमा कहने से रूह पछताती है।

नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस।। ११० ।।

नीले रंग की अतलस की चरनियां (पेटीकोट) पहने हैं, जिसमें कई तरह के बेल, कटाव और नक्शकारी है। किनारे की चुन्नट यदि देखो तो एक से एक अच्छी लगती है।

माहें बेल फूल कई खजूरे, नंगै के वस्तर।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर।। १११ ।।

इसके अन्दर कई तरह के बेल, फूल और खजूरे हैं। वस्त्र सारे नगों के हैं जो दिल के चाहे अनुसार सख्त या कोमल हो जाते हैं। इनकी किरणें और सुगन्धि सबके ऊपर शोभा देती है।

Nijanand App

नव रंग इन नाड़ीं मिने, ताना बाना सब नंग।
जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग।। ११२ ।।

नाड़े के अन्दर नौ रंग हैं जिसके ताने बाने सब नगों के हैं। लगता है वह जवेरों का ही बना है या फिर रेशम में रंगों की नक्शकारी की गई है।

अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन।
नरम खूबी खुसबोए, भरया आसमान में रोसन।। ११३ ।।

वस्त्र या आभूषण सभी विचित्र दिखाई देते हैं। इनमें नरमाई, खूबी और खुशबू है, जिसकी जोत आसमान तक फैली है।

अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन।। ११४ ।।

परमधाम में नकल नहीं है। जैसे अखण्ड अंग नूर के हैं वैसे ही वस्त्र और आभूषण नूर के हैं। अब जिस अंग को जो चाहिए वह एक क्षण में सौ बार बदल जाते हैं।

जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत।
सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत।। ११५ ।।

दिल में जैसे सुख की चाहना हो वस्त्र आभूषण वैसे ही सुख देते हैं। परमधाम की हर एक चीज में सब गुण और इश्क भरा है, जिससे सब तरह के सुख मिलते हैं।

ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत।
लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत।। ११६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण अर्श के अंग हैं। मेरी वाणी संसार की है जो अखण्ड का वर्णन नहीं कर पाती। इन चरणों का रंग लाल उज्ज्वल है तथा बनावट अति सुन्दर है। जिसकी सिफत नहीं की जा सकती।

मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर।। ११७ ।।

मैं सलूकी की महिमा कहना चाहती हूं, परन्तु किसी तरह से कह नहीं पाती। मेरी संसार की पूरी उम्र भर में एक अंग का भी वर्णन सम्भव नहीं है।

जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत।
आए जाए आरबल, सब्द न इत पोहोंचत।। ११८ ।।

यदि नरमाई और रेखाओं की सिफत कहने लगूं तो पूरी उम्र बीत जाए, फिर भी यहां के शब्दों से वर्णन नहीं हो सकता।

जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल।
ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल।। ११९ ।।

यदि रंग की खूबी का बयान करूं तो उसकी किरणें लाल कहूं कि उज्ज्वल कहूं? यह अखण्ड परमधाम के चरणों की शोभा शब्दों में कही नहीं जाती।

Nijanand App

रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोए।
ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए।। १२० ।।

चरणों के रंग और उज्ज्वलता, नरमाई और खुशबू का कैसे बयान करूं? यहां की जबान से परमधाम के चरण का कैसे वर्णन हो?

फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल।
रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल।। १२१ ।।

चरणों का पंजा, टखना, घूंटी और कड़ा सब कोमल हैं। इनके रंगों की शोभा और सुन्दरता को छोड़कर आशिक रूहें आगे चल ही नहीं सकतीं।

अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी।। १२२ ।।

अब चरणों के आभूषण कहती हूं जिनमें कांबी, कड़ला, घुंघरी और झांझरी के अलग-अलग नग झलकते हैं और झांझरी की आवाज होती है।

एक हीरे की झांझरी, दिल रुचती रंग अनेक।
नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक।। १२३ ।।

एक हीरे की झांझरी है जिसमें अनेक रंग दिल की चाहना अनुसार दिखाई देते हैं। इनमें नक्शकारी, कटाव और बूटियां हैं, जिनका वर्णन कैसे करूं?

पांच नंग की घूंघरी, दिल रुचती बोलत।
दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित।। १२४ ।।

पांच नगों की घुंघरी, मन की चाहना अनुसार बोलती है। मन के चाहे अनुसार ही उनके अंग दिखाई देते हैं।

कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित।
सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत।। १२५ ।।

कड़े में कई रंग दिखाई देते हैं, लगता है सोने में नग जड़े हैं, वह भी दिल की चाहना अनुसार पल-पल रूप बदल लेते हैं।

कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव।। १२६ ।।

कड़े में कई तरह की बेलें, पत्ता, फूल नक्शकारी, कटाव सब नगों सहित शोभा देते हैं, लगता है सोने में बड़ी बारीकी से जड़े हैं।

या विध कांबी सनंध, या नंग या धात।
जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात।। १२७ ।।

इसी तरह से कांबी की हकीकत है जिसके नग या धातु दिल की इच्छा के अनुसार शोभा देते हैं।

Nijanand App

घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाह्या सब होत।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत।। १२८ ।।

इन्हें न तो किसी ने बनाया है और न जड़ाव में ही जड़ा है। यह सब दिल की चाहना से हो जाता है। दिल की चाहना से ही उनमें मीठे स्वर और तरंगें निकलती हैं।

कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया तेज।
निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज।। १२९ ।।

चरणों के अंगूठे के अनवट पाच के नग के हैं जिनके बीच दर्पण शोभा देता है। उन दर्पणों में नख से शिख के पूरे सिनगार की छबि दिखाई देती है।

और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल।। १३० ।।

उंगलियों में सुन्दर बिछिया पहने हैं जिनसे सुन्दर आवाज निकलती है। इनके रंग, हीरा, लसनियां, माणिक के शोभा देते हैं।

माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र।
सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र।। १३१ ।।

इन बिछुओं में कई तरह के रंग, नक्शकारियां और चित्र हैं। इनकी विचित्र शोभा को देखकर बलिहारी जाती हूं।

जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली।
ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अव्वल से दुनी चली।। १३२ ।।

पांव के पंजे की सलूकी तथा पंजे के नीचे का भाग और उंगलियों का वर्णन जो अखण्ड परमधाम की हैं, आज तक कभी नहीं हुआ।

सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों।। १३३ ।।

उंगलियों के नखों की सलूकी तथा उंगलियों की छबि और चरणों की महिमा इस जबान से कहने में नहीं आती।

जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत।
मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्दोत।। १३४ ।।

नख की किरणें आकाश तक फैली हैं जिसकी जोत का वर्णन कैसे करूं, लगता है करोड़ों सूर्य उदय हो गए हों।

दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों।
सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों।। १३५ ।।

चरण कमलों के दोनों अंगूठे और उंगलियों की खूबी तथा पंजे की सुन्दरता का बयान नहीं किया जा सकता।

Nijanand App

मिहीं लीकां देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्रामं।
बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम।। १३६ ।।

पंजे की तले की गहराई में बारीक रेखाएं देखकर लगता है इसे ही देखती रहूं और देख-देखकर बलिहारी जाऊं, क्योंकि यही खुराक रूह (मोमिनों) की है।

चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल।
केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल।। १३७ ।।

चरणों की तली की गहराई तथा एड़ियों का रंग लाल उज्ज्वल है। चरणों की छबि को वर्णन करने में हाय! हाय! अभी तक कलेजा फट क्यों नहीं गया?

दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब।। १३८ ।।

चरणों की सलूकी, नरमाई, छबि, रंग और खुशबू जैसी दिल को अच्छी लगती है वैसे ही हो जाती है।

यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भूखन।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन।। १३९ ।।

इसी तरह से दिल चाहे वस्त्र और आभूषण पहले से ही बन जाते हैं और जिस अंग को जो चाहिए वहीं मिल जाता है।

जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत।
खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत।। १४० ।।

जिस अंग में जैसा आभूषण चाहिए वैसे ही दिल की चाहना अनुसार एक पल में हो जाता है। एक ही पल में दिल की चाहना बदलती है तो शोभा भी बदल जाती है।

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत।
रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत।। १४१ ।।

सिनगार बिना उतारे ही एक पल में बदल जाते हैं। इसी तरह से आभूषणों के रंग नए-नए दिल चाहे बदल जाते हैं।

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए।। १४२ ।।

मन की इच्छानुसार इनकी शोभा, खुशबू, कोमलता और तेज बदल जाता है।

रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान।
सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान।। १४३ ।।

परमधाम की रूहें इन चरणों तले रहती हैं। सभी रूहें श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी के अंग हैं। यही रूहों की पहचान है।

Nijanand App

ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम।। १४४ ।।

यह परमधाम की रूहें हैं। इन्हीं चरणों में इनका ठिकाना है। इनका खाना-पीना, रहना सब चरणों तले है।

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल।। १४५ ।।

इन चरणों में ही रात-दिन रूहें आनन्द से रहती हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है। इसमें जरा भी भूलने की बात नहीं है।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल श्री राजजी महाराज के अर्श, अर्थात् मोमिनों के दिल में हैं, इसलिए मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज के चरण अलग नहीं होते, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के समान हैं।

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।। १४७ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर चरण कमलों को अपने दिल में, अपने हृदय में, अपने नैनों में अपने सिर पर लेकर घूमूं।

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।। १४८ ।।

नैनों के बीच में रखूं और हृदय की आंखों में रखूं। फिर रूह के नैनों में रखूं। जिससे रूह को सुख और करार मिले।

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन।। १४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन चरणों को रूह के अन्तस्करण में बसा लूं या फिर रूह के नैनों की पुतली के तारों में बांध लूं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ७९९ ।।

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप को बार-बार देखने पर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज उनके दिल को अपना अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम।। १४४ ।।

यह परमधाम की रूहें हैं। इन्हीं चरणों में इनका ठिकाना है। इनका खाना-पीना, रहना सब चरणों तले है।

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल।। १४५ ।।

इन चरणों में ही रात-दिन रूहें आनन्द से रहती हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है। इसमें जरा भी भूलने की बात नहीं है।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल श्री राजजी महाराज के अर्श, अर्थात् मोमिनों के दिल में हैं, इसलिए मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज के चरण अलग नहीं होते, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के समान हैं।

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।। १४७ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर चरण कमलों को अपने दिल में, अपने हृदय में, अपने नैनों में अपने सिर पर लेकर घूमूं।

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।। १४८ ।।

नैनों के बीच में रखूं और हृदय की आंखों में रखूं। फिर रूह के नैनों में रखूं। जिससे रूह को सुख और करार मिले।

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन।। १४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन चरणों को रूह के अन्तस्करण में बसा लूं या फिर रूह के नैनों की पुतली के तारों में बांध लूं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ७९९ ।।

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप को बार-बार देखने पर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज उनके दिल को अपना अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत।। २ ।।

श्री राजजी महाराज को रात-दिन मोमिनों के दिल में रहना चाहिए। मोमिनों के दिल में ही परमधाम की कुल न्यामत और खिलवतखाना (मूल-मिलावा) होना चाहिए। इन दिलों से एक पल के लिए अलग न होना चाहिए।

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर।। ३ ।।

मेरी रूह ने श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन किया है। वह बार-बार इसी स्वरूप को ही देखना चाहती है, जबकि श्री राजजी महाराज सिनगार करके मेरे दिल में ही विराजमान हैं।

अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर।। ४ ।।

अब मेरी रूह रात-दिन श्री राजजी महाराज के पूर्ण स्वरूप को ही देखना चाहती है। इनके स्वरूप की छबि, सलूकी और अंग के वस्त्र आभूषणों के दर्शन चाहती है।

सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने वस्त्र और आभूषणों से पूरा सिनगार कर लिया है। अब रूह के नैनों से उनके दर्शन करने का समय है।

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार।। ६ ।।

अब फिर से श्री राजजी महाराज के सब अंग और सिनगार को देखूं तो समझ लेना कि अपना काम हो गया। सब इच्छा पूरी हो गई। स्वरूप और सिनगार को देख-देखकर बलिहारी जाती हूं।

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन।। ७ ।।

मेरी रूह चाहती है कि ऐसे अखण्ड श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करके पहने हुए वस्त्र और आभूषणों की शोभा और सिनगार को देखूं।

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर की पाग, कलंगी, दुगदुगी अच्छी तरह से बार-बांर देखकर आत्मा के श्री राजजी महाराज के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में बैठकर उनके स्वरूप को देखो।

पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव।
जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव।। ९ ।।

हे मेरी आत्मा! तू पहले श्री राजजी महाराज की पाग में बने फूल और तरह-तरह के कटाव से सजी पाग की सलूकी को देख। लगता है यह फूल, कटाव नगों से जड़े हैं जिनकी जोत जगमगा रही है।

Nijanand App

देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास।
सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास।। १० ।।

पाग के ऊपर की कलंगी की शोभा और जोत को देखो यह आकाश में पूरे रूप से फैली है।

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक।
और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक।। ११ ।।

इस कलंगी, दुगदुगी की और पाग की शोभा देखकर हे मेरी रूह! तू टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाती?

देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के सुन्दर स्वरूप को निहारकर बड़े प्यार से अपने हृदय में बसा लो और अपने नैनों से बड़े प्यार से देखो कि श्री राजजी महाराज कैसे इशारों से तुमको सुख देते हैं।

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र रसीले और मस्ती से भरे हैं। उनकी भौंहें तिरछी शोभा देती हैं जिनके अन्दर से श्री राजजी महाराज नेत्रों के बाण चलाते हैं जो रूह के हृदय में चुभते हैं।

हंसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कई विवेक।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज जब हंसते हैं तो उनकी हरवटी तथा अंगों की शोभा और बढ़ जाती है। फिर उनके मुख में पान के बीड़े की शोभा देखकर मेरी जबान में वर्णन करने की शक्ति ही नहीं रह जाती।

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए।
ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ और मुख लाल रंग के हैं, जिसमें पान अधिक शोभा देता है। श्री राजजी महाराज के ऐसी लालिमा लिए मुख की शोभा का वर्णन मेरे मुख से नहीं हो सकता।

गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द, गोरा और उज्ज्वल है, जिसमें बेशुमार तेज की किरणें निकल रही हैं। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ऐसी छबि को देखकर मेरी रूह कैसे रह सकती है?

अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख उज्ज्वल है और माथे (मस्तक) पर सुन्दर तिलक शोभा देता है। नासिका की शोभा उससे भी और अधिक है। इस तरह से श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं।

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के चारों ओर के रंग बेशुमार शोभा देते हैं। जिसे बार-बार देखने पर मेरी रूह को करार आता है।

Nijanand App

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर।
सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर।। १९ ।।

माथे (मस्तक) के ऊपर का तिलक, मुख और भौंहें सभी बहुत सुन्दर लगते हैं। श्री राजजी महाराज के सभी अंगों को, हे मेरी रूह! निश्चय और दृढ़ता के साथ दिल में बसा लो।

नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे।
रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्रों और माथे (मस्तक) की छबि बहुत ही प्यारी लगती है। उनके नैनों के तेज जो मस्ती और आनन्द से भरपूर हैं, अंगनाओं को बहुत प्यारे लगते हैं।

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर।
कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे मस्ती से भरे नेत्रों को आशिक रूहें कैसे छोड़ दें? श्री राजजी महाराज की मद भरी नजर में कई तरह के करोड़ों गुण भरे हैं, जिससे रूह अपनी नजर को हटा नहीं सकती।

जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की नजर के सामने जब पलक आ जाती है तो ऐसा लगता है जैसे कोई ब्रह्माण्ड बीच में आड़े आ गया होगा। ऐसे अखण्ड परमधाम के दुल्हे का वियोग रूहें सहन नहीं कर सकतीं।

नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र अपनी रूहों को बड़े मीठे, प्यारे सुख देते हैं। वह मेहर के भरे और सुख के सागर हैं, इसलिए रूह की नजर हटाने पर भी नहीं हटती।

मीठे लगें मरोरते, मीठी पांपण लेत चपल।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज जब अपने नैनों को मरोड़ते हैं तो रूहों को बहुत अच्छा लगता है। ऊपर से जब पलक को चतुराई से दबाकर देखते हैं तो और अच्छे लगते हैं। जब बड़ी चतुराई से मस्ती के भरे हुए चंचल नुकीले नेत्रों को घुमाते हैं, तो बहुत सुन्दर लगते हैं।

बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी।
लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी।। २५ ।।

जब श्री राजजी महाराज अपने नर्म हस्त कमल से पान खाते हैं तो हाथ की मुंदरी और उंगलियों की छबि शोभा पाती है। सब उंगलियों पर मैं बलिहारी जाऊं।

बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल।
हंसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल।। २६ ।।

पान की बीड़ी आरोगते समय होंठों की लालिमा और बढ़ जाती है। हंसते समय मस्ती से भरे नैन और हरवटी से मुखारबिन्द की शोभा बेशुमार बढ़ जाती है।

Nijanand App

अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल।। २७ ।।

आरोगने के समय बीच में रस भरी वाणी बोलते हैं और नेत्रों के बाण चलाते हैं। वह रूहों की छाती में भाले के समान चुभ जाते हैं।

मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज जब पान बीड़ा आरोगते हैं तो लगता है मानो उसका लाल रंग गाल पर झलक रहा है। यदि उस समय नजर भर देख लें तो रूह की हालत तुरन्त बदल जाए।

मरकलड़े मुख बोलत, गौर हरवटी हंसत।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज मुस्कारते मुख से जब बोलते हैं तो गोरी हरवटी हंसती है और उसके साथ ही आंखें, कान, माथा, नासिका सभी अंग मुस्कराते हैं।

जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत।
कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत।। ३० ।।

मुखारबिन्द की लालिमा, कोमलता, खुशबू और कई रंग की शोभा मन की चाहना के अनुसार बन जाती है।

चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन।
देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन।। ३१ ।।

कान के लाल मोती दिल की चाहना अनुसार सुख देते हैं। यह आभूषण चेतन हैं। इन्हें देख-देखकर मैं बलिहारी जाती हूं।

सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन।
सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन।। ३२ ।।

सपने के झूठे तनों में जिस तरह से आभूषणों का पहनना और उतारना होता है, उस तरह से परमधाम में सिनगार नहीं किया जाता।

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन।
नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन।। ३३ ।।

नया सिनगार यदि करना हो तो पुराना उतारना पड़ेगा। नया पहनना और पुराना उतारना संसार के झूठे तनों से होता है।

ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अरसै के।
नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए।। ३४ ।।

परमधाम की यह बहुत बारीक बातें हैं, जो रूह (मोमिन) ही जानते हैं। परमधाम के अन्दर नया-पुराना और घट-बढ़ कुछ नहीं होता।

Nijanand App

अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार।
चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार।। ३५ ।।

परमधाम सदा एक रस रहता है, परन्तु पल में करोड़ों सिनगार बदल जाते हैं। दिल की इच्छा अनुसार सभी अंग दिखाई देते हैं। वहां नया पहना नहीं जाता। पुराना उतारा नहीं जाता। स्वरूप की ही शोभा बदल जाती है।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे।
अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए।। ३६ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज के अंग हैं वैसे ही वस्त्र और आभूषण हैं। जो चित्त के चाहे अनुसार करोड़ों रंग और स्वरूप में बदल जाते हैं। परमधाम में कोई भी रंग पुराना नहीं होता। हर पल नया ही दिखाई देता है।

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के कान जब मेरी बात को सुनते हैं तो मुझे वह कान बहुत सुन्दर खुशी से भरे और सुगन्धित दिखाई देते हैं, जिसका सुख मेरी रूह अन्दर ही अन्दर समझती है।

जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित।
गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के कान अंग में यदि अटक जाऊं तो छोड़कर आगे नहीं जा सकती। कान में बहुत से गुण छिपे हुए हैं, इसलिए मेरी रूह यहीं गर्क हो जाती है।

जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग।
जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो जामा पहना है वह जवेर से जड़ा है। जिसमें आभूषणों के कई नगों के रंग शोभा देते हैं। उनकी किरणें आकाश तक आपस में टकराती हैं।

याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर।
करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर।। ४० ।।

इस तरह से जामे के ऊपर पटका बंधा है। इसी तरह के कपड़े की सुन्दर पाग है जो मन की चाहना अनुसार अनेक तरह से अंग की शोभा बढ़ाती है।

जामा पटुका चोली बांहेंकी, चीन मोहोरी बन्ध बगल।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज का जामा, पटका, चोली और बाहें, किनारे की चुन्नटें और बगल बन्ध को देखकर आशिक की नजर आगे नहीं जा सकती।

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत।। ४२ ।।

जामे की चोली श्री राजजी महाराज के अंग पर चुस्त लगती है (फिट आई है)। जिस पर पहने गले के हार अंग पर हिलते हैं। हारों के बीच दुगदुगी की तरंगें पानी की नहरों के समान चलती हैं।

Nijanand App

बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर।
पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर।।४३।।

बगल में बेलें, फूल शोभा देते हैं तथा जामे के घेरे में भी शोभा देते हैं। पीठ के पीछे जामे पर कोतकी भरत की बनी है, जिसको मेरी रूह किसी तरह से छोड़ नहीं सकती।

कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग।
सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग।।४४।।

श्री राजजी महाराज के हार कहते हैं कि हम कैसे भाग्यशाली हैं जो श्री राजजी के कलेजे से चिपटकर उनकी शोभा को बढ़ाते हैं।

कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत।
ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत।।४५।।

कण्ठ के हार, नग सब चेतन हैं। सबकी शोभा एक से एक बढ़कर है। इस सुख का वही रूहें अनुभव करती हैं जो श्री राजजी महाराज के नयनों के सामने रहती हैं।

ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत।
कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत।।४६।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों के सिनगार की किरणें आपस में टकराती हैं, जिसे मेरी रूह देखना चाहती है। सिनगार के कई नगों के रंग आकाश में टकराते हैं।

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बन्ध।
जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध।।४७।।

बांहों के ऊपर बाजूबन्ध के जवेरों की जोत आकाश तक चीरती हुई चली जाती है। कुछ इस तरह की शोभा बनी है।

हाथ काड़ों कड़ी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनथें अतन्त।
जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत।।४८।।

हाथ के कड़े-पोहोंचियों की जोत सबसे अधिक है, जिनकी तरंगें सागर की तरह आकाश में फैलती हैं। कहीं अटकती नहीं।

बाजू बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार।।४९।।

बाजूबन्ध, पोहोंची और कड़े, आदि के आभूषणों की शोभा बेशुमार है। कोमल हाथों की रेखाओं की शोभा अति अपार है।

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी।
ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी।।५०।।

हाथ की मुंदरियों के रंगों की किरणें अलग-अलग लहरें ले रही हैं। जैसे-जैसे श्री राजजी महाराज उंगलियां चलाते हैं, वैसे-वैसे तेज की लहरें चलती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर।।५१।।

हाथ के नखों की जोत सबसे तेज है। उसका कैसे वर्णन करें? लगता है इनकी तेज किरणें सागर के समान आकाश में फैली हैं।

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल।
जो होए कछुए इस्क, तो इतथें न निकसे दिल।।५२।।

नखों के रंगों को देखूं, बनावट को देखूं, सलूकी की छवि या कोमलता या उज्ज्वलता को देखूं। यदि दिल में कुछ भी इश्क हो तो यहां से नजर हट नहीं सकती।

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज।
आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज।।५३।।

उंगलियां कैसी पतली और नरम हैं। इनकी सलूकी और तेज को देखकर लगता है कि जमीन के कण-कण में करोड़ों सूर्य उदय हो गए हैं, ऐसी रोशनी आसमान में फैल जाती है।

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए।।५४।।

श्री राजजी महाराज के पूर्ण स्वरूप की जो जोत है उस पर नजर नहीं टिकती और जिस शोभा पर नजर ही नहीं टिकती तो वह जबान से कैसे कही जाए?

यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब।
केहे सब का लेऊं पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब।।५५।।

इस तरह से श्री राजजी के वस्त्र, आभूषण, अंग सब चेतन हैं। आशिक रूह इनसे अपनी चाहना की पूर्ति चाहती है, क्योंकि उस समय रूह संसार में नहीं होती, परमधाम में होती है।

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों।
और अंग लग जाए ना सके, फारग न होए इनमों।।५६।।

रूह उस समय वस्त्रों और आभूषणों से वार्तालाप करती है। इनसे उसे फुरसत ही नहीं मिलती जिससे दूसरे अंग से बात कर सके।

ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन।।५७।।

श्री राजजी महाराज के सब वस्त्र, आभूषण चेतन हैं। आशिक रूहें इन सबसे जवाब मांगती हैं। रूहों के यह लक्षण हैं।

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर।
यासों लगी गुफ्तगोए में, सो छूटे नहीं क्योंए कर।।५८।।

आशिक की रूह जहां अटक जाती है अंग हो, वस्त्र हो या आभूषण हों। उससे गुझ बातें करने लगती है, इसलिए वह रूह की नजर से किसी तरह भी नहीं छूटते।

Nijanand App

इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख।
कई सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग-अंग में इश्क भरा है और वह कई तरह का सुख देते हैं। एक ही अंग में कई तरह के सुख हैं, इसलिए उनका वर्णन इस मुख से नहीं किया जा सकता।

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन।
या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन।।६० ।।

वस्त्र हों, आभूषण हों या जाहिरी या छिपे सुख हों, सब तरह के गुण शोभा व प्रेम से भरे हैं, जो श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं।

सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए।।६१ ।।

हक जात, मोमिन, रूहों के इश्क के सुख से इनके सभी अंग सुखी लगते हैं। बाहर के दिखाई देने वाले अंगों के सुख संसार की जबान से कहे नहीं जाते।

अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे।
कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए।। ६२ ।।

अंग के हों, वस्त्र या आभूषण के हों, सुख जाहिरी हो या बातूनी हो सभी प्रेम की मस्ती लेने वाले सुख होते हैं।

इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क।
अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक।। ६३ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क लेते हैं, देते हैं और दिखाते हैं। परमधाम का जर्रा-जर्रा सब इश्क का ही रूप है। श्री राजजी महाराज के अंग तथा स्वरूप सब इश्क के हैं।

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर।
हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर।। ६४ ।।

जिस किसी ने श्री राजजी महाराज का एक भी अंग देख लिया तो वह फिर बिना देखे एक पल भी नहीं रह सकती। अपना धनी जानकर अपने हृदय में वह स्वरूप बसा लेती है। फिर रूह किसी तरह से श्री राजजी महाराज से अलग नहीं होती।

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत।। ६५ ।।

श्री राजजी के सभी अंग रूह के दिल में आ जाते हैं और उनके स्वरूप में वह गर्क हो जाती है। फिर यह परमधाम की अंगना, हाय! हाय! इस संसार में कैसे रहती है?

चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, कांबी और कड़ला के जोड़े जब रूह अपने हृदय में ले लेती है, तो फिर श्री राजजी महाराज का पूरा स्वरूप भी दिल में आ जाता है।

Nijanand App

जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन।। ६७ ।।

इन चरणों को जो आभूषण शोभा देते हैं, वह सभी चेतन हैं और उनमें जाहेरी, बातूनी अनेक तरह के बेशुमार गुण हैं।

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए।
ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए।। ६८ ।।

उनके नगों में कोमलता है, बेशुमार चमक है और अपार खुशबू है। उन आभूषणों में से मनचाहे अनुसार ही आवाज निकलती है। इस तरह से श्री राजजी महाराज के चरणों के आभूषण शोभा देते हैं।

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित।
ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत।। ६९ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण गोरे रंग के हैं, जिन पर आभूषण और सिनगार सब शोभा देता है। यह आभूषण और सिनगार श्री राजजी महाराज के तन से कभी अलग नहीं हैं। यह बारीकी समझने की है।

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए।। ७० ।।

परमधाम की रूहों का ठिकाना श्री राजजी महाराज के चरण ही हैं, इसलिए इन चरणों को रूहें नहीं छोड़तीं, चरणों तले पड़ी रहती हैं।

अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव।। ७१ ।।

अर्श की रूहें श्री राजजी के चरणों की ही आशिक हैं और उन्हें यह सुन्दर अवसर मिल गया। अब जिनके कलेजे में घाव लग गए हैं, उन रूहों का चरणों के अतिरिक्त और कहीं ठिकाना नहीं है।

कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर।। ७२ ।।

चरणों के वस्त्रों, आभूषणों के रंगों और नगों की किरणें आकाश में फैलती हैं। इन सब किरणों के रंगों को चीरता हुआ चरणों के नख का तेज नहर के समान आगे जाता है।

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर।। ७३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की शोभा यहां की जबान से देखकर और सुनकर कहती हूं तो फिर संसार के झूठे सूर्य की उपमा अखण्ड चरण कमल को कैसे दी जा सकती है।

कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर।
कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर।। ७४ ।।

कमर में इजार की चुन्नटें हैं। वह जामे से अंग पर बैठी चमक रही हैं और इजार के नगों के कई रंग जामे में से बाहर से ही दिखाई देते हैं।

Nijanand App

और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्दोत।।७५ ।।

चरणों के आभूषणों का तेज बहुत सुन्दर है। इनमें नरमाई, खुशबू और मधुर स्वर हैं और इनका तेज आकाश तक झलकता है।

पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल।
ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल।।७६ ।।

चरण कमलों की तली का रंग लाल और अति उज्ज्वल है, जिसकी गहराई की रेखाएं और एड़ी बड़ी सुन्दर दिखाई देती हैं। श्री राजजी महाराज के ऐसे चरण कमल आशिक रूहों से कैसे छूटेंगे?

तली हथेली हाथ पांउं की, लाल अति उज्जल।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल।।७७ ।।

पांव की तली और हाथ की हथेलियां लाल और उज्ज्वल हैं और उनकी बीसों उंगलियां नरम और पतली हैं। इनके नाखून नर्म और चमकदार हैं।

काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक।।७८ ।।

हाथ-पांव के जो काड़े हैं अति कोमल हैं। वह पंजे और पिंडली अति सुन्दर हैं और शोभा देती हैं। ऐसी शोभा श्री राजजी महाराज के अंग की सदा बनी रहती है।

रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग, इन्द्रियों के रंग, जोत, तेज और चढ़ती हुई जवानी नित्य नई ही दिखाई देती है।

छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए।
कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए।।८० ।।

मुखारबिन्द की छवि, प्रसन्नता नित्य नई-नई दिखाई देती हैं। यह परमधाम के अखण्ड अंग हैं, इसलिए नजर में एक से एक अच्छे दिखाई देते हैं।

ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन।
अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन।।८१ ।।

यह अंग, वस्त्र, आभूषण और जवेर परमधाम के हैं, जिनकी सिफत को यहां के वचन नहीं लगते।

सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क।
सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग तथा गुण, अंग, इन्द्रियां इश्क की हैं। ऐसी श्री राजजी महाराज की शोभा है, जिसको यहां के शब्द वर्णन नहीं कर सकते।

Nijanand App

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक।। ८३ ।।

बार-बार जो दिल वर्णन करता है तो उससे शोभा अधिक से अधिक बढ़ती जाती है। यह शोभा अखण्ड परमधाम के तन और इश्क की है, जिसका बयान मैं रंचमात्र भी कर नहीं सकती।

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन बिध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ८४ ।।

अब तक मैं परमधाम को, सोने और नगों को तथा आभूषणों को संसार से मिलाती थी और सोचती थी वह चित्त में चाहे अनुसार पहनते हैं।

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए।
सो तो अर्स में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए।। ८५ ।।

एक को दूसरे से मिलावें तो घट-बढ़ हो। परमधाम में घट-बढ़ होती नहीं है, क्योंकि वहां कोई दूसरा है ही नहीं। सब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है।

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।। ८६ ।।

परमधाम के वस्त्र, आभूषण न तो किसी ने बनाए हैं, न घडे हैं, न जड़े हैं, न संवारे हैं। यह सब वस्त्र, आभूषण दिल चाहे अनुसार नगों के बने हैं।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।। ८७ ।।

परमधाम में पहनना, उतारना नहीं होता। दिल के चाहे अनुसार ही सिनगार बदल जाता है। जब जहां जैसी शोभा चाहिए, वह वहां पहले से ही दिखाई देती है।

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि तुम अपने को परमधाम की रूहें कहलाती हो और तुम्हारी परआतम मूल-मिलावे में बैठी है, तो एक क्षण के लिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं छोड़ना।

|| प्रकरण || १० || चौपाई || ८८७ ||

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।। १ ।।

सुन्दरसाथ मूल-मिलावा की हवेली में हिल-मिलकर जैसे एक ही अंग हों, चकित होकर बैठे हैं। सबके अंग से अंग मिले हैं और सबके दिल एक हैं।

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार।
सागर भरया सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार।। २ ।।

लगता है परमधाम में सब सखियों का रूप एक है और एक ही सिनगार है। यह सागर के समान एक रस भरा है, जिसमें कई तरह की तरंगें उठ रही हैं।

Nijanand App

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक।। ८३ ।।

बार-बार जो दिल वर्णन करता है तो उससे शोभा अधिक से अधिक बढ़ती जाती है। यह शोभा अखण्ड परमधाम के तन और इश्क की है, जिसका बयान मैं रंचमात्र भी कर नहीं सकती।

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन बिध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ८४ ।।

अब तक मैं परमधाम को, सोने और नगों को तथा आभूषणों को संसार से मिलाती थी और सोचती थी वह चित्त में चाहे अनुसार पहनते हैं।

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए।
सो तो अर्स में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए।। ८५ ।।

एक को दूसरे से मिलावें तो घट-बढ़ हो। परमधाम में घट-बढ़ होती नहीं है, क्योंकि वहां कोई दूसरा है ही नहीं। सब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है।

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।। ८६ ।।

परमधाम के वस्त्र, आभूषण न तो किसी ने बनाए हैं, न घडे हैं, न जड़े हैं, न संवारे हैं। यह सब वस्त्र, आभूषण दिल चाहे अनुसार नगों के बने हैं।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।। ८७ ।।

परमधाम में पहनना, उतारना नहीं होता। दिल के चाहे अनुसार ही सिनगार बदल जाता है। जब जहां जैसी शोभा चाहिए, वह वहां पहले से ही दिखाई देती है।

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि तुम अपने को परमधाम की रूहें कहलाती हो और तुम्हारी परआतम मूल-मिलावे में बैठी है, तो एक क्षण के लिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं छोड़ना।

|| प्रकरण || १० || चौपाई || ८८७ ||

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।। १ ।।

सुन्दरसाथ मूल-मिलावा की हवेली में हिल-मिलकर जैसे एक ही अंग हों, चकित होकर बैठे हैं। सबके अंग से अंग मिले हैं और सबके दिल एक हैं।

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार।
सागर भरया सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार।। २ ।।

लगता है परमधाम में सब सखियों का रूप एक है और एक ही सिनगार है। यह सागर के समान एक रस भरा है, जिसमें कई तरह की तरंगें उठ रही हैं।

Nijanand App

निलवट बेना चांदलो, हरी गरदन मुख मोर।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर।। ३ ।।

सभी सखियों के माथे पर बिंदा (टिक्का) बंधा है। उस बिंदा की बनावट ऐसी है जिसकी हरी गर्दन, नैन, चोंच, सिर, मुख सब मोर की बनावट है, जिनकी चोंचें दोनों तरफ हैं।

निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर।
जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर।। ४ ।।

सखियों की नाक में बेसर और नथनी शोभा देती है, जिसमें निर्मल मोती और बारीक नक्शकारी में नग जड़े हैं। इनका वर्णन कैसे करूं?

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल।
माहें मोती नंग निरमल, झांई उठत माहें गाल।। ५ ।।

सब सखियों के कानों में सुन्दर झाला (बड़ी बालियां) हैं, जिनमें निर्मल मोती और नग शोभा देते हैं और झांई गालों पर पड़ती है।

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत।
कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित।। ६ ।।

सब सखियों के गले में चार-चार हार शोभा देते हैं और गले में कण्ठसरी हारों के ऊपर शोभा देती है।

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन।। ७ ।।

एक हार हीरे का, दूसरा कंचन का, तीसरा मानिक का और चौथा मोतियों का है।

कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार।
कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार।। ८ ।।

इन हारों में कहीं डोरा, कहीं बादले, कहीं खजूरे बने हैं। परमधाम के ऐसे जवेरों का वर्णन कैसे करें?

हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग।
उज्जल लाल हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग।। ९ ।।

हाथों में चूड़ियां, नगों की नौघरी और अंगूठियां झलकती हैं। सभी की हथेलियां लाल हैं और पोहोंचे के ऊपर कई तरह के नगों के रंग शोभा देते हैं।

जैसे सरूप अर्स के, भूखन तिन माफक।
याही रवेस वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक।। १० ।।

परमधाम में सखियों के जैसे स्वरूप हैं आभूषण भी उन्हीं के अनुसार हैं। इस तरह वस्त्र और जवेरों की शोभा है। यह सखियां श्री राजश्यामाजी के अंग हैं।

Nijanand App

जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर।। ११ ।।

जैसी शोभा आभूषणों की है वैसी ही वस्त्रों की है। यदि आत्मदृष्टि से देखें तब स्वरूपों की शोभा का कुछ अनुभव हो।

वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कई जवेरों जोत।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्दोत।। १२ ।।

वस्त्रों के नगों, जवेरों की जोत का कैसे वर्णन करूं? सबकी तरंगें मिलकर एक हो जाती हैं और लगता है तरंगों का भण्डार भर गया है।

अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त।
अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत।। १३ ।।

परमधाम के नग बेशुमार हैं और जवेर भी अत्यन्त नर्म हैं। सब सामग्री अनन्त है जिससे बेशुमार सुगन्धि आती है।

कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक।
कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक।। १४ ।।

जवेरों के, आभूषणों के और रसायन के बहुत नाम हैं। कहां तक कहूं? एक अंग के आभूषणों के कई नाम हैं तो कहां तक उन का विस्तार करूं।

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर।
ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर।। १५ ।।

यदि हमारे पास जागृत बुद्धि हो तो सुन्दरसाथ के स्वरूप, मुख की कोमलता, सुन्दरता और गोरेपन की छवि हृदय में समा जाए।

रूहें सुन्दर सनकूल मुख, नहीं सोभा को पार।
घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार।। १६ ।।

रूहों के मुख सुन्दर और प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं, जिसकी शोभा बेशुमार है। सब सखियां एक सी हैं। कोई शोभा में घट-बढ़ नहीं हैं।

कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार।
भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरने उठें बेसुमार।। १७ ।।

कई रंग की साड़ियां शोभा देती हैं, जिनमें कई तरह के नगों के रंग झलकते हैं और इन जुदा-जुदा झलकारों से बेशुमार तरंगें उठती हैं।

हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग।
नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग।। १८ ।।

सखियों के सिनगार में कई तरह के नग और नग में रंग कई तरह की शोभा देते हैं।

Nijanand App

तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरनें न समाए।
यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए।।१९।।

तरंग-तरंग में कई किरणें उठती हैं और इस तरह से कई तरह के नगों के रंग की किरणें समाती नहीं हैं। सखियों की जोत सागर के समान जगमगाती है, जिससे पूरी हवेली में तेज ही तेज का भण्डार नजर आता है।

अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन।
क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन।।२०।।

अब सखियों के अंग की शोभा का वर्णन संसार के झूठे तन से कैसे करूं? कोई बोलने की जगह ही नहीं रही, क्योंकि यह शोभा अखण्ड परमधाम की है।

रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन।
प्रकास उद्दोत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन।।२१।।

मैंने नगों की, रंगों की, तरंगों की, किरणों की जोत तथा तेज का वर्णन किया है। वह सब संसार की जबान से किया है। मेरे शब्दों से ही वहां के तेज को समझ लेना जिसके नूर की शोभा बताई है।

ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत।
बीच कछू ना रेहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत।।२२।।

सखियां जैसे जुड़कर बैठी हैं वैसे उनको अरस-परस सुख मिलता है। श्री राजजी महाराज इस तरह से बिना किसी रुकावट के सखियों को अपने पास खींच लेते हैं।

जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन।
झांईं झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न।।२३।।

इस तरह से लगता है कि सारी हवेली एक सागर के समान एक ही जोत में भरपूर है, जिसकी झांई सागर की तरह भिन्न-भिन्न तरंगों में झलकती है।

ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत।
और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्दोत।।२४।।

ऊपर-नीचे की रोशनी तथा वस्त्र, आभूषणों और स्वरूपों का तेज सब जगह जगमगा रहा है। इसका वर्णन कैसे करूं?

ऊपर तले थंभ दिवालों, सब जोत रही भराए।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए।।२५।।

ऊपर-नीचे थंभों में, दीवारों में सब जगह जोत ही जोत जगमगा रही है और हवेली के बीच बैठे सुन्दरसाथ का तथा सुन्दरसाथ के बीच युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी का तेज जगमगा रहा है।

ए जोत में सोभा सुन्दर, और सरूपों की सुखदाए।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए।।२६।।

इस तेज में श्री श्यामाजी और रूहों के स्वरूपों की शोभा सुन्दर और सुखदाई है। इसे बार-बार देखने पर नख से शिख तक की शोभा भरपूर दिखाई देती है।

Nijanand App

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक।
एक रस एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक।। २७ ।।

जैसे तेज और जोत का एक सागर बह रहा हो, उसी तरह से सबके दिलों में एक ही सागर, रोशनी, रस दिखाई देता है। इस जबान से वहां का विवरण कैसे बताएं?

जोत उपली कही जुबांन सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन।
सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन।। २८ ।।

मैंने सिनगार में जो ऊपर की जोत का वर्णन किया है, उसके रहस्यों में सुख और शान्ति भरी है, परन्तु जब आत्मा की नजर से देखें तभी यह परआतम के सुख प्राप्त हो सकते हैं।

एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर।। २९ ।।

जब आत्मा और परआतम इश्क में एक रस हो जाएं तो प्रेम की तरंगें की तरंगें आएंगी और फिर रूहें इश्क के प्याले भर-भरकर पीकर श्री राजश्यामाजी के सामने होगी, अर्थात् जागृत हो जाएंगी।

क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त।
अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत।। ३० ।।

सभी सुन्दरसाथ के अंगों में एक ही दिल है, इसलिए वह अरस-परस नए-नए सुख को अंग में लेते हैं। यह सुख जो सबको मिलता है, कैसे बयान करूं?

साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम।
अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम।। ३१ ।।

सखियों का पूरा समूह श्री राजजी महाराज के इश्क में गर्क रहता है और उनसे एक रस होकर प्रेम और विलास के सुख लेता है, जिसका मैं कैसे वर्णन करूं?

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह।
हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह।। ३२ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज के अंग रूहों का दिल कितने हेत, प्यार और आनन्द से भरा है। इस संसार के झूठे तन की जबान से कहां तक वर्णन करूं।

सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान।। ३३ ।।

अन्तःकरण के सुख जबान पर नहीं आते? इस तरह से सखियों के प्रेम, प्रीति और रीति जो उनके अन्दर हैं, उसका कैसे बयान करूं?

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन।
इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन।। ३४ ।।

रूहें परमधाम के अखण्ड स्वरूप हैं और जिनकी अन्तर-आत्मा में इश्क का ही अंग है, उसका कुछ थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

Nijanand App

नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध।
रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध।। ३५ ।।

सखियों के नख से शिख तक सभी अंगों की नस-नस में इश्क भरा है और रोम-रोम में इश्क ही इश्क है, उसकी शोभा का वर्णन कैसे करूं?

अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवत।
बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन।। ३६ ।।

सखियों के मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार सब इश्क के हैं। इनका चितवन, बातें सब इश्क का है। इश्क के बिना और उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।

तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल।
पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल।। ३७ ।।

उनका नूरी तत्व, गुण, अंग, इन्द्रियां, पख सब इश्क में भीगे हैं और सभी इश्क में हिली-मिली हैं।

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अन्दर इस्क।
आतम अन्तस्करन विचारिए, जो कछू बोए आवे रंचक।। ३८ ।।

यदि आत्मा के अन्तःकरण से विचार कर देखें तो सखियों के अन्दर श्री राजजी महाराज के इश्क की कुछ थोड़ी सी खुशबू मिल सकती है।

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत।। ३९ ।।

परमधाम की जो कोई रूह यहां जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हुई हो और उसके अंग में इश्क आया हो तो कुछ सुगन्धि यहां मिल सकती है।

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन।। ४० ।।

फिर पिया के नैनों से नैन मिलाएं जिससे अधिक आनन्द प्राप्त हो। तब आत्मा के अन्दर से प्रेम रस का पीना सम्भव हो सकता है, जो आत्मा से उत्पन्न होता है।

आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख।। ४१ ।।

आत्मा के अन्तःकरण में विचार करने में अपने को जो सुख का अनुभव होता है, वह बढ़ते-बढ़ते प्रेम में बदल जाता है और परआतम नजर आने लगती है।

इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन।। ४२ ।।

मूल-मिलावे से अपनी नजर को नहीं हटाना। आंखों पर पलक भी नहीं झपकना। अच्छी तरह से श्री राजश्यामाजी के स्वरूप को देखें तो इससे अपनी आत्मा को चैन और करार मिलेगा।

Nijanand App

तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए।।४३।।

फिर जो प्रेम उत्पन्न होगा उसका रस परआतम को पहुंच जाएगा, तब श्री राजजी महाराज के नैनों से नजर मिलेगी और इशारों से बातें हो जाएंगी, तब आत्मा की नजर खुलेगी।

अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए।
तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए।।४४।।

जब आत्मा के अन्तस्करण में पिया का प्रेम समा जाता है, तब आत्मा और परआतम एक हो जाती है। कुछ भेद रह नहीं जाता।

परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए।।४५।।

हमारी परआतम के अन्दर पहले जो चाहना पैदा होती है, वही इस संसार की हमारी आत्मा के तन में सुख आते हैं।

ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल।।४६।।

इसलिए अब युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी को अपनी आत्मा के हृदय में बिठा लो और फिर वहां से सुरता को नहीं हटाओ, बल्कि बार-बार इन स्वरूपों पर वारी-वारी जाओ।

सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत।
रस भस्त्रो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्दोत।।४७।।

श्री राजश्यामाजी के रस भरे मुखारबिन्द की जोत और तेज का कैसे वर्णन करूं? क्योंकि मेरे रसिया दूल्हा में नित्य ही नई-नई कलाएं दिखाई देती हैं।

कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए।
ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए।।४८।।

कभी कमी नजर आए तो कहें कि कला अधिक है। यहां तो इश्क के रस की बड़ी-बड़ी तरंगें हैं। ऐसा श्री राजजी महाराज अपना अद्‌भुत प्रेम दिखा रहे हैं।

बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन।।४९।।

अब ऐसे स्वरूप की शोभा पर वस्त्र, आभूषण पर, मीठी मुस्कान पर पल-पल बलिहारी जाऊं।

बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन।।५०।।

श्री राजजी महाराज की बांकी पाग पर, तिरछे नैनों पर, तिरछी नजर पर, चतुराई और चैन पर बलि-बलि जाती हूं।

Nijanand App

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल।
बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज की तिरछी चितवन, तिरछी चाल और तिरछे वचन, जिन्होंने मेरी तिरछी हालत कर दी है। उस पर मैं बलिहारी जाती हूं।

बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल।।५२ ।।

रसिया की रसीली छवि पर, दांतों पर, मुख के खाए पान की लालिमा पर और रात-दिन इश्क के रंग में रंगे अंगों पर बलिहारी जाती हूं।

बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत।।५३ ।।

पियाजी के मीठे मुख से हम रूहें अमीरस पान करते हैं और पल-पल अपनी रूहों को बड़े प्यार से कई तरह के सुख देते हैं।

बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल।।५४ ।।

अपने धनी के चरण कमलों पर, हस्त कमल पर, नख से शिख तक सभी अंगों पर पल-पल वारी वारी जाती हूं।

बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत।।५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पियाजी के प्रेम पर, प्यार भरी चितवन (नजर पर) तथा सब अंगों पर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ९४२ ।।

सागर पांचमा इस्क का

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर।। १ ।।

[रंग महल के वायब (पच्छिम और उत्तर के) कोने में घृत सागर] पांचवां इश्क का सागर गहरा और गम्भीर है, जिसके इश्क के प्याले अर्श की रूहें बड़े प्यार से पीती हैं।

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर।। २ ।।

इस इश्क के सागर में श्री राजश्यामाजी युगल किशोर के रस की लहरें आती हैं और यह पांचवां सागर अति सुखदाई है।

Nijanand App

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल।
बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल।।५१ ।।

श्री राजजी महाराज की तिरछी चितवन, तिरछी चाल और तिरछे वचन, जिन्होंने मेरी तिरछी हालत कर दी है। उस पर मैं बलिहारी जाती हूं।

बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल।।५२ ।।

रसिया की रसीली छवि पर, दांतों पर, मुख के खाए पान की लालिमा पर और रात-दिन इश्क के रंग में रंगे अंगों पर बलिहारी जाती हूं।

बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत।।५३ ।।

पियाजी के मीठे मुख से हम रूहें अमीरस पान करते हैं और पल-पल अपनी रूहों को बड़े प्यार से कई तरह के सुख देते हैं।

बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल।।५४ ।।

अपने धनी के चरण कमलों पर, हस्त कमल पर, नख से शिख तक सभी अंगों पर पल-पल वारी वारी जाती हूं।

बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत।।५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पियाजी के प्रेम पर, प्यार भरी चितवन (नजर पर) तथा सब अंगों पर मैं बार-बार बलिहारी जाती हूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ९४२ ।।

सागर पांचमा इस्क का

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर।। १ ।।

[रंग महल के वायब (पच्छिम और उत्तर के) कोने में घृत सागर] पांचवां इश्क का सागर गहरा और गम्भीर है, जिसके इश्क के प्याले अर्श की रूहें बड़े प्यार से पीती हैं।

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर।। २ ।।

इस इश्क के सागर में श्री राजश्यामाजी युगल किशोर के रस की लहरें आती हैं और यह पांचवां सागर अति सुखदाई है।

Nijanand App

अति सुख बड़ीरूह को, इस्क तरंग अतंत।
मुख मीठी अपनी रूह को, रस रसना पिलावत।। ३ ।।

इस पांचवें इश्क के सागर में श्री श्यामाजी महारानी को इश्क के सुख की बड़ी-बड़ी तरंगें आती हैं। श्री राजजी महाराज अपने मीठे मुखारबिन्द की रसना से अपनी श्यामाजी को इश्क का रस पिलाते हैं।

हेत कर इन रूहन की, प्यार सों बात सुनत।
सो वचन अन्दर लेय के, मुख सामी बान बोलत।। ४ ।।

वह बड़े प्यार से इन रूहों की बातें सुनते हैं और रूहें श्री राजजी महाराज के वचनों को समझकर सामने मीठी वाणी से बोलती हैं।

नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत।
अपने अंग रूहें जानके, नेह नए नए उपजावत।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों से नैनों से नैन मिलाकर अमी रस पिलाते हैं और अपनी अंगना जानकर नए-नए सुख उपजाते हैं।

सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब।
ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब।। ६ ।।

श्री श्यामाजी के तथा श्री राजजी के सुख बेहिसाब हैं। इनका वर्णन कैसे करूं? यह सुख वही रूहें जानती हैं, जिन्होंने इनके इश्क की मस्ती पी है।

रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान।
ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज रस भरी रसना और सुन्दर रस भरी बोली से बोलते हैं श्री राजजी महाराज जो सुख इस तरह से अपनी रसना से देते हैं, वह कैसे कहे जाएं?

कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार।
ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की रस भरी बोली में कई तरह के सुख हैं, जो प्यार करके अपने अंग श्री श्यामाजी और श्री श्यामाजी के अंग रूहों को देते हैं, जिससे ऐसा लगता है कि माशूक श्री राजजी महाराज अपने आशिक श्यामा महारानी और रूहों को सुख दे रहे हों।

नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल।
देत हैं जब हेत सुख, चुभ रेहेत रूह के दिल।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र रसीले, मद भरे, प्रेम और प्रीति में भीगे हैं और जब बड़े प्यार से यह सुख रूहों को देते हैं तो यह रूहों के दिल में चुभ जाते हैं।

इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर।
फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर।। १० ।।

जब श्री राजजी महाराज अपने नैनों को मरोरकर इश्क की मस्ती के प्याले पिलाते हैं तो इश्क रस रूह के तालु में जाते ही जोरदार अखण्ड मस्ती चढ़ जाती है।

Nijanand App

कई सुख अंग सरूप के, कई सुख रंग रसाल।
कई सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के कई तरह के सुख हैं और कई तरह के सुख उनकी रस भरी वाणी में हैं। उनकी मीठी जबान के कई सुख अमीरस के प्याले भर-भरकर रूहों को देते हैं।

कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बनमाली।
इन विध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली।। १२ ।।

जैसे माली बगीचे में पौधे को सींचता है, उस तरह से अमी रस के सुख नैनों द्वारा श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं तो फिर रूहें क्यों न मस्ती में लाल गुलाल हो जाएं?

जो कछू बोले रूह मुखथें, सो नीके सुनें हक कान।
ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई ना सुख इन समान।। १३ ।।

रूह जो कुछ मुख से बोलती है श्री राजजी महाराज अच्छी तरह से उसको सुनते हैं। ऐसी रस भरी रसना से उनको जवाब देते हैं कि उस सुख की बराबरी नहीं है।

अरस-परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार।
ए रस इस्क सागर को, अर्स रूहें पीवें बारंबार।। १४ ।।

श्री राजजी और रूहें अरस-परस (आपस में) सुख देते हैं। जिस सुख का शुमार नहीं है। ऐसे इश्क के सागर के रस को रूहें बार-बार पीती हैं।

ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक।
पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक।। १५ ।।

यह पांचवां सागर श्री राजजी महाराज के दिल में भरपूर इश्क का है जो बेहद सुखदाई है। पहले चार सागरों को देखा, परन्तु हक के दिल इश्क सागर के माफिक कोई नहीं था।

हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इस्क।
क्यों न देखो पट खोल के, नजर खोली है हक।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को खेल इश्क के ब्यौरे के वास्ते दिखाया है। अब श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से नजर खोल दी है, तो अपनी नजर के सामने आया। माया के परदे को क्यों नहीं हटाती?

इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक।
पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इस्क।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावे में बैठे-बैठे ही अपनी साहेबी दिखाई है, इसलिए हे मेरी आत्मा! अब तू श्री राजजी महाराज के दिल में घुसकर इश्क के प्याले पी।

तो हकें कह्या अर्स अपना, इस्क दिल मोमिन।
सो इस्क करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन।। १८ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श और उनको इश्क के तन बताया है, तो अब श्री राजजी महाराज अपने इश्क के तनों (मोमिनों) के दिलों में बैठकर अपने इश्क को जाहिर करते हैं।

Nijanand App

इस्क गुझ दिल हक का, सो करे जाहेर माहें खिलवत।
सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इस्कें जाहेर न्यामत।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज अपने दिल के गुझ इश्क को खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में ही जाहिर करते हैं। वह खिलवतखाना अब श्री राजजी महाराज आशिक बनकर मोमिनों के दिल में ले आए और इश्क की न्यामत को जाहिर कर रहे हैं।

इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत है जे।
जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इस्क के।। २० ।।

हे रूहो! इस चौदह लोक की दुनियां में एक सांस भी आता है तो उसे जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से देखो तो यह सब इश्क के वास्ते है।

ए इस्क सब हक का, अर्स हादी रूहों सों।
ए अर्स दिल जाने मोमिन, जो हक की वाहेदत मों।। २१ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज का इश्क है जो श्यामा महारानी और रूहों से करते हैं, जिसको मोमिन ही जानते हैं, जिनका दिल अर्श है और परआतम मूल-मिलावे में बैठी है।

ए किया एतेही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह।
ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इस्क सनेह।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे रूहो! इतने के वास्ते ही यह खेल तुमको दिखाया है। अब खेल में जुदा-जुदा होकर मेरे इश्क (प्यार) को देखो।

ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार।
ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार।। २३ ।।

इस इश्क के सागर का आरपार नहीं मिलता यह बेशुमार है। इस इश्क के सागर की लहरों के सुख श्री राजजी महाराज अपनी सोहागिनी अंगनाओं को ही देते हैं।

जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लज्जत।
और बड़े सुख कई अर्स के, पर ए निपट बड़ी न्यामत।। २४ ।।

यदि तुम्हारी आत्मदृष्टि श्री राजजी महाराज खोल दें, तो तुम्हें श्री राजजी के इश्क की लज्जत आए। परमधाम के कई बड़े सुख हैं, पर उनमें सबसे बड़ी इश्क की ही न्यामत है।

लेहेरी इस्क सागर की, जो तूं लेवे रूह इत।
तो तूं देखे सुख इस्क के, ए होए ना बिना निसबत।। २५ ।।

हे मेरी आत्मा! यदि तू इश्क के सागर की लहरों के सुख यहां ले तो तुझे इश्क के सुख का पता चले, परन्तु यह बिना सम्बन्ध के मिलता नहीं है।

और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद।
इन हक इस्क सागर की, कई नेहेरें सुख स्वाद।। २६ ।।

इन सुख के सागर की लहरों में खिलवतखाना (मूल-मिलावा) याद आता है। श्री राजजी महाराज के इश्क के सागर की कई लहरों के सुख के स्वाद मिलते हैं।

Nijanand App

यों सुख इस्क सागर को, धनी प्यारें देत रूहन।
सो इत देखाए मेहेर कर, जो इस्कें किए रोसन।। २७ ।।

इस तरह इश्क के सागर के सुख श्री राजजी महाराज रूहों को प्यार से ही देते हैं। वह सुख श्री राजजी महाराज ने मेहर करके रूहों को इश्क से दिखाए हैं।

जो सुख इस्क सागर को, माहें हेत प्रीत तरंग।
ए जो अर्स अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के सागर के जो सुख हैं, उनमें प्रेम और प्रीति भरी तरंगें हैं। जिससे परमधाम की रूहों को खिलवतखाना (मूल-मिलावा) के आनन्द मिल जाएं।

जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब।
ए कायम मस्ती अर्स की, जो साकी पिलावे आब।। २९ ।।

हे मेरी आत्मा! यदि श्री राजजी महाराज तुझे हिम्मत देवें तो तू इश्क की शराब को पी। श्री राजजी महाराज इश्क की जो मस्ती पिलाते हैं, वह परमधाम की अखण्ड मस्ती है।

सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार।
सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के सुख बेशुमार हैं। हे मेरी रूहों! विचार करके देखो तो इश्क को देखने का ठिकाना इसी माया के ब्रह्माण्ड में है।

जेते सुख इस्क के, लेते अर्स के माहें।
सो देखन की ठौर एह है, और ऐसा न देख्या क्यांहें।। ३१ ।।

परमधाम में जितने इश्क के सुख लेते थे, उन सुखों को देखने का ठिकाना यही संसार है और कोई जगह ही नहीं है।

कबूं अर्स में न होए जुदागी, न जुदागी ए न्यामत।
ए बातें दोऊ अनहोनियां, सो हक हम वास्ते करत।। ३२ ।।

परमधाम में कभी जुदाई होती नहीं है और बिना जुदाई के इश्क देखा नहीं जा सकता। यह दोनों अनहोनी बातें श्री राजजी महाराज हमारे वास्ते कर रहे हैं।

इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत।
वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित।। ३३ ।।

इश्क का स्वाद बिना जुदाई के नहीं मिलता। वह जुदाई यहां मिल गई है। घर की सब हकीकत भी श्री राजजी महाराज ने बतला दी है। अब ऐसा मौका फिर कभी नहीं मिलेगा।

फेर कब जुदागी पाओगे, छोड़ के हक अर्स।
बैठे खेल में पिओगे, हक इस्क का रस।। ३४ ।।

परमधाम और श्री राजजी महाराज को छोड़कर अब दुबारा कब अलग होओगे? अब खेल में बैठकर श्री राजजी महाराज के इश्क के रस को पीओ।

Nijanand App

याद करो इस्क को, कायम अर्स में लेते जो सुख।
अलेखे अनगिनती, सो देत लज्जत माहें दुख।। ३५ ।।

उस इश्क को याद करो जिससे अखण्ड परमधाम में बेशुमार (अनगिनत) सुख लेते थे। अब उन सुखों का स्वाद संसार में मिलता है।

जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक।
तो फुरसत न पाओ दमकी, सुख इस्क गिनती हक।। ३६ ।।

यदि जागृत बुद्धि से दिल में विचार कर देखो तो माया के इस संसार में इश्क के सुखों को गिनने से एक पल की भी फुर्सत नहीं मिलेगी।

ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह।
तो कई देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते ही जागृत बुद्धि से आत्मदृष्टि खोल दी है, जिससे श्री राजजी महाराज के प्रेम और स्नेह के छिपे रहस्यों को देख सको।

ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर।
तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज जब पूरी मेहर करेंगे, तब तुम्हारी पूरी नजर खुलेगी तो फिर श्री राजजी के इश्क के बिना सारी दुनियां जहर के समान लगेगी।

हकें मेहेर बिध बिध करी, पर किन किन खोली न नजर।
सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हांसी कर।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज तो तरह-तरह से मेहर करते हैं, परन्तु किसी-किसी ने अपनी आत्मदृष्टि से उन्हें पहचाना नहीं है। यह भी इश्क के वास्ते ही हुआ है, जिसकी बातें खेल खत्म होने पर हंसते हुए करेंगे।

खेल बनत याही बिध, एक भागे एक लरे।
इनकी हांसी बड़ी होएसी, जब घरों बैठ बातां करे।। ४० ।।

खेल तो उसी को कहते हैं जिसमें कोई मारकर भाग जाए और कोई खड़ा होकर लड़ता रहे, पर जब परमधाम में जागकर खेल की बातें करेंगे तो इन पर बड़ी हंसी होगी जो यहां लड़ाई-झगड़े में लगे हैं।

ए खेल सोई हांसी सोई, और सोई हक का इस्क।
सो सब वास्ते हांसीय के, जो इत तुमें किए बेसक।। ४१ ।।

यह वही खेल है और वही हंसी है जिसको परमधाम में इश्क के बेवरा के वास्ते मांगा था, इसलिए अब तुम्हें इश्क की पहचान दी है, जिससे तुम्हें इश्क की सुध हो जाए।

जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इस्क अपार।
सोई हांसी देखे आप पर, तो क्यों कहूं औरों सुमार।। ४२ ।।

यहां संसार में यदि आंखें खोलकर देखो तो श्री राजजी महाराज का इश्क बेशुमार है। जब अपने इश्क की रहनी को देखकर हंसती हूं तो औरों की क्या हकीकत बताऊं?

Nijanand App

मैं बोहोत हांसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक।। ४३ ।।

मैंने अपने ऊपर ही बेशुमार हंसी को देखा। श्री राजजी महाराज के बेशुमार इश्क को देखा। यह दोनों की पहचान श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि ने कराई।

मोको धनिएं देखाइया, सब इस्क चौदे तबक।
इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक।। ४४ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने इन चौदह तबक में ऐसा इश्क दिखाया कि सब जगह श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना और कुछ दिखाई ही नहीं देता।

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां भई।
रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही।। ४५ ।।

मेरी तो तसल्ली हो गई है। अब जो जागृत हो जाए वह स्वयं देख ले। रूह जिसे देख लेती है वह दिल में नहीं आता तो जबान से कैसे कहा जाए?

ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत।
अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित।। ४६ ।।

यह तो मैंने खेल की बात बताई है। अब परमधाम की हकीकत यहां कैसे कहूं? अर्श के इश्क का बयान तब करूं जो कहीं थोड़ा सा ठिकाना मिले।

मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत।। ४७ ।।

श्री महामतिजी मोमिनों को कहते हैं कि यह मेरी बीती बात है जो भी परमधाम की रूह हो वह समझ लेना कि अब इससे अधिक कहने की कोई बात बाकी नहीं रही है। यह तो मैंने तुमको अपना सम्बन्धी जानकर थोड़ा सा बताया है।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ९८९ ।।

सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम।। १ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में मधु सागर है जो खुदाई इलम का सागर है, इसमें कोई संशय बाकी नहीं है। इसमें श्री राजजी महाराज का हुकम है, अर्थात् छठा सागर हुकम का स्वरूप है।

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत।
ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित।। २ ।।

अक्षर ब्रह्म की योगमाया श्री राजजी महाराज के हुकम के तले है। हुकम के अनुसार काम करती है। यह मैंने अच्छी तरह देखा है। हक इलम से सब संशय मिट गए।

Nijanand App

मैं बोहोत हांसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक।।४३।।

मैंने अपने ऊपर ही बेशुमार हंसी को देखा। श्री राजजी महाराज के बेशुमार इश्क को देखा। यह दोनों की पहचान श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि ने कराई।

मोको धनिएं देखाइया, सब इस्क चौदे तबक।
इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक।।४४।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने इन चौदह तबक में ऐसा इश्क दिखाया कि सब जगह श्री राजजी महाराज के इश्क के बिना और कुछ दिखाई ही नहीं देता।

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां भई।
रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही।।४५।।

मेरी तो तसल्ली हो गई है। अब जो जागृत हो जाए वह स्वयं देख ले। रूह जिसे देख लेती है वह दिल में नहीं आता तो जबान से कैसे कहा जाए?

ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत।
अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित।।४६।।

यह तो मैंने खेल की बात बताई है। अब परमधाम की हकीकत यहां कैसे कहूं? अर्श के इश्क का बयान तब करूं जो कहीं थोड़ा सा ठिकाना मिले।

मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत।।४७।।

श्री महामतिजी मोमिनों को कहते हैं कि यह मेरी बीती बात है जो भी परमधाम की रूह हो वह समझ लेना कि अब इससे अधिक कहने की कोई बात बाकी नहीं रही है। यह तो मैंने तुमको अपना सम्बन्धी जानकर थोड़ा सा बताया है।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ९८९ ॥

सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम।।१।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में मधु सागर है जो खुदाई इलम का सागर है, इसमें कोई संशय बाकी नहीं है। इसमें श्री राजजी महाराज का हुकम है, अर्थात् छठा सागर हुकम का स्वरूप है।

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत।
ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित।।२।।

अक्षर ब्रह्म की योगमाया श्री राजजी महाराज के हुकम के तले है। हुकम के अनुसार काम करती है। यह मैंने अच्छी तरह देखा है। हक इलम से सब संशय मिट गए।

Nijanand App

आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए।
जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए।। ३ ।।

आसमान-जमीन के बीच में तथा चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को भी पारब्रह्म के नाम, ठाम, लीला और स्वरूप का ज्ञान नहीं था। जब संसार के संशय नहीं मिटेंगे, तो अखण्ड कैसे होगा?

अव्वल से आखिर लग, इत जरा न कहूं सक।
रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक।। ४ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से सभी के संशय मिट गए। आदि नारायण से आज तक जो संसार भ्रम में पड़ा था, अब सबके संशय मिट गए। अब चौदह लोक अखण्ड हो जाएंगे।

इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक।। ५ ।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में पारब्रह्म के इश्क की सुध किसी को न थी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने आशिक बनकर अपने जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम वाणी) से इस संसार को पहचान कराई। अब सब पारब्रह्म के इश्क को लेकर बहिश्तों में कायम होंगे।

ए दुनियां पैदा किन करी, हुती न काहूं खबर।
सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखिर।। ६ ।।

इस दुनियां वालों को तो यह भी खबर नहीं थी कि दुनियां किसने पैदा की है? सभी अपनी-अपनी अटकल से खोज-खोजकर थक गए। अब जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के ज्ञान से सबके संशय मिट गए।

वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक।
खोल हकीकत मारफत, किन काढ़ी न सुभे सक।। ७ ।।

वेद और कतेब के ज्ञान से भी किसी को पारब्रह्म की सुध बिल्कुल नहीं मिली। हकीकत और मारफत के ज्ञान के बिना किसी के संशय मिटे नहीं।

बड़े सात निसान आखिर के, जासों पाइए कयामत।
खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत।। ८ ।।

कयामत के बड़े निशान जो कुरान ने बताए हैं, जो कोई खोल नहीं सका। उनको खोलने का खिताब इमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथजी को था, जिन्होंने अब सब छिपे भेदों को जाहिर कर सबको समझा दिया है।

आजूज माजूज लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब।
ईसा मारे दज्जाल को, एक दीन करसी सब।। ९ ।।

आजूज-माजूज सारी दुनियां को खा जाएंगे और सूर्य पच्छिम से उदय होगा, ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) दज्जाल को मारकर एक पारब्रह्म की पूजा कराएंगे।

दाभा होसी जाहेर, मेंहेंदी मोमिनों इमामत।
उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत।। १० ।।

दाभतूल जानवर पैदा होगा और इमाम मेंहेंदी साहेब अपने मोमिनों के साथ जाहिर होंगे। दुनियां का न्यायाधीश बनकर सबका हिसाब लेकर आठ बहिश्तों में कायम करेंगे। कायमी के वक्त असराफील फरिश्ता ज्ञान का बिगुल बजाएगा।

Nijanand App

काफर और मुनाफक, हंसते थे महंमद पर।
सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखिर।। ११ ।।

रसूल साहब की भविष्यवाणी पर काफिर और दोगले लोग हंसा करते थे। मुहम्मद साहब के कहे अनुसार अब आखिरत का समय आ गया है।

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
करें सिफायत आखिर, खासल खास उमत।। १२ ।।

बसरी, मलकी, हकी मुहम्मद साहब की तीनों सूरतें जो कुरान में कही थीं, अब श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गई हैं। अब ब्रह्मसृष्टियां दुनियां को कायम करने की सिफारिश करेंगी।

नोट—कयामत के सारे निशानों का विवरण खुलासा ग्रंथ में हो चुका है और मारफत सागर में भी दुबारा किया गया है कृपया वहां देखें।

करम-कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत।
दुनियां चौदे तवक में, किन खोली ना हकीकत।। १३ ।।

चौदह तबक की दुनियां में सभी कर्मकाण्ड और शरीयत के रास्ते पर चलते थे। उनमें किसी-किसी ने उपासना (तरीकत) का ज्ञान पाया, परन्तु हकीकत के भेद किसी ने नहीं खोले।

नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत।
नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत।। १४ ।।

मृत्युलोक और बैकुण्ठ, अर्थात् चौदह लोक के मिटने वाले ब्रह्माण्ड को अक्षर ब्रह्म की सुध नहीं थी। यहां के पढ़े-लिखे लोग अखण्ड परमधाम को लाहूत कहते तो हैं, परन्तु सुध नहीं है।

ए सुध न पाई काहू ने, क्यों है कहां ठौर विध किन।
खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन।। १५ ।।

लाहूत (अखण्ड परमधाम) कहां है, कैसा है, इसकी सुध किसी को नहीं मिली। चौदह लोक के लोगों ने खोजा, परन्तु पहचान किसी को नहीं हुई।

सो इलम खुदाई लदुन्नी, पोहोंच्या चौदे तबक।
सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक।। १६ ।।

अब वह खुदाई इलम (जागृत बुद्धि का ज्ञान) चौदह लोक में पहुंच गया है। अब श्री राजजी महाराज की मेहर से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर सबके संशय मिटाएंगे।

अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक।। १७ ।।

कुरान में पहले ही कहा है कि पारब्रह्म न्यायाधीश बनकर आएंगे और सारे संसार का हिसाब लेकर निश्चित ही अपनी मेहर से अखण्ड करेंगे।

ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम।
ए सुध काहू ना परी, कहां अर्स बका खसम।। १८ ।।

यह खेल किसके वास्ते किसके हुकम से बना है? अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म अक्षरातीत धाम के धनी कहां हैं? इसकी सुध किसी को नहीं मिली।

Nijanand App

गिरो रूहें फरिस्ते लैल में, किन वास्ते आए उतर।
कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातिर।। १९ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि खेल में किस कारण से उतरी हैं? किसने किसके वास्ते कुंन कहकर दुनियां को पैदा किया? यह खबर किसी को नहीं थी।

किन कौल किया बीच अर्स के, अरवाहें जो मोमिन।
सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन।। २० ।।

रूह मोमिनों से परमधाम में आखिरत के समय आने का वायदा किसने किया था? वेद और कतेब के पढ़ने वालों में किसी ने भी इस हकीकत को नहीं जाना।

ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक।
सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक।। २१ ।।

अब पारब्रह्म की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह हकीकत सबको समझ आ गई। चौदह लोक के जीव जो जन्म-मरण के चक्कर में पड़े थे, इस जागृत बुद्धि के तारतम वाणी से अखण्ड हो गए।

क्यों सदर-तुल-मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम।
क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम।। २२ ।।

अक्षरधाम और परमधाम, क्यों, कैसा, और कहां है? पारब्रह्म का स्वरूप कैसा है? उनकी लीला कैसी है? यह सुध किसी को नहीं थी।

क्यों अर्स आगूं जोए है, क्यों अर्स ढिग है ताल।
क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल।। २३ ।।

रंग महल के आगे जमुनाजी कैसी बहती है? रंग महल के पास हौज कौसर ताल कैसा है? पशु-पक्षी परमधाम के कैसे हैं? कैसे वहां के बगीचे सुन्दर फूल से लाल गुलाल हैं?

क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के।। २४ ।।

परमधाम में खासल खास रूहें कैसी हैं? दूसरी ईश्वरीसृष्टि जिनको अक्षर की सुरता कहा गया है, कैसी हैं?

ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल।। २५ ।।

परमधाम के सभी नाम, निशान कुरान में लिखे है, जिसमें रसूल साहब ने बताया है कि परमधाम की जमीन निर्मल और खुशबूदार है। उन्होंने और भी बताया है कि जमुनाजी और हौज कौसर ताल का जल दूध के समान मिश्री जैसा मीठा है।

जोए किनारे जरी द्योहरी, पूर जवेर दरखत।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत।। २६ ।।

कुरान में रसूल साहब ने लिखा है कि जमुनाजी के किनारे जवेरों से जड़े हैं और किनारे पर द्योहरियां बनी हैं और पाल के ऊपर जवेरों के वृक्ष शोभायमान हैं। यह सब निशान कुरान में लिखे तो हैं, परन्तु इस हकीकत को कोई जानता नहीं।

Nijanand App

नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद।
ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग कहूं न हद।। २७ ।।

रसूल साहब ने जो कुरान में कहा था वह सत्य है। इस वास्ते मैं थोड़ा-थोड़ा उन निशानों की हकीकत को जाहिर करती हूं। अब अक्षर के पार परमधाम का ज्ञान प्राप्त हो गया है जो बेशुमार है। कहां तक उसे कहें ?

इलम खुदाई लदुन्नी, रूह अल्ला ल्याए इत।
उमियों पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान श्यामा महारानी लेकर आई हैं। जिसके द्वारा उमियों (मोमिनों) को अखण्ड घर की पहचान कराकर अपनी अंगना जानकर परमधाम में जगा दिया।

ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन।
रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन।। २९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का बल आज दिन तक कोई जानता नहीं था। अब श्यामा महारानी के पैगाम तारतम वाणी से ब्रह्मसृष्टियों को अखण्ड घर की पहचान हो गई है।

ए कायम अर्स अपार है, जो कहावत है वाहेदत।
कोई पोहोंचे न अर्स रूहों बिना, जिनकी ए निसबत।। ३० ।।

अखण्ड परमधाम की शोभा बेशुमार है और यहां पर सब एकदिली है। रूह मोमिन जो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, उनके सिवाए यहां कोई नहीं आ सकता।

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक।
ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब खिलवत का इस्क।। ३१ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने सब संसार के संशय मिटाकर श्री राजजी महाराज के छिपे खिलवतखाना के इश्क की बातें बता दीं।

ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसबत।
ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी के बल को देखो। जिसने मोमिनों को उन श्री राजजी महाराज की अंगना होने की पहचान करा दी। अब मोमिन ने अपनी परआत्मा और मूल-मिलावा की एकदिली को पहचान लिया।

ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत।। ३३ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हुई और उनके दिल के छिपे भेदों की जानकारी भी इस ज्ञान से मिली।

कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसबत।
और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत।। ३४ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से रूहें, श्री श्यामाजी के अंग है और श्री श्यामा महारानी और रूहें श्री राजजी महाराज के अंग हैं, की पहचान हुई और खिलवतखाना (मूल-मिलावे) का ज्ञान हुआ।

Nijanand App

ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इस्क।
जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझे रूह बेसक।। ३५ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से श्री राजजी महाराज के इश्क की अच्छी तरह से पहचान हो गई। रूहों को समझाने के वास्ते ही इकट्ठा बिठाकर जुदा किया है, ताकि रूहों को इश्क की हकीकत का पता लग जाए।

ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की।
सो सब समझी जात हैं, हैं अर्स की गुझ जेती।। ३६ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज के दिल की और परमधाम के सब छिपे रहस्य समझ में आ जाते हैं।

देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक।
आखिर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावें बेसक।। ३७ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से कुरान में जो श्री राजजी महाराज ने इशारतें लिख रखी थीं कि आखिरत के समय खुद खुदा रसूल बनकर आएंगे और सबको अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सब छिपे रहस्य जाहिर करेंगे।

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर।। ३८ ।।

जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान की शक्ति को देखो तो रूहों को श्री राजी महाराज ने अपने चरणों में बिठाकर अलग कर रखा है और खुद अपने संदेशे अपने जुदा-जुदा नाम रखकर (कभी श्री कृष्णजी, मुहम्मद साहब, श्री देवचन्द्रजी, कभी महामति) दे रहे हैं।

बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इस्क।
तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का बल कैसे कहूं? जिससे श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बातें व इश्क के सागर की लहरें नासूत में आ गईं।

बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक।
सो रूहों सांच कर देखाइया, बन्ध बांधे कई बुजरक।। ४० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी की शक्ति का कैसे बयान करूं? जिसने इस झूठे खेल को सत्य करके अपनी रूहों को दिखाया। इसको दिखाने के वास्ते कई बन्ध बांधे, अर्थात् अखण्ड परमधाम रूहें, इलम, इश्क, असराफील, श्री राजजी महाराज नाचीज ब्रह्माण्ड में आ गए और ब्रह्माण्ड फिर भी खड़ा है।

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए।
सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अर्स के बैठाए।। ४१ ।।

तारतम ज्ञान की शक्ति को देखो कि रूहें चौदह तबक में आईं और उन्होंने परमधाम में बैठकर झूठे खेल को देखा।

इन हकका इस्क दुनी मिने, न पाइए लदुन्नी बिन।
बिना इस्क न इलम आवहीं, दोऊ तौले अरस परस बजन।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना दुनियां में कहीं नहीं मिलेगा। बिना इश्क के इलम नहीं आता और बिना इलम के इश्क नहीं आता। यह दोनों एक समान हैं।

Nijanand App

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार।
लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको काहूं न सुमार।।४३।।

तारतम वाणी की शक्ति को देखो, जिससे श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बेशुमार इश्क की पहचान हुई जिसको अभी तक नहीं जानते थे।

ए इलम कुंजी अर्स की, रूह अल्ला ल्याए हकपें।
माहें कई गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें।।४४।।

यह जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान परमधाम की कुंजी है, जिसे श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज से लेकर आई हैं। अब इस जागृत बुद्धि से श्री राजजी महाराज के दिल की सब छिपी बातें जाहिर हो गईं।

आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब।।४५।।

इस संसार में बिना हिसाब अटकल के ग्रन्थ हैं, पर कुरान के बिना और किसी में खुदा और परमधाम की बातें नहीं हैं।

या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत।
सो खोल्या सब इन कुंजिएं, हकीकत या मारफत।।४६।।

कुरान में जाहिरी या बातूनी जो भी बातें इशारों से लिखी थीं, वह सब तारतम ज्ञान के आने से खुल गईं और हकीकत व मारफत की पहचान हो गई।

अव्वल से आखिर लग, किया कुंजिएं सबका काम।
हैयाती चौदे तबकों, दई कायम भिस्त तमाम।।४७।।

शुरू से अन्त तक सभी को अखण्ड मुक्ति देने का काम तारतम वाणी जागृत बुद्धि के ज्ञान ने कर दिया।

कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ।
तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ।।४८।।

चौदह तबक की दुनियां में किसी को पता नहीं था कि पारब्रह्म कहां है और न किसी ने उसके बारे में बताया। जिन्हें अखण्ड परमधाम कहां है की सुध नहीं है, तो पारब्रह्म की सुरता का ज्ञान कौन देता?

तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन।
तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन।।४९।।

श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातों का भेद तारतम ज्ञान ने बता दिया। अब दुनियां का अटकली ज्ञान इसके सामने नहीं चलेगा।

सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत।
इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत।।५०।।

अक्षरधाम, परमधाम में किसी तरह का संशय तारतम ज्ञान की शक्ति से नहीं रहा।

Nijanand App

अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर।।५१ ।।

परमधाम के बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी या जानदर या अन्दर की मोहोलातों में अब जरा भी शक नहीं रह गया।

इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ।।५२ ।।

तारतम ज्ञान ने जब श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें जाहिर कर दीं तो अब यहां बाकी क्या रह गया? इन अर्शों की भी क्या कहूं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम।।५३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा श्री राजजी महाराज स्वयं अपने मोमिनों को परमधाम की पहचान करा रहे हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भरपूर।
याको वार ना पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रंग महल के ईशान कोने में यह सातवां सागर निसबत का है। यह श्री श्यामाजी महारानी की शोभा और निसबत का सागर है। इसका पारावार नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी और श्यामा महारानी के अंग रूहों का सागर है।

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर।। २ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और सदा एक रूप हैं और साथ रहती हैं। इनकी बेशुमार शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।। ३ ।।

अब श्री श्यामाजी के सम्बन्ध की खूबी का कैसे बयान करूं? इनके वास्ते ही हकीकत के भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुले, जिससे श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान की पहचान हुई।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब।। ४ ।।

रूहों का सम्बन्ध श्री श्यामा महारानीजी से है और श्री श्यामाजी का सम्बन्ध श्री राजजी से है। अब जहां श्री श्यामाजी हैं वहां सब कुछ आ गया। जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम ज्ञान) ने यह सारी हकीकत इनके वास्ते ही जाहिर की है।

Nijanand App

अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर।।५१ ।।

परमधाम के बगीचे, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी या जानदर या अन्दर की मोहोलातों में अब जरा भी शक नहीं रह गया।

इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ।।५२ ।।

तारतम ज्ञान ने जब श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ बातें जाहिर कर दीं तो अब यहां बाकी क्या रह गया? इन अर्शों की भी क्या कहूं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम।।५३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी ऐसी कुंजी है जिसके द्वारा श्री राजजी महाराज स्वयं अपने मोमिनों को परमधाम की पहचान करा रहे हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। १०४२ ।।

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत भरपूर।
याको वार ना पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रंग महल के ईशान कोने में यह सातवां सागर निसबत का है। यह श्री श्यामाजी महारानी की शोभा और निसबत का सागर है। इसका पारावार नहीं है। यह श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामाजी और श्यामा महारानी के अंग रूहों का सागर है।

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर।। २ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की अर्द्धांगिनी हैं और सदा एक रूप हैं और साथ रहती हैं। इनकी बेशुमार शोभा को शुमार में लाकर वर्णन करती हूं।

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।। ३ ।।

अब श्री श्यामाजी के सम्बन्ध की खूबी का कैसे बयान करूं? इनके वास्ते ही हकीकत के भेद जागृत बुद्धि के ज्ञान से खुले, जिससे श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान की पहचान हुई।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब।। ४ ।।

रूहों का सम्बन्ध श्री श्यामा महारानीजी से है और श्री श्यामाजी का सम्बन्ध श्री राजजी से है। अब जहां श्री श्यामाजी हैं वहां सब कुछ आ गया। जागृत बुद्धि के ज्ञान (तारतम ज्ञान) ने यह सारी हकीकत इनके वास्ते ही जाहिर की है।

Nijanand App

निसबत हक की जात है, निसबत में इस्क।
निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक।। ५ ।।

श्री श्यामा महारानी श्री राजजी के अंग हैं और इश्क का स्वरूप हैं, इसलिए इन्हीं के वास्ते यह जागृत बुद्धि का ज्ञान आया है।

ए हकें किया इस्क सों, कई बंध बांधे जहूर।
सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर।। ६ ।।

मूल-मिलावे में श्री राजजी महाराज से इश्क का जो वार्तालाप हुआ था, उसे श्री श्यामा महारानी और सब रूहें जानती हैं। उनके वास्ते श्री राजजी महाराज ने कई युक्तियों से खेल दिखाया है।

हकें निसबत वास्ते, कई बंध बांधे माहें खेल।
सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी श्यामाजी और रूहों को सुख देने के लिए तीन बार खेल में आए और कई युक्तियों के साथ लीलाएं कीं।

अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इस्क।
दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक।। ८ ।।

पहली बार बृज में अपनी अंगनाओं (मोमिनों) को इश्क की लीला दिखाई, दूसरी बार रास में इश्क के विध-विध के भेद बताए।

वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक।
इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक।। ९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते तीसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि के ज्ञान से और इश्क से अपने परमधाम के छिपे रहस्य बताकर सब संशय मिटाए।

निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम।
खुसाली निसबत वास्ते, आखिर ल्याए खसम।। १० ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज, इश्क, इलम और खुशहाली लाए हैं।

ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख।
इन दुख में बका अर्स के, हैं हक दिल के कई सुख।। ११ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आत्मा को जागृत कर बताती है कि श्री श्यामा महारानी और रूहें जो दुःख देख रही हैं, उस दुःख में परमधाम और श्री राजजी महाराज के दिल के कई अखण्ड सुख छिपे हैं।

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे क्यांहें।
सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहें।। १२ ।।

यह सातवां निसबत का सागर बेहद सुख देने वाला सागर है, जिसका कोई शुमार नहीं है। श्री राजजी महाराज के सब सागरों को मैंने तोला पर निसबत के सागर के समान कोई नहीं है।

Nijanand App

मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह न देखे कोए।
तिन हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए।। १३ ।।

बड़े गहरे से गहरे सागर को नापा जिनकी किसी को थाह नहीं मिलती। श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल के अन्दर बैठकर इश्क के द्वारा सब सागरों का नाप-तोल बता दिया।

जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान।
पाया न वाके अर्स को, जो कौन ठौर मकान।। १४ ।।

पारब्रह्म को किसी ने आज दिन तक न सुना था, न पाया था। न अखण्ड परमधाम का ज्ञान था कि वह कहां किस ठिकाने है।

सब बुजरकों ढूंढ्या, किन पाई न बका तरफ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ।। १५ ।।

सब ज्ञानियों ने (अगुओं ने) ढूंढ़ा, परन्तु अखण्ड घर किस तरफ है, इतना भी नहीं जान सके, इसलिए चौदह तबक की दुनियां में किसी ने एक शब्द का भी बयान नहीं किया।

तिन हक दिल अन्दर पैठके, माप्या सागर इस्क।
इन हकके इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक।। १६ ।।

अब जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से और श्री राजजी महाराज के मेरे दिल में बैठ जाने से इश्क के सागर को मापा। और भी दूसरे सागरों को मापा।

सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत।
इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत।। १७ ।।

यह इश्क और इलम के सुख के देने वाले सागर श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते ही आए हैं। अब श्री श्यामाजी महारानी और रूहों की बराबरी के लिए कहां से हक न्यामत लाएं।

ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन।
कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन।। १८ ।।

इस निसबत के सागर को रूहें ही जानती हैं। इसका रहस्य इतना गहरा है कि मोमिनों के बिना और कोई जान ही नहीं सकता।

तो क्यों कहूं जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान।
निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान।। १९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और मोमिनों जैसा कोई उपमा में ही नहीं है। यह श्री श्यामाजी महारानी और रूहें श्री राजजी के ही अंग हैं और उनकी एकदिली के स्वरूप हैं।

बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम।
सोभा तेज सुख कई बका, इन निसबत में जात खसम।। २० ।।

इस निसबत सागर में इलम और इश्क की बहुत लहरें आती हैं। इनमें शोभा, तेज और कई तरह के अखण्ड सुख हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

Nijanand App

एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए।
ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हककी जे।। २१ ।।

इलम, इश्क और निसबत जो कही है वह तीनों गुण मोमिनों में हैं, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं।

किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क।
तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेलें सूरत न पाई हक।। २२ ।।

आज तक किसी ने पारब्रह्म के इश्क को नहीं पाया और न किसी ने इलम को पाया। न हक के स्वरूप की पहचान हुई, तो उन्हें यह कैसे पता चले कि मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं।

ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और।
ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज और रूहों के इश्क के छिपे रहस्य तथा और भी हक के दिल की बातें श्री राजजी महाराज के अंग मोमिन ही जानते हैं, जो श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठे हैं।

जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत।
और हकका हुकम, कछू ना हुकम बिना कित।। २४ ।।

जब श्री राजजी महाराज की निसबत को देखती हूं तो परमधाम में एक श्री श्यामाजी का ही स्वरूप नजर आता है। जब यहां खेल में देखती हूं तो सारी लीला श्री राजजी महाराज के हुकम की ही दिखाई देती है। हुकम के बिना कहीं कुछ भी नहीं है।

जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक।
लेवे अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक।। २५ ।।

इस खेल में मोमिनों ने हक के हुकम से जो तन धारण किए हैं यदि उन्हें जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान मिल जाए तो उनके सब संशय मिट जाएं। फिर श्री राजजी महाराज की मेहर से उनको श्री राजजी के दर्शन कभी-कभी हो सकते हैं।

पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत।
ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दर्शन तो हो भी सकते हैं, परन्तु श्री श्यामाजी और रूहों के दर्शनों की न्यामत मिल ही नहीं सकती। इसलिए यहां की जबान से निसबत की महिमा कैसे बताएं?

ए जो सरूप निसबत के, काहूं न देवें देखाए।
बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी निसबत के तन श्री श्यामाजी महारानी और रूहों को नहीं दिखाते, छिपाकर रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं दर्शन देते हैं।

निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान।
ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान।। २८ ।।

जिस तरह से श्री राजजी का स्वरूप वर्णन करने के लिए कोई नमूना नहीं है, उसी तरह से श्री श्यामाजी और रूहों का कोई नमूना नहीं है।

Nijanand App

क्यों दीजे निमूना इनका, जो कही हककी जात।
निसबत इस्क इलम, ज्यों बिरिख फल फूल पात।। २९ ।।

जो श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाती हैं तो इनका नमूना कहां से लाएं? जिस तरह से एक वृक्ष के डाली, फल, फूल और पत्तों का सम्बन्ध होता है, वैसे ही श्री राजजी महाराज के इश्क, इलम और निसबत का सम्बन्ध है।

सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम।
ना तो कैसे इत जाहेर होंए, हम तुम इस्क इलम।। ३० ।।

इश्क, इलम और हुकम सब निसबत से लगे हैं, नहीं तो रूहें श्री श्यामाजी, इश्क और इलम का इस संसार में पता कैसे लगता?

ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत।
ए जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत।। ३१ ।।

जो कुछ यहां बोलते हैं, देखते हैं या कानों से सुनते हैं, सब श्री श्यामाजी और रूहों के ही वास्ते है।

ज्यों हाथ पांउं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान।
त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान।। ३२ ।।

जिस तरह से एक तन के हाथ, पांव, शक्ल, मुख, नेत्र, नासिका, कान सब मिलकर एक तन कहलाते हैं, उसी तरह से श्री श्यामाजी, रूहें और श्री राजजी महाराज एक अंग हैं।

अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात।
और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात।। ३३ ।।

अब श्री श्यामाजी और रूहों का बयान कैसे करूं? कोई नमूना है ही नहीं और न और कोई शब्द ही है जो इस जबान से कहा जाए?

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक।
सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक।। ३४ ।।

श्री श्यामाजी और रूहों की सिफत श्री राजजी महाराज की तरह बेशुमार है और शब्दातीत है। शब्दों में बयान नहीं हो सकती। मैंने जो कुछ कहा वह अपनी बुद्धि से कहा है।

कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार।
ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार।। ३५ ।।

संसार में सारी उम्र तक निसबत का वर्णन करें तो भी वर्णन करना सम्भव नहीं है। इस सागर की लहरें अखण्ड और बेशुमार हैं।

ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहें।
ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहें।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग श्री श्यामा महारानी और मोमिनों की बड़ी भारी महिमा है। वह इस झूठे खेल में नहीं है। यह बात अखण्ड परमधाम में मूल-मिलावा के अन्दर ही सम्भव है।

Nijanand App

जो खेल में खबर ना हककी, तो निसबत खबर क्यों होए।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए।। ३७ ।।

खेल में किसी को पारब्रह्म की ही खबर नहीं है तो श्री श्यामाजी महारानी की कैसे हो सकती है? क्योंकि परमधाम में श्री राजश्यामाजी आशिक-माशूक की तरह एक हैं, दो नहीं।

ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन।
किन पाई ना तरफ हककी, ए तो हक मासूक वतन।। ३८ ।।

खेल में जो इस बात को सुनता है, उसे बड़ी हैरानी होती है, क्योंकि किसी ने आज दिन तक श्री राजजी के ठिकाने को नहीं जाना था। फिर परमधाम तो श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों का घर है। इसे कौन, कैसे जाने?

तीन सूरत महंमद की, गुझ हकका जानें सोए।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए।। ३९ ।।

सिर्फ मुहम्मद की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) ही श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को जानती हैं। इनके बिना कोई और है ही नहीं, तो कौन कैसे जाने?

वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन।
मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन।। ४० ।।

वाहेदत की यही पहचान है कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठे हैं। उनकी परआत्मा परमधाम में होने से श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को माशूक कहा है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह श्री श्यामाजी और रूहों के निसबत का सागर है। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इश्क के प्याले भर-भरकर पीओ।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १०८३ ॥

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।। १ ।।

रंग महल की पूरब की दिशा में सर्वरस सागर है। यही श्री राजजी महाराज की मेहर का निज स्वरूप है, जिसकी अपार शोभा, लहरें और सुख की खूबियां हैं।

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।। २ ।।

हुकम श्री राजजी के मेहर के अधीन है। जोश श्री राजजी का अंग ही है। इश्क और जागृत बुद्धि धनी की मेहर से आती है।

Nijanand App

जो खेल में खबर ना हककी, तो निसबत खबर क्यों होए।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए।। ३७ ।।

खेल में किसी को पारब्रह्म की ही खबर नहीं है तो श्री श्यामाजी महारानी की कैसे हो सकती है? क्योंकि परमधाम में श्री राजश्यामाजी आशिक-माशूक की तरह एक हैं, दो नहीं।

ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन।
किन पाई ना तरफ हककी, ए तो हक मासूक वतन।। ३८ ।।

खेल में जो इस बात को सुनता है, उसे बड़ी हैरानी होती है, क्योंकि किसी ने आज दिन तक श्री राजजी के ठिकाने को नहीं जाना था। फिर परमधाम तो श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों का घर है। इसे कौन, कैसे जाने?

तीन सूरत महंमद की, गुझ हकका जानें सोए।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए।। ३९ ।।

सिर्फ मुहम्मद की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) ही श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को जानती हैं। इनके बिना कोई और है ही नहीं, तो कौन कैसे जाने?

वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन।
मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन।। ४० ।।

वाहेदत की यही पहचान है कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठे हैं। उनकी परआत्मा परमधाम में होने से श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को माशूक कहा है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह श्री श्यामाजी और रूहों के निसबत का सागर है। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इश्क के प्याले भर-भरकर पीओ।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। १०८३ ।।

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।। १ ।।

रंग महल की पूरब की दिशा में सर्वरस सागर है। यही श्री राजजी महाराज की मेहर का निज स्वरूप है, जिसकी अपार शोभा, लहरें और सुख की खूबियां हैं।

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।। २ ।।

हुकम श्री राजजी के मेहर के अधीन है। जोश श्री राजजी का अंग ही है। इश्क और जागृत बुद्धि धनी की मेहर से आती है।

Nijanand App

पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत।। ३ ।।

जहां श्री राजजी की मेहर होती है फिर वहां और क्या चाहिए? धनी की मेहर भी वहीं होती है जहां उनकी अंगनाएं हैं।

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर मूल परमधाम से ही है और उनका हुकम भी वहीं से हमारे साथ है। हुकम, साहिबी और सभी कुछ मोमिनों के वास्ते लाए हैं। श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के लिए कभी भी किसी तरह की कमी नहीं करते।

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी मेहर से रूहों को सुख की लज्जत देना चाहते थे, इसलिए यह खेल बनाया। अब इस खेल में जो कुछ भी हो रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज की मेहर का स्वरूप है। जिस किसी से भी श्री राजजी महाराज की मेहर अलग हो जाती है, उसके लिए सारा संसार जहर हो जाता है।

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज की जाहिरी और बातूनी मेहेर दोनों खेल में दिखाई देती हैं, परन्तु संसार के यह लोग ऊपर की जाहिरी मेहर को ही देखते हैं। जिन्हें श्री राजजी महाराज की बातूनी मेहर नहीं मिलती, वह श्री राजजी से दूर ही होते हैं, अर्थात् वह मोमिन नहीं हैं।

नोट—श्री राजजी महाराज की जाहिरी मेहर वजूद के सुख के वास्ते होती है। बातूनी मेहर (जागृत बुद्धि का ज्ञान) आत्मा के वास्ते परमधाम के सुख के वास्ते होती है।

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें।
आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें।। ७ ।।

वास्तव में सच्ची मेहर तो बातूनी है जो बाहर और अन्दर (माया का, आत्मा का) सब सुख देती है। इस बातूनी मेहर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।
पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत।। ८ ।।

जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर हो जाती है उनके पिण्ड, ब्रह्माण्ड, पांचों तत्व सब कुछ मेहर से भरे दिखाई देते हैं।

दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत।। ९ ।।

इस दुःख की जमीन में कोई भी दुःख नहीं देखना चाहता। यह तो श्री राजजी की मेहर है कि हम यहां दुःख देखते हुए भी परमधाम के सुख ले रहे हैं।

Nijanand App

सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर।। १० ।।

परमधाम में तो सुख सदा ही है, परन्तु एक रस होने से सुख का स्वाद नहीं आता। अब दु:ख देखा है, तो उस अखण्ड सुख के स्वाद का पता चला है। यह श्री राजजी महाराज के मेहर से जानकारी मिली है।

इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखें दुख दूर।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर।। ११ ।।

इस दु:ख भरे संसार की जमीन में बैठकर श्री राजजी महाराज की मेहर से सब दु:ख दूर हो गए। उनकी ही मेहर से अखण्ड सुख मिल गए।

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित।। १२ ।।

मैंने दिल में विचार करके देखा कि श्री राजजी महाराज की मेहर से इश्क आता है। जहां इश्क आता है वहां मेहर पहले से ही होती है।

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।
मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज अपनी मेहर से ही जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान जो बेसक इलम है, देते हैं। उनकी मेहर से ही हुकम और जोश सब कुछ मिल जाता है।

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज जिसको अपनी मेहर में लेते हैं, तो उसका तन भी पहले से ही अपने जैसा बना देते हैं। उनकी गुण, अंग, इन्द्रियां सब मेहर की हो जाती हैं। इस झूठे संसार में भी उस रूह पर अपनी मेहर करते हैं।

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र।। १५ ।।

जिस पर श्री राजजी महाराज की मेहर हो जाती है, तो उन्हीं को मेहर का सिंहासन मिलता है और उन्हीं पर चंवर ढुलाएं जाते हैं। मेहर का छत्र लगाया जाता है। सब साजो-समान मेहर का ही होता है, अर्थात् जिसके अन्दर श्री राजजी महाराज विराजमान हो जाते हैं, तो वह तन श्री राजजी का ही हो जाता है। यह सब शोभा श्री राजजी की ही होती है।

बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन।। १६ ।।

फिर वह तन श्री राजजी महाराज की ही बोली बोलने लगता है और उसकी रहनी भी मेहर की हो जाती है। रात-दिन बोलना और रहनी दोनों मेहरमयी होते हैं। इस तरह से रूहों का मिलन भी मेहर से होता है।

Nijanand App

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर और हुकम से ही रूहें उनकी सेवा और जिक्र (चर्चा) करती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से रूहें उनके चरणों में आती हैं और इश्क और इलम का रस पीती हैं।

जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर।। १८ ।।

मेहर जहां होती है वहां शुरू से आखिर तक मेहर ही होती रहती है। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही उनके चरण प्राप्त होते हैं (उनकी संगति मिलती है)। इसलिए मेहर की महिमा कैसे गाएं?

ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत।। १९ ।।

इस मेहर के सागर में बातूनी और जाहिरी दोनों तरह के सुख हैं। जहां श्री राजजी की मेहर होती है, वहां हर तरह के सुख होते हैं।

बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत।। २० ।।

इस मिटने वाली दुनियां में श्री राजजी महाराज की मेहर से परमधाम की रूहें श्री राजजी, श्री श्यामाजी सब खेल में आए हैं। जिनकी कृपा से सारे जगत के लोगों को अखण्ड मुक्ति मिली (मिलेगी)।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत।
ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज की ऐसी मेहर की सिफत का वर्णन कैसे करूं? यह श्री राजजी महाराज की बातूनी मेहर है, जो सदा उनकी नजर में रहती है (नजरे करम का स्वरूप है)।

ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही सब छिपा रहस्य खुल जाता है और सबके ज्ञान का पता लग जाता है। आज तक जिस परमधाम और पारब्रह्म को सुना नहीं था, वह सब हकीकत मेहर से खुल जाती है।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर जो उनके दिल में रहती है, उसका कैसे वर्णन करूं? क्योंकि श्री राजजी महाराज जिसको दिल में ले लेते हैं, वहां सभी न्यामतें एक साथ आ जाती हैं।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक।। २४ ।।

ऐसी मेहर, जो श्री राजजी महाराज के अन्दर बसती है, उसका वर्णन कैसे करूं? जिनकी दुआओं पर, बन्दगी पर, अर्जी पर श्री राजजी की मेहर हो जाती है, उनको अपने अनुसार बख्शीश देते हैं।

Nijanand App

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब।। २५ ।।

इस तरह से मेहर की बड़ी महिमा है। जहां मेहर होती है वहीं सब कुछ होता है। फिर एक पल भर श्री राजजी महाराज उनको अपनी नजर से दूर नहीं करते। अब इसके ऊपर क्या कहें?

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर।। २६ ।।

जहां श्री राजजी महाराज अन्दर बैठे हों, वहीं उनकी नजर होती है और वहीं उनकी मेहर होती है। मेहर के बिना मोमिनों को सारा संसार जहर के समान लगता है।

बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।
अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर।। २७ ।।

मेहर की बात बहुत बड़ी है, परन्तु मेहर बिना अंकूर के नहीं होती। अंकूर वह हैं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं। वह परमधाम में रहते हैं।

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।
मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम।। २८ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज की मेहर होती है, वैसे ही जोश और हुकम मिल जाते हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर जागृत बुद्धि का स्वरूप होती है, इसलिए इश्क और इलम वहां आ जाते हैं।

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर मीठे सुख का सागर है और रहनी में ही रूहों को आराम मिलता है। मेहर और इश्क श्री राजजी के ही स्वरूप हैं और मेहर से ही श्री राजजी का प्रेम (इश्क) मिलता है।

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर के बहुत बड़े काम हैं, क्योंकि जिन पर धनी की मेहर हो जाती है, उसको अपने अनुसार ही बना देते हैं।

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही खेल बना है और मेहर से ही मोमिन खेल देखने के वास्ते आए हैं। मेहर से ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि मिली हैं।

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान।। ३२ ।।

श्री राजजी की मेहर से ही रसूल साहब उनका सन्देश कुरान में लेकर आए हैं। उनकी मेहर से ही श्री श्यामा महारानी तारतम कुंजी लाए हैं। मेहर से ही श्री प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज की पहचान करा रहे हैं।

Nijanand App

दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत।। ३३ ।।

मुहम्मद की तीनों सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) मेहर से आई हैं। मेहर से ही तारतम ज्ञान की कुंजी तथा छिपे रहस्यों को खोलने की कला इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को मिलीं जिन्होंने हकीकत के ज्ञान को जाहिर किया।

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत।
मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत।। ३४ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी महाराज की मेहर से कुरान के छिपे भेदों को खोल दिया और आखिरत के समय के सात निशानों की पहचान कराई। मेहर से ही मोमिन को अपने घर खिलवत-खाने की समझ आई।

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत।। ३५ ।।

इन्हीं मोमिनों पर श्री राजजी महाराज की मेहर हुई, जो उनकी खासल खास जमात (रूहें-मोमिन) हैं। अब इन मोमिनों की बरकत से ही सारे संसार को अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम।
मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही मोमिनों ने खेल देखा। अब मेहर से ही उनके चरणों तले आ गए। मेहर से ही दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर हंसते हुए परमधाम में श्री राजजी से मिले।

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार।। ३७ ।।

मेहर की बातें तो तब कहें जब मेहर की कोई सीमा हो। श्री राजजी महाराज की मेहर से सब न्यामतों को मापा, पर मेहर बेशुमार है जो नापी नहीं जा सकती।

जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए।। ३८ ।।

यदि मेहर खड़ी रहे तो इसे नापा जाए। मेहर तो एक पल में करोड़ गुना बढ़ जाती है तो इसको कैसे नापें?

मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज मेहर से ही मोमिनों के दिल में बैठे हैं, इसलिए मोमिनों के दिल भी मेहर के सागर हो गए हैं। श्री राजजी महाराज मेहर को लेकर मोमिनों के दिल में बैठे हैं। ऐसी बड़ी महिमा मोमिनों की है।

बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार।। ४० ।।

मेहर की बड़ी भारी महिमा है। यह श्री राजजी महाराज के दिल के प्यार का स्वरूप है, इसलिए श्री राजजी महाराज का दिल या मोमिन ही मेहर की शोभा जानते हैं।

Nijanand App

जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।
अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर का एक वचन (शब्द) भी कहती हूं तो यह भी उनकी मेहर समझना। यदि अनगिनत उम्र और बेशुमार जबानों से वर्णन करूं तो भी वर्णन नहीं होता।

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान।। ४२ ।।

यह आठवां मेहर का सागर बहुत बड़ा है। इसको अच्छी तरह समझने के लिए श्री राजजी महाराज की मेहर ही हो जाए, तो मेहर समझी जा सकती है।

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूं किताब।। ४३ ।।

सात सागरों का वर्णन तो कर दिया, पर आठवां सागर तो बिना हिसाब का है। इसका वर्णन करते-करते करोड़ों किताबें लिख डालूं तो भी इस मेहर का पार नहीं मिलता।

ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर।। ४४ ।।

इस मेहर को वह मोमिन ही जानते हैं, जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर है। उन मोमिनों को हक की मेहर के बिना सारी दुनियां जहर के समान लगती है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर।
सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमी रस हक नजर।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह मेहर का सागर बहुत बड़ा है। अब तुम श्री राजजी महाराज की मेहर से उनके चरणों के तले आकर श्री राजजी महाराज की नजरे करम से अमृत रस पीओ।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ११२८ ।।

।। प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।।

।। प्रकरण ।। ४३९ ।। चौपाई ।। १४१६५ ।।

।। सागर सम्पूर्ण ।।

Nijanand App